मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

भादों-आश्विन संवत् नानकशाही ५५६ सितंबर 2024 वर्ष १८ अंक १

विशेषांक

गुरुद्वारा श्री बाउली साहिब
श्री गोइंदवाल साहिब

गुरुद्वारा सत्र साहिब, गांव बासरके गिल्लां (श्री अमृतसर साहिब)

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

भादों-आश्विन संवत् नानकशाही 556

वर्ष 18 अंक 1 सितंबर 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु।। 7
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
श्री गुरु अमरदास जी द्वारा बसाई नगरी : गोइंदवाल साहिब 15
-स. हरप्रीत सिंघ नाज़
श्री गुरु अमरदास जी की बाणी 'पटी' : भाव-प्रगास 22
-डॉ. चमकौर सिंघ
श्री गुरु अमरदास जी तथा उनके परम सेवक भाई पारो परमहंस 29
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
महिला सशक्तिकरण में श्री गुरु अमरदास जी का योगदान 35
-डॉ. हरप्रीत कौर
गुरु-साखियों में शिक्षा 43
-डॉ. इंदरजीत सिंघ गोगोआणी
श्री गुरु रामदास जी 48
-स. बिकरमजीत सिंघ जीत
श्री गुरु रामदास जी का जीवन तथा उपदेश 53
-डॉ. परमजीत कौर
श्री गुरु रामदास जी की चुनिंदा बाणियों सम्बंधी वृत्तांत 58
- स. निरवैर सिंघ अर्शी
श्री गुरु रामदास जी की बाणी में प्रेम-तत्त्व 65
-डॉ. जगजीत कौर (दिवंगत)
आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ।। 70
-डॉ. मनजीत कौर
खबरनामा 74

गुरबाणी विचार

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥
विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥
जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में आश्विन मास की ऋतु और इसके प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण के प्रसंग में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम के साथ जुड़कर मानव जीवन का अमूल्य अवसर सफल करने का गुरमति मार्ग प्रदान कर रहे हैं। गुरु जी जीव-स्त्री को आध्यात्मिक दिशा देने हेतु उसका प्रतिनिधित्व करते हुए कथन करते हैं कि भादों माह की उमस के बाद आश्विन मास में आई सुहावनी मीठी ऋतु में मेरे अंदर पति-परमात्मा के लिए प्रेम का उछाल आ रहा है। मेरे मन में यह ख्याल आता है कि जैसे भी हो किसी न किसी तरह ऐसे सुहावने मौसम में मैं प्रभु-पति से जाकर मिलूं। हे मेरी मां! मेरे मन एवं शरीर में अर्थात् मेरे समस्त अस्तित्व में परमात्मा-पति के दीदार की प्यास प्रबल हो गई है। संत-जन, जो प्रभु-प्रेम बढ़ाने में मददगार होते हैं, मैं उनके चरणों के साथ जुड़ी हूं, इसलिए मुझे अनुभव हो गया है कि प्रभु-पति के बगैर जीव-स्त्री सच्चा सुख अथवा आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं कर सकती।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिन जीवों ने प्रभु-प्रेम का रस चख लिया है वे सदैव संतुष्ट-भाव में रहते हैं अर्थात् उनको सांसारिक इच्छाएं दुखित नहीं करती। वे 'स्व' का परित्याग कर देते हैं और सदैव यही विनती करते रहते हैं कि हे प्रभु! हमको अपने साथ जोड़े रखना अर्थात् अपने नाम-सिमरन में लगाए रखना। जिस जीव-स्त्री को परमात्मा-पति का सान्निध्य प्राप्त हो गया है वह उससे बिछड़ कर अन्य कहीं नहीं जाती। हे नानक! उसको भली-भांति अनुभव हो जाता है कि परमात्मा के बगैर कोई अन्य ठिकाना नहीं है। आश्विन मास की सुहावनी ऋतु में वही जीव-स्त्रियां आत्मिक सुख अनुभव करती हैं जिन पर परमात्मा रूपी राजा-पति की कृपा होती है।

संपादकीय

अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ।।

गुरु साहिबान के पवित्र गुरुपर्व मनाना अच्छे भाग्य से नसीब होता है। भाई गुरदास जी प्रेमा-भक्ति के साथ गुरुपर्व मनाने वाले सिक्खों से कुर्बान जाते हैं। *''कुरबाणी तिन्हां गुरसिखां भाइ भगति गुरपुरब करंदे।''* ऐतिहासिक दिवस और शताब्दियां मनाने का उद्देश्य गुरु साहिबान के रूहानी उपदेशों का प्रचार कर मानवता में सत्य, संतोष, नेकी, दया, धर्म, धैर्य, परोपकार जैसे सद्गुणों का संचार करना और सुमिरन-भक्ति के मार्ग पर चल कर अकाल पुरख के साथ एकजुटता हासिल करना है, ताकि समाज रूहानियत के रंग में रंगा जा सके, समाज नैतिक जीवन-मूल्यों का धारक बन सके; देश-समाज में धर्म के नाम पर फैलाई जा रही नफ़रत को गुरु साहिब की सर्वसाझीवालता की शिक्षा द्वारा ख़त्म किया जा सके और भाईचारक एकता स्थापित की जा सके।

श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए बड़े महान कार्य किये। भट्ट कीरत जी के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी की अकथ्य कथा, उनकी उच्च आत्मिक अवस्था एक जिह्वा द्वारा बयान नहीं की जा सकती— *''गुर अमरदास की अकथ कथा है इक जीह कछु कही न जाई।।''*

श्री गुरु अमरदास जी ने बाइस वर्ष गुरुआई की ज़िम्मेदारी निभाते हुए असंख्य मनुष्यों का उद्धार किया। आखिर १५५२ ई. में गुरु नानक देव जी के घर की *''सिखां पुत्रां घोखि कै''* वाली मर्यादा को आगे बढ़ाते हुए अपने पुत्रों और सिक्खों की परख में से जब श्री गुरु अमरदास जी का मन पूर्णरूपेण श्री गुरु रामदास जी पर पतिया गया तो श्री गुरु रामदास जी को 'राज-योग के तख़्त' गुरुआई की बख्शिश कर दी :

सभ बिधि मान्हिउ मनु तब ही भयउ प्रसंनु राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९९)

भट्ट मथरा जी के अनुसार— *''अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ।।''*

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४०८)

श्री गुरु रामदास जी को गुरुआई प्रदान कर श्री गुरु अमरदास जी ज्योति-जोत समा गए।

इस प्रकार सारी सृष्टि को मुक्त करने के लिए श्री गुरु अमरदास जी से श्री गुरु रामदास जी को महानता प्राप्त हुई। श्री गुरु रामदास जी ने जीवों पर असंख्य बखशिशें-रहमतें की। मनुष्य के हृदय रूपी खाली सरोवर को नाम के साथ भर दिया।

आज समूचा सिक्ख जगत ऐसे दीन दयालु सतिगुरु श्री गुरु रामदास जी का ४५० वर्षीय गुरुआई गुरुपर्व और श्री गुरु अमरदास जी का ४५० वर्षीय ज्योति-जोत दिवस मना रहा है। इन गुरुपर्वों से सम्बन्धित श्री गुरु अमरदास जी की 'अकथ कथा' और श्री गुरु रामदास जी की 'बडाई' (महानता) को प्रदर्शित करने का अल्प-मात्र यत्न करते हुए धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से सितंबर २०२४ का 'गुरमत ज्ञान' का यह अंक विशेषांक रूप में प्रकाशित किया गया है। इसमें विभिन्न विद्वानों ने श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी के जीवन, बाणी व उपदेशों को अपनी कलम के सामर्थ्य के अनुसार लिखने का यत्न किया है।

हमें आशा है कि इस विशेषांक को पढ़ कर पाठक गुरु साहिबान के जीवन, बाणी और गुरमति सिद्धांतों के बारे में भरपूर जानकारी हासिल करेंगे।

ऐसे सौभाग्यशाली अवसर पर हमारा फ़र्ज़ बनता है कि हम अपने बच्चों सहित इन शताब्दी गुरुपर्वों में शामिल हों! खुद को तथा अपने बच्चों को अमीर सिक्ख विरासत तथा इतिहास से अवगत करवाएं! इन शताब्दी गुरुपर्वों को मनाते हुए हम गुरु साहिबान की धरती पंजाब को दरपेश समस्याओं— नशा, डेरावाद, देहधारी गुरु-प्रचलन, धरती के पानी का गिर रहा स्तर, प्रदूषित हो रहा हवा-पानी, ज़हरीले हो रहे खाद्य-पदार्थ, पतितपन, कन्या-भ्रूण हत्या आदि को रोकने में संघर्षी योद्धा बनें! पंथ की मज़बूती के लिए आपसी एकता-इत्तफ़ाक के समर्थक बनें! ऐसा करने से ही हमारा ये शताब्दी गुरुपर्व मनाना सफल होगा!

झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु।।

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

धर्म के मार्ग पर चलना अति कठिन है। अनेक विघ्न–बाधायें पग–पग पर आ खड़ी होती हैं। नित्य नये भ्रम और संशय लक्ष्य से भटकाने को तत्पर मिलते हैं। संकट और भय विभिन्न रूपों में हतोत्साहित करने के लिये आगे आते रहते हैं। माया और विकार सदा ही ठगने को तैयार रहते हैं। कोई सहम कर कुछ कदम चलने के बाद ही पराजय स्वीकार कर लेता है। कोई कुछ दूर तक चलता है, फिर हताशा से घिर कर राह बदल लेता है। काफी दूर तक चलने वाले भी संयम खोते देखे गये हैं। श्री गुरु नानक साहिब ने धर्म की ऐसी ही यात्रा करतारपुर साहिब में अपनी धरमसाल से शमशान तक कराई थी। इस यात्रा में बहुत–से सिक्ख शामिल थे, किन्तु गंतव्य तक मात्र भाई लहिणा जी ही पहुंच सके थे। भाई लहिणा जी वहां तक पहुंचने में सफल रहे जहां पहुँचना था, इसलिये श्री गुरु अंगद साहिब बने। श्री गुरु अमरदास जी भी ऐसे ही मुकाम तक पहुंचे और तृतीय गुरु बने। सिक्ख तो बहुत थे, किन्तु अंत तक चलने और राह को पूरा करने का सामर्थ्य अकेले श्री गुरु अमरदास जी में ही प्रकट हुआ था। क्या है यह सामर्थ्य जो धर्म के मार्ग को सहज बना देता है? इस प्रश्न का उत्तर श्री गुरु अमरदास साहिब के जीवन से प्राप्त होता है। श्री गुरु अमरदास जी धर्म की अविचल सत्ता थे। यह सर्वाधिक अनमोल प्राप्ति है।

श्री गुरु अमरदास जी ने अपने संकल्प को सुमेर पर्वत जैसा ऊंचा और दृढ़ बनाया। अपने आत्मबल व प्रेम–भाव से जीवन रूपी समुद्र को मथा और सर्वगुण धारण कर अमृत अर्थात् परमात्मा को प्राप्त कर लिया। श्री गुरु अमरदास जी आत्मिक उत्कर्ष से प्रकाशित हो गये। धर्म के मार्ग पर सहज, उनके अश्व की भांति था जिस पर जत, संयम की काठी पड़ी हुई थी। गुरु साहिब ने इस अश्व की सवारी करते हुए सच के धनुष से परमात्मा की महिमा का बाण चलाया, जिससे अज्ञान के अंधकार में डूबे संसार में ज्ञान का प्रकाश चतुर्दिग फैल गया। गुरु साहिब ने सद्‌गुणों का व्यवहार किया और जीवन को सद्‌गुणों की मर्यादा का अनुपालक बनाया। इससे जीवन संतोष से परिपूर्ण हो गया। यह धर्म की अविचल अवस्था है जो हर परिस्थिति में अडोल रहती है। इस तरह श्री गुरु अमरदास साहिब की अडोल अवस्था एक महान सिद्धि के पश्चात

*ई–१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ–२२६०१७, फोन : ९४१५९–६०५३३, ८४९७८–५२८९९

ही सृजित हुई थी, जिसे जान कर मन आश्चर्य से भर उठता है।

श्री गुरु अमरदास जी का प्रकाश (जन्म) जिला श्री अमृतसर साहिब के गाँव बासरके में हुआ था। आप आरंभ से ही धर्म और अध्यात्म में रुचि रखते थे। आत्मिक तृप्ति हेतु आप विभिन्न धर्म-कर्म करते किन्तु मन सदैव असहज रहता था। उनके दो सुपुत्रियां— बीबी दानी जी, बीबी भानी जी और दो सुपुत्र— बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी थे। भरा-पूरा परिवार था। व्यापार और परिवार की जिम्मेदारियों के बावजूद उनकी धार्मिक रुचि में कोई कमी नहीं आई। गुरु साहिब संकल्प के इतने धनी थे कि सन् १५२१ में हरिद्वार गंगा-स्नान के लिये गये तो प्रति वर्ष आने का निर्णय लिया। अगले बीस वर्ष तक वे निरंतर तीर्थ-स्नान के लिये जाते रहे। यह क्रम एक बार भी भंग नहीं हुआ। परमात्मा की भक्ति के बिना जीवन उनके लिये निरर्थक था :

ध्रिगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ ।।
जितु कंमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४९०)

बीस वर्ष का एक लंबा अंतराल व्यतीत हो गया था, किन्तु उनका मन शांत और स्थिर नहीं था। वास्तव में बिना भाग्य के ऐसा गुरु नहीं मिलता जो मन को विकारों, अवगुणों से मुक्त कर जीवन को सुख से भरपूर कर सके। इसे श्री गुरु अमरदास साहिब ने स्वयं अपनी बाणी में स्वीकार किया :

बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईऐ
जे लोचै सभु कोइ ।।
कूड़ै की पालि विचहु निकलै
ता सदा सुखु होइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४९०)

श्री गुरु अमरदास जी एक लंबे समय तक भले ही सच्चे गुरु से मिल नहीं पाये किन्तु अनवरत गुरु को पाने की ओर बढ़ते रहे। वे सत्य तक नहीं पहुंचे थे किन्तु उन्होंने भ्रम को स्वीकार कर सत्य की खोज बंद भी नहीं की थी। मन में अडोल संकल्प और अविचल कामना थी— सत्य को पाने की। उनकी इस दृढ़ता के कारण ही भ्रम टिकते नहीं थे। वे भ्रम से गुजरे, किन्तु सच के निकट होते गये। सन् १५४१ में सत्य तक की यात्रा सम्पूर्ण हुई जब श्री गुरु अंगद साहिब के साथ उनका मेल हुआ। परमात्मा ने यह मेल निश्चित किया हुआ था जो होना ही था, किन्तु मेल के पूर्व की परीक्षा जहां लंबी थी वहीं मेल को सुफल तक पहुंचाने की परीक्षा लंबी भी थी और कठिन भी। श्री गुरु अंगद साहिब से मेल का माध्यम गुरबाणी बनी। गुरबाणी ही गुरु है और गुरु ही गुरबाणी है, जिसमें सृष्टि का सम्पूर्ण अमृत समाया हुआ है— *''बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ।।''* श्री गुरु अमरदास जी का मन व्यग्र था कि ६२ वर्ष की आयु हो गई है और अभी तक उन्हें सच्चा गुरु

नहीं मिला, जो दुविधाओं और भ्रम से उबार सके। एक दिन भोर में अपने भाई की पुत्रवधू बीबी अमरो जी के मुख से गुरबाणी का गायन सुन कर उन्हें लगा कि मानो अमृत बरस रहा है। चित्त शांत हो गया। बीबी अमरो जी श्री गुरु अंगद साहिब की सुपुत्री थीं, जो नितनेम करते हुए श्री गुरु नानक साहिब के बाणी-शबद का मधुर कंठ से गायन कर रही थीं। श्री गुरु अमरदास जी इस बाणी के भाव एवं प्रभाव से इतने प्रभावित हुए कि बीबी अमरो जी से जा पूछा कि यह बाणी-शबद किसका है। बीबी अमरो जी ने जिज्ञासा का समाधान किया कि यह बाणी-शबद श्री गुरु नानक साहिब का है। अब वे परमात्मा में लीन हो चुके हैं और उनकी गद्दी पर अब श्री गुरु अंगद साहिब विराजमान हैं। श्री गुरु अमरदास जी अब और अधिक समय नहीं गंवाना चाहते थे। वे बिना विलंब किये खडूर साहिब स्थित श्री गुरु अंगद साहिब के दरबार में आ गये। बासरके से खडूर साहिब की श्री गुरु अमरदास जी की यह प्रथम यात्रा आसान नहीं थी। इस यात्रा में दो दशक से अधिक के विश्वास और धर्म-कर्म सबसे बड़ी बाधा थे। उन्हें त्याग कर इस पथ पर चलना अत्यंत साहसपूर्ण कार्य था। सामान्य व्यक्ति ऐसा सोच भी नहीं सकता। पारंपरिक और पुरातन विचार त्याग कर नये विचार का धारक बनना नये जीवन जैसा होता है। यह दृढ़ संकल्प के बिना संभव नहीं हो सकता। इस यात्रा में सामाजिक संबंधों के विघ्न भी परास्त हो गये। श्री गुरु अंगद साहिब से उनके संबंध समानता के थे। वे आपस में समधी का रिश्ता रखते थे। श्री गुरु अंगद साहिब और श्री गुरु अमरदास जी की आयु में भी बड़ा अंतर था। श्री गुरु अमरदास जी आयु में श्री गुरु अंगद साहिब से लगभग २५ वर्ष बड़े थे। श्री गुरु अमरदास जी जब बासरके से चले तभी मन में श्री गुरु अंगद साहिब को गुरु धारण करने का निश्चय कर चुके थे। खडूर साहिब पहुंचना और श्री गुरु अंगद साहिब का दर्शन करना औपचारिकता मात्र रह गया था। उनके सारे भ्रम गुरु-शबद ने ही दूर कर दिये थे :

सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ।।
हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ ।।
सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ।।१ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४२३)

धर्म के पथ पर चलने की दृढ़ता और शक्ति गुरु की कृपा से प्राप्त होती है। मनुष्य जब इसे स्वयं की शक्ति समझता है तो अहंकार से भर उठता है। गुरबाणी के अनुसार भक्ति और अहंकार एक दूसरे के विरोधी हैं। दोनों एक साथ नहीं रह सकते। बीबी अमरो जी द्वारा गायन किये गये शबद ने श्री गुरु अमरदास जी के सारे भ्रम तोड़ दिये थे। अब जीवन सहज अवस्था में आ गया था। इस सहजता ने ही श्री गुरु अमरदास जी के मन में

विनम्रता, सेवा-भावना उत्पन्न कर दी थी।

श्री गुरु अमरदास जी की आयु ६२ वर्ष हो चुकी थी। वे गुरु-घर में रह कर कोई भी सेवा-कार्य ले सकते थे किन्तु स्व प्रेरणा से उन्होंने जो कार्य अपने लिये नियत किया वह सबसे कठिन था। श्री गुरु अमरदास जी मध्य रात्रि जाग कर ब्यास नदी पर जाते, जो खडूर साहिब से बहुत दूर थी। श्री गुरु अमरदास जी ब्यास नदी पर पहुंच कर पहले स्वयं स्नान करते फिर गहरे पानी में उतर कर श्री गुरु अंगद साहिब के स्नान के लिये गागर में जल भरते थे। सिर पर जल की गागर उठा कर चलते तो मार्ग में मात्र एक स्थान पर रुक कर विश्राम करते थे। श्री गुरु अंगद साहिब के स्नान-काल के पूर्व ही वे खडूर साहिब पहुंच जाया करते थे। दिन में श्री गुरु अमरदास जी लंगर के बर्तन मांजते, जलाने के लिये वन से लकड़ी काट कर लाते और आई हुई संगत की अन्य सेवा करते नहीं थकते थे। समय मिलने पर श्री गुरु अंगद साहिब से लेकर श्री गुरु नानक साहिब की बाणी पढ़ते थे। श्री गुरु अंगद साहिब के पास श्री गुरु नानक साहिब की उच्चारित बाणी का संग्रह 'पोथी' के रूप में मौजूद था।

श्री गुरु अमरदास जी की सेवा का यह क्रम बिना किसी बाधा के लगभग बारह वर्ष तक अनवरत जारी रहा। इसमें कोई बाधा नहीं आई, कोई व्यतिक्रम नहीं उत्पन्न हुआ। न कोई आलस्य, न कोई रोग, न कोई भ्रम उन्हें इस संकल्प से डिगा सका। यह दिन-रात की सेवा थी, जिसमें भक्ति का प्रवाह भी उनके मन में साथ-साथ चलता रहता था। लोक-उपहास भी उनके निश्चय को डिगा नहीं पाये। तन धीरे-धीरे क्षीण हो रहा था, किन्तु सेवा की भावना उसी के सापेक्ष सबल होती जा रही थी। परिपक्व होती भावना ने आयु के प्रभाव को निकट नहीं आने दिया, जिससे वे श्री गुरु अंगद साहिब की कृपा के पात्र बनते गये। मन की भावना और सेवा ही गुरु के निकट ले जाती है। गुरु की सेवा सबसे श्रेष्ठ साधना है— *"गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु।। हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु।।"* गुरु की सेवा श्रेष्ठ भक्ति है। यह मन में परमात्मा को प्रकट करती है। इससे मन को सच और झूठ का बोध हो जाता है। इससे सभी दुख, रोग दूर हो जाते हैं। मन में सुख का स्थान बनता है। यही कारण था कि बरसात की रात में जुलाहे के करघे की ठोकर लगने और जुलाहे की पत्नी के अपमानजनक शब्द भी श्री गुरु अमरदास साहिब के निश्चय को विचलित नहीं कर सके थे। श्री गुरु अंगद साहिब की कृपा से उनकी सेवा में उत्साह की वृद्धि होती गई। सन् १५५२ में श्री गुरु अमरदास जी को गुरुआई सौंप कर श्री गुरु अंगद साहिब ज्योति-जोत समा गये।

श्री गुरु अमरदास साहिब ने गोइंदवाल साहिब को सिक्खी का नया केंद्र बनाया। गोइंदवाल साहिब नगर की स्थापना श्री गुरु

अंगद साहिब के आदेशानुसार श्री गुरु अमरदास साहिब ने ही की थी। श्री गुरु अमरदास जी का गुरु-काल सन् १५५२ से सन् १५७४ तक का रहा। आप १ सितंबर, सन् १५७४ को ज्योति-जोत समाये थे। श्री गुरु अमरदास साहिब ने सेवा के महत्व से संसार को अवगत कराया। आपने कहा कि मनुष्य में सेवा की भावना उसके परम सौभाग्य का प्रतीक है :

सतिगुरु सेवनि से वडभागी ।।
साचै नामि सदा लिव लागी ।।
अंतरि नामु रविआ निहकेवलु
त्रिसना सबदि बुझाई हे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०४४)

गुरु-सेवा की प्रेरणा और अवसर गुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है। गुरु-कृपा से अनमोल कुछ नहीं है। जिसे गुरु की कृपा प्राप्त है उसका मन सेवा के साथ ही परमात्मा की भक्ति में भी लीन रहता है। परमात्मा की भक्ति-भावना उसके मन को माया और विकारों से मुक्त कर निर्मल कर देती है। निर्मल मन से ही वह सेवा करता है और भक्ति करता है। श्री गुरु अमरदास जी की बाणी और उपदेश मानव समाज पर गहरा प्रभाव छोड़ने लगे। बड़ी संख्या में लोग उनके अनुयाई बन गये। निकटवर्ती हरीपुर का राजा भी गुरु साहिब का श्रद्धालु बन गया।

श्री गुरु नानक साहिब अपनी बाणी की जो पोथी श्री गुरु अंगद साहिब को सौंप कर गये थे वो श्री गुरु अंगद साहिब से श्री गुरु अमरदास साहिब को प्राप्त हुई। इस बाणी के साथ श्री गुरु अमरदास साहिब ने सिक्खों को जोड़ा और नितनेम की मर्यादा को आगे बढ़ाया। श्री गुरु अमरदास साहिब ने स्वयं भी प्रचुर बाणी उच्चारण की, जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुशोभित है। विनम्र सेवक की भांति गुरु-घर की सेवा करते हुए गुरु साहिब ने धर्म के मर्म को पा लिया था। इस मर्म को ही उन्होंने सहज रूप में अपनी बाणी में प्रकट किया। श्री गुरु अमरदास जी की बाणियों में 'अनंदु साहिब' बाणी मन की सिद्धि से उपजे आत्मिक आनंद की बाणी है। गुरु-घर के किसी भी प्रयोजन से आयोजित दीवान की संपन्नता इस बाणी के गायन से ही होती है। इस बाणी में गुरु साहिब ने स्पष्ट किया कि धर्म के मार्ग पर चलने की शक्ति परमात्मा से प्राप्त होती है— *"साचा नामु मेरा आधारो ।।"* गुरु का ज्ञान मनुष्य को इतना सशक्त बना देता है कि वो अपने सबसे बड़े शत्रु— पांच विकारों—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर विजय प्राप्त कर लेता है और काल के भय से मुक्त हो जाता है— *"पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ।।"* गुरु साहिब ने कहा कि जिस अमृत की खोज देवता, संत, ऋषि, मुनि कर रहे हैं वह अमृत गुरसिक्ख को अपने गुरु से सहज ही प्राप्त हो जाता है। इस अमृत के बिना धर्म के अति कठिन मार्ग पर

चला नहीं जा सकता। गुरसिक्ख गुरु से गुरुबाणी का अमृत पाकर तलवार की तीक्ष्ण धार से अधिक तीक्ष्ण और बारीक बाल से भी बारीक धर्म के मार्ग पर सरलता से चल पड़ता है— *''खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा।।''* 'अनंदु साहिब' बाणी गुरसिक्ख के जीवन का सार है। सिक्ख धर्म जीवन की कठिन परीक्षा का धर्म है, जिसे गुरसिक्ख अपनी दृढ़ता और साहस से पास करता है। गुरसिक्ख ने वास्तव में श्री गुरु नानक साहिब के काल से ही अपने आत्म-बल से धर्म के मार्ग में आने वाले विघ्न दूर कर अपना मार्ग प्रशस्त किया है। गुरु-काल में मुगलों के जुल्म से निरंतर टकराव हुआ। श्री गुरु अरजन साहिब, श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी हुई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपना पूरा वंश कुर्बान कर दिया। असंख्य सिक्ख शहीद हुए। जकरिया खान और मीर मन्नू सिक्खों का नामोनिशान मिटाने पर तुल गये थे। सिक्खों ने अंग्रेजों के जुल्म भी सहे और आज तक सह रहे हैं। कोई अन्य कौम होती तो इतिहास के पन्नों में सिमट गई होती, किन्तु सिक्ख कौम आज है, चढ़दी कला (सम्पन्नता) में है, तो उस अमृत के कारण जो उसे पल-पल गुरबाणी से प्राप्त होता रहता है तथा शक्ति प्रदान करता है— *''अंम्रितु नामु पीआ दिन राती दुबिधा मारि निवारे।।''*

धर्म-जगत में आदर्श विचार तो बहुत थे किन्तु आदर्श व्यवहार अलभ्य था। कर्मकांड, रूढ़ियां इतनी सबल थीं कि उन्हें तोड़ने का साहस किसी में नहीं था। श्री गुरु नानक साहिब ने सूत का जनेऊ पहनने से इनकार कर पहली बार धर्म को गुणों और आचार के साथ जोड़ा। उन्होंने दया, संतोष, जत व सत जैसे गुणों का पक्ष लिया। इसी भावना को विस्तार देते हुए श्री गुरु अमरदास साहिब ने धार्मिक-सामाजिक मर्यादायें स्थापित कर उनके पालन पर भी ध्यान केन्द्रित किया। आपने यदि कहा कि *''एकसु ते सभि रूप हहि रंगा।।''* तो इसका क्रियान्वयन भी सुनिश्चित किया। गुरु साहिब ने नियम बना दिया कि उनके दरबार की संगत में वही बैठ सकेगा जो पहले लंगर की पंगत में सबके साथ बैठ कर भोजन-प्रसाद छकेगा। गुरु साहिब के दरबार में हर वर्ग, वर्ण के लोग आते थे और गुरु साहिब के प्रति श्रद्धा प्रकट करते थे, फिर भी उनमें से कइयों के मन में जाति, वर्ण वाला भेदभाव मिट नहीं रहा था। पंगत में सभी के साथ बैठना उन्हें स्वीकार नहीं था। गुरु साहिब ने इस भ्रम को तोड़ने के लिये 'पहले पंगत, पाछे संगत' का नियम बनाया, जिससे लोगों में पारस्परिक भाईचारे व समानता का भाव उत्पन्न हुआ। श्री गुरु नानक साहिब ने स्त्री-सम्मान और समानता की बात की थी। श्री गुरु अमरदास जी ने पर्दा-प्रथा का विरोध किया और संगत में स्त्रियों को बिना किसी पर्दे के

आने की मर्यादा लागू की। आपने विधवाओं को नवजीवन का अधिकारी मानते हुए उनके स्वयं पुनर्विवाह कराये। गुरु साहिब ने सती-प्रथा के विरुद्ध भी समाज में चेतना जाग्रत की, जो तत्कालीन परिस्थितियों में युगांतरकारी कदम था। श्री गुरु अमरदास जी की बाणी और मर्यादा दोनों ही सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर साबित हुए।

श्री गुरु अमरदास साहिब ने सिक्ख धर्म के नियोजन के लिये ठोस कदम उठाये, जो समय की आवश्यकता बन चुके थे। श्री गुरु नानक साहिब जब धर्म प्रचार-यात्राओं पर गये थे, उन्होंने स्थान-स्थान पर संगत स्थापित की थी। श्री गुरु अमरदास साहिब ने गोइंदवाल साहिब में बावली का निर्माण कराया तो सिक्ख संगत की संख्या में बड़ी वृद्धि हुई। संगत में गुरबाणी से जुड़ने, सिक्खी सिद्धांतों को समझने की उत्सुकता बढ़ रही थी। गुरबाणी की सही व्याख्या और संगत को संगठित करने के लिये श्री गुरु अमरदास जी ने पूरे क्षेत्र को बाईस भागों में बांट कर बाईस प्रमुख सिक्खों को उनका मुखी नियुक्त किया। किसी भी विचार, दर्शन को दृढ़ आधार प्रदान करने, सदजीवी बनाने के लिये उसे संस्थागत रूप देना आवश्यक होता है। इसका आरंभ श्री गुरु अमरदास साहिब ने किया।

श्री गुरु अमरदास साहिब की दृष्टि वर्तमान के साथ ही भविष्य पर भी टिकी हुई थी। गुरु साहिब ने जहां गोइंदवाल साहिब दिया, चौरासी सीढ़ियों वाली बावली प्रदान की, वहीं भविष्य का सबसे महत्वपूर्ण फैसला श्री गुरु रामदास साहिब को गुरुआई का अधिकारी बनाना और श्री अमृतसर साहिब अमृत सरोवर के लिये स्थान चिन्हित करना था। श्री गुरु अमरदास साहिब मानव जीवन की सफलता का केंद्र बन गये थे :

चरण त पर सकयथ चरण गुर अमर पवलि रय।।
हथ त पर सकयथ हथ लगहि गुर अमर पय।।
जीह त पर सकयथ जीह गुर अमरु भणिजै ।।
नैण त पर सकयथ नयणि गुरु अमरु पिखिजै।।
स्रवण त पर सकयथ स्रवणि गुरु अमरु सुणिजै।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९४)

भट्ट जालप जी ने श्री गुरु अमरदास जी की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि मनुष्य के चरणों की सार्थकता श्री गुरु अमरदास साहिब के बताये मार्ग पर चलने में है। मनुष्य के हाथों की सार्थकता गुरु साहिब के चरणों का स्पर्श करने में अर्थात् उनके जैसी विनम्रता धारण करने में है। जिह्वा की सार्थकता गुरु साहिब की महिमा का गुणगान करने में है। नेत्रों की सार्थकता श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन करने, उनकी शरण लेने में है। कानों की सफलता श्री गुरु अमरदास साहिब की बाणी सुनने में है। भट्ट जालप जी ने आगे कहा कि मन की उपयोगिता श्री गुरु अमरदास जी को मन में बसाने में है। शीश की सार्थकता श्री गुरु

अमरदास जी के चरणों में निवाने से है। परमात्मा ने मनुष्य को विभिन्न शक्तियां उसे शरीर के विभिन्न अंगों के माध्यम से प्रदान की हैं, किन्तु उन शक्तियों का सदुपयोग श्री गुरु अमरदास साहिब की शरण लेने और उनकी कृपा प्राप्त करने से ही संभव है। श्री गुरु अमरदास जी में भट्ट साहिबान को प्रत्यक्ष परमात्मा के दर्शन हुए थे, क्योंकि संसार आज तक परमात्मा जैसी शक्तियों की कल्पना करता आया था, वे समस्त कल्पनायें गुरु साहिब में साकार हो रही थीं। वैसी ही शक्तियां गुरु साहिब ने अपने सिक्खों को प्रदान कर सबल बनाया— *''भगता की चाल निराली।।''* श्री गुरु अमरदास साहिब की कृपा से गुरसिक्ख समाज में विशिष्ट नजर आने लगे थे। श्री गुरु अमरदास साहिब स्वयं आगे बढ़ कर उद्धार करते थे। एक धनी व्यक्ति का पुत्र प्रेमा अपने पिता की मृत्यु के पश्चात कुमार्ग पर पड़ा बर्बाद हो गया। उसे कोढ़ जैसा रोग भी हो गया। प्रेमा सभी तरफ से निराश, हताश हो गोइंदवाल साहिब आ पहुंचा। कोमल हृदय श्री गुरु अमरदास साहिब ने उस पर करुणा कर उसका रोग दूर कर दिया। प्रेमा जब निरोग हो गया तो गुरु साहिब ने उसे परिवार की खुशी देने के बारे में सोचा। गुरु साहिब ने एक दिन आई हुई संगत से प्रेमा के विवाह की बात की। एक गुरसिक्ख अपनी विवाह योग्य पुत्री देने को तैयार हो गया, किन्तु उस गुरसिक्ख की पत्नी ने इनकार करते हुए कह दिया कि प्रेमा के तो खानदान का ही अता-पता नहीं है। इतना सुनते ही श्री गुरु अमरदास साहिब ने भावुक होते हुए कहा कि प्रेमा आज से मेरा पुत्र है। मेरा कुल इसका कुल जाना जायेगा। इस तरह गुरु साहिब ने प्रेमा का तन ही नहीं, पूरा जीवन सार्थक कर दिया। जीवन परमात्मा सार्थक कर सकता है या परमात्मा रूप गुरु।

श्री गुरु अमरदास साहिब ने जीवन के अंतिम दिनों में श्री गुरु रामदास साहिब को गुरुआई सौंपी। आप जब ज्योति-जोत समाने लगे तो निकटस्थ सिक्खों को बुला कर अपने समस्त परिवार से कहा कि परमात्मा के बुलावे पर वे संसार से जा रहे हैं। यह दुख का नहीं आनंद का विषय है। उनके जाने के बाद कोई विलाप नहीं करेगा। कोई मृतक कर्मकांड नहीं होगा। बस, गुरबाणी का गायन होगा। इस निर्देश द्वारा श्री गुरु अमरदास साहिब ने मृत्यु के पश्चात संस्कार को सरल व सहज बना परमात्मा की आज्ञा में रहने के श्री गुरु नानक साहिब के विचार को सुदृढ़ता प्रदान की।

श्री गुरु अमरदास जी की प्रतिष्ठा श्री गुरु नानक साहिब और श्री गुरु अंगद साहिब जैसी ही स्थापित हुई— *''पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु।।''* गुरसिक्ख को अपना मन, तन सार्थक करना है, जीवन सफल करना है तो वो श्री गुरु अमरदास साहिब की शरण में आये।

श्री गुरु अमरदास जी द्वारा बसाई नगरी : गोइंदवाल साहिब

*–स. हरप्रीत सिंघ नाज़**

गोइंदवाल साहिब, पंजाब का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है, जो माझा क्षेत्र में स्थित है। ब्यास नदी के किनारे स्थित है। यह ज़िला तरनतारन के ब्लाक खडूर साहिब के अधीन आता है। यह खडूर साहिब से ९ किलोमीटर तथा तरनतारन से २३ किलोमीटर और श्री अमृतसर साहिब से लगभग ५० किलोमीटर दूर है।

गोइंदवाल साहिब की आधारशिला :

जिस स्थान पर गोइंदवाल साहिब नगर स्थित है, वह धरती मुग़ल काल के समय में लाहौर सूबे के परगना पट्टी के अधीन आती थी। ब्यास दरिया के पश्चिमी किनारे पर स्थित यह ज़मीन गोइंदा नामक मरवाहा क्षत्रिय की मालिकाना थी, जो ब्यास से पार तलवंडी चौधरियां का निवासी था। उसके शरीकों ने इस ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया था। उसने शरीकों की मिन्नत की तथा कई अन्य साधन इस्तेमाल किए, लेकिन उन्होंने ज़मीन नहीं छोड़ी। आख़िर मुकद्दमा किया, जो दिल्ली तक चला गया और अंततः उसे ज़मीन मिल गई। उसने यहाँ पर एक नगर बसाना चाहा, लेकिन प्राकृतिक आपदा या शरीकों की शरारत के कारण वह सफल न हो सका। अंतत : उसने श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में जाने की सोची।[१]

१५८६ ई. में वह खडूर साहिब पहुँचा और श्री गुरु अंगद देव जी के चरणों में उपस्थित होकर विनती की कि ''गुरु जी! ब्यास नदी के किनारे एक गाँव बसाने की कई बार कोशिश की हैं, परन्तु बुरी आत्माएं मकान गिरा देती हैं और वहाँ निवास नहीं करने देती। कृप्या वहाँ चरण धरें और फिर गाँव बसाने का मार्ग प्रशस्त करें। आप जितनी चाहो उतनी ज़मीन ले लो। कृपा करो, मेरा कार्य सम्पन्न करो और वहाँ एक बड़ा नगर बसाओ।''[२]

श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने पुत्र दासू को बुलाया और भाई गोइंदा के साथ जाकर गाँव बसाने के लिए कहा, मगर उसने जाने से मना कर दिया। फिर गुरु जी ने अपने दूसरे पुत्र दातू से कहा। वो कहने लगा कि हमें यह सरदर्दी लेने की क्या ज़रूरत है? अंततः गुरु जी ने अपने परम सेवक श्री (गुरु) अमरदास जी को बुलाकर कहा, ''पुरखा! उत्थे जावो

**चित्रकार, श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, फतिहगढ़ साहिब (पंजाब)*

और सुंदर नगरी वसावो, जो कि गुरु–कीर्ति दा ही धाम होवे।''[3]

वो वहाँ पर जगह देखने गए और वापस आकर श्री गुरु अंगद देव जी को बताया, ''सच्चे पातशाह! वो जगह बहुत सख़्त है, रहने की नहीं।'' गुरु जी ने फरमान किया, ''पुरखा! तुम्हारे चरण के प्रताप भला होवेगा!'' तो उन्होंने कहा, ''जिही आज्ञा होवे, उहो जिहा नगर वसावां।''[4]

श्री गुरु अंगद देव जी ने उन्हें एक छड़ी देकर फरमान किया कि ''पूरब में धरा को अच्छी तरह से खोद कर, समतल बना कर निवास–योग्य बनाओ! वहाँ पर अपने लिए निवास बना लेना! उसको देख कर अन्य लोग निवास करने लग जाएंगे। यह धनवान 'गोइंदा' घर बनवाएगा। इस 'गोइंदे' के नाम पर शहर का नाम रख देना!''

निज निवास हित रचहु अवासु।
नर पिखि आवहि करहि सु बासु।।३३।।
इह गोंदा खत्री धनवान।
करहि चिनावन महिल महान।
नाम इसी के परि पुरि नामू।
रचहु रुचिर बसिबे हित धामू ।।३४।।५

श्री गुरु अमरदास जी भाई गोइंदा के साथ उस जगह पर पहुँचे और नगर बसाने की योजना तैयार की। गुरु जी की आज्ञा के अनुसार उन्होंने ऊँची जगह देख, 'सतिनाम' कहकर जल छिड़का। फिर श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा दी गई छड़ी से नगर की रेखा खींच दी। इसके पश्चात् अरदास कर मिठाई बाँटी और नगर की आधारशिला रख दी। नगर का नाम भाई गोइंदा के नाम पर 'गोइंदवाल' रख दिया। फिर कारीगर लगा कर , तेज़ी के साथ निर्माण–कार्य शुरू कर दिया।[6] निर्माण करवा वापस खडूर साहिब आ गए और श्री गुरु अंगद देव जी को बताया कि आप जी की आज्ञा के अनुसार यह कार्य संपूर्ण हो गया है। गुरु जी ने आज्ञा की, ''जो पुरखा जी जगह तैयार होई।उथे जाइ के बसीए।''[7]

गोइंदवाल साहिब का बसना :

भाई गोइंदा ने सर्वप्रथम श्री गुरु अमरदास जी के लिए हवेली तैयार करवाई, परन्तु उसमें चौबारा नहीं था, इसलिए गुरु जी को यह पसंद नहीं आई। फिर चौबारे वाली हवेली बनाई गई। श्री गुरु अमरदास जी अपने परिवार सहित इसमें रहने लगे। वे एकांत सिमरन करने के लिए चौबारे में रहने लगे। इस स्थान पर अब 'गुरुद्वारा श्री चौबारा साहिब' सुस्थित है।

चाहे वे गोइंदवाल साहिब में बस गए लेकिन फिर भी प्रतिदिन श्री गुरु अंगद जी की सेवा में खडूर साहिब जाते। वे अमृत बेला में जाते समय श्री गुरु अंगद देव जी के स्नान के लिए ब्यास दरिया से पानी की गागर भरकर ले

जाते। वहाँ पर पहुँच कर श्री गुरु अंगद जी को स्नान करवाते और उपरांत सारा दिन लंगर आदि की सेवा करते। उनकी निष्काम सेवा-साधना को देखकर श्री गुरु अंगद देव जी ने चैत सुदी ४, संवत् १६०९ बि. को श्री गुरु अमरदास जी को गुरुआई सौंप दी, लेकिन गुरु जी के पुत्रों को यह बात अच्छी न लगी।

गुरुआई पर आसीन होने के पश्चात् श्री गुरु अमरदास जी गोइंदवाल साहिब में ही रहने लगे। गुरु जी के दर्शन के लिए संगत यहाँ पर आने लगी। गुरु जी ने यहाँ पर सबके लिए लंगर चला दिया। श्री गुरु अंगद देव जी का पुत्र दातू भी गोइंदवाल साहिब पहुँच गया और उसने गुरु जी के साथ दुर्व्यवहार किया। इसलिए गुरु जी गोइंदवाल साहिब छोड़ कर, अपने पैतृक गाँव बासरके चले गए। यहाँ एक मकान में एकांत हो कर बैठ गए। बाबा बुड्ढा जी तथा अन्य सेवक बड़े यत्न के साथ उनका पता लगाकर उन्हें वापस गोइंदवाल साहिब लाए।

वापस लौटकर भी श्री गुरु अमरदास जी अधिकतर समय चौबारे में ही बैठे रहते। इसी तरह आठ दिन निकल गए। सिक्खों ने गुरु जी के मुख्य सेवक भाई बल्लू से कहा, ''जो साहिब को बाहर लिआओ! जो साहिब निकले दिवान लगे।'' भाई बल्लू ने जाकर संगत की व्याकुलता बयान की और विनती की, ''जगत को उपदेश करिए! बाहर दिवान मो चल के बैठिए!'' भाई बल्लू की विनती स्वीकार कर श्री गुरु अमरदास जी ने हुक्म दिया कि दिवान-आयोजन का प्रबंध करो। बाहर शामियाने लगाए गए और गुरु जी आसन पर आ विराजमान हुए। भाई सत्ता और भाई बलवंड कीर्तन करने लगे। गुरु जी ने आज्ञा की, ''मेरे दर्शन नो तब आवै, जब मेरे लंगर मो प्रसादि पाइ कर आवे।''[6] इस प्रकार श्री गुरु अमरदास जी ने सर्वप्रथम 'पहले पंगति, पाछे संगति' का आदेश दिया, जिससे तात्पर्य था कि 'पंगत' (कतार) में बैठ कर लंगर छकने के उपरांत ही संगत में आकर बैठो! इस तरह गुरु जी ने गोइंदवाल साहिब में लंगर द्वारा, ऊँच-नीच, जात-पाँत ख़त्म कर, समानता का अनुप्रयुक्त रूप प्रस्तुत किया।

गोइंदवाल साहिब का और आबाद होना :

श्री गुरु अमरदास जी ने अब गोइंदवाल साहिब नगर को और आबाद करने का निर्णय लिया। गुरु जी ने आज्ञा की, ''जो कोई मेरा परिवार है, सो आन कर मेरे पास रहे।'' सभी रिश्तेदारों के रहने के लिए घर चाहिए थे, इसलिए लकड़ी भी काफ़ी चाहिए थी। भाई बल्लू ने गुरु जी से विनती की, ''सच्चे पातशाह! लकड़ी को हुकम होवे, अमारत उठे।''[7] गुरु जी ने अपने भतीजे सावन मल्ल को बुलाया और हुक्म किया कि हरीपुर के पहाड़ी

राजा के पास जाओ! लकड़ी प्राप्त कर ब्यास दरिया के माध्यम से लेकर आओ!''

उस समय हरीपुर का राजा रामचंद था। इसके पुत्र जगदीश चंद का शरीर रोग-ग्रसित था।[१०] गुरु जी की कृपा से भाई सावन मल्ल ने राजा के पुत्र को स्वस्थ कर दिया। इससे राजा बहुत प्रभावित हुआ। उसने बहुत सारी लकड़ी गट्ठे बांध कर दरिया ब्यास के माध्यम से गोइंदवाल साहिब भेज दी। इसके पश्चात् गुरु जी के भाई, भतीजे, जमाई आदि सभी गोइंदवाल साहिब में बस गए।[११]

गोइंदवाल साहिब का व्यापारिक केंद्र बनना :

धीरे-धीरे गोइंदवाल साहिब में २२ वर्गों के क्षत्रिय लोग बस गए। इन सबने एक दिन गुरु जी से विनय की, ''सच्चे पातशाह! हम सभ तों लंगर मो प्रसादि करते हैं। हमारी गुज़र हुई। बेटी बेटा बिआह चाहिए। पर जगत का बरतन बिना माया उदम नहीं होता। सो जो मर्ज़ी सो कहै।'' गुरु जी ने परामर्श देते हुए कहा, ''जो कपड़े के सूदने (परने या तौलिए) बनावो, तुम जेते बनाहि सको। जब संगत देसंतर दी दर्शन कउ आवै, तब पाँच टके सेर बेचना।'' सब संगत सूदने लेने लगी और इस तरह सिक्खों का बड़ा रोज़गार हुआ।[१२] क्योंकि यह नगर उस समय के दिल्ली-लाहौर मार्ग पर स्थित था, इसलिए यहाँ पर अन्य व्यापार भी होने लगा और धीरे-धीरे यह नगर व्यापारिक केंद्र बन गया।

गोइंदवाल साहिब में बावली-निर्माण :

१५५९ ई. (१६१६ बि.) में श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब में एक बावली (बाउली) के निर्माण की सोची।[१३]. गुरु जी ने खास जगह बता कर हुक्म किया, ''यहाँ बावली बनाओ।'' बाबा बुड्ढा जी ने पहले फावड़े द्वारा मिट्टी खोदी और टोकरी भरकर उठा ली। इसके बाद बाकी की संगत भी मिट्टी खोद कर उठाने लगी। इस प्रकार बावली की खुदाई का काम शुरू हो गया।[१४] 'महिमा प्रकाश' (गद्य) के अनुसार— ''सरबत्त सिक्ख संगत प्रेम सो खोदन लगी। सरबत्त सिक्ख बाउली जी की टहल अपने प्रेम सो करते, कोई ईट लिआवते, कोई चूना लिआवते। इसी प्रकार कर के सब संगत ही सेवा करती। 'जेठा जी' ईंट की कार करते थे।''[१५]

गुरु जी ख़ुद बावली के पास बैठ कर काम की निगरानी करते थे। जहाँ पर वे बैठते थे, उस जगह पर अब बावली साहिब के प्रवेश-द्वार के निकट 'थड़ा साहिब श्री गुरु अमरदास जी' शोभित है। 'महिमा प्रकाश' के अनुसार बावली संपूर्ण होने पर गुरु जी अति प्रसन्न हुए— ''बावली जी संपूर्ण तैयार हुई। सरबत्त संगत पर बडी खुसी होई।''[१६] यह ८४

सोपानयुक्त बावली संगत के लिए तीर्थ बन गई।

गोइंदवाल साहिब : सिक्खी का धुरा :

जो-जो गुरसिक्ख तन-मन से बावली की कार करते, उन पर गुरु जी की ख़ास कृपा हुई। "बाउली जी की टहल काज जिन सिखो ने किया सबकी कार थाइ होई, अर बख्स भी होती गई।"[१७] गुरु जी ने उन्हें मंजी पर बैठ संगत में प्रचार की आज्ञा देते, इसलिए यह प्रणाली मंजी-संस्था नाम से प्रचलित हुई। इन प्रचारकों की संख्या धीरे-धीरे बाईस तक पहुँच गई और यह संस्था बाई मंजियां (सिक्खी प्रचार-केंद्र) नाम से प्रसिद्ध हुई। इस प्रकार गोइंदवाल साहिब सिक्खी प्रचार का धुरा (केंद्र) बन गया।

गोइंदवाल साहिब की बैसाखी :

इन मंजीदारों में डल्ला गाँव के निवासी भाई पारो 'परमहंस' भी थे। उन्होंने सोचा कि वर्ष में एक बार, गोइंदवाल साहिब में एक बड़े जोड़ मेले का आयोजन होना चाहिए, जिसमें सिक्ख, गुरु साहिब के हजूर इकठ्ठा हों और आपसी प्रेम बढ़े। भाई पारो सिक्खों को साथ लेकर गुरु जी के पास पहुँचे और विनय की :

हे दीन दिआल जो आगिआ होए।
बरख माह दिन कहोए जोइ।
सरब सिक्ख गुर दरशन आवै।
गुर दरस प्रताप भव पार परावै।
अरु सिख सिख गुरधारे प्रेम।
बढे भगत होइ पूरण नेम।[१८]

यह सुनकर गुरु जी प्रसन्न हुए और वचन किया :

जो तुम चितवी मम चित सोई।
बिसोए के दिन आवै सभ कोई।
सभ सिखन इह देहु पठाइ।
सुन सभ आवै प्रेम बढ़ाइ।[१९]

भाई पारो ने सब देशों की संगत को लिखकर भेज दिया। बैसाखी पर बड़ी संख्या में संगत आई और गुरु जी के दर्शन पाकर निहाल हुई। इस प्रकार भाई पारो की बुद्धिमता और गुरु जी की कृपा से गोइंदवाल साहिब में बैसाखी का जोड़ मेला मनाना पक्का हो गया, जो सिक्ख धर्म का एक बड़ा पर्व है।

बादशाह अकबर का गोइंदवाल साहिब आगमन :

गोइंदवाल साहिब में एक ब्राह्मण तपा रहता था, जो बादशाह अकबर के दरबारी बीरबल का गुरु था। यह सतिगुरु की महिमा देखकर ईर्ष्या करता था। इसने कुछ ब्राह्मण इकट्ठे कर अकबर के पास फ़रियाद की कि श्री गुरु अमरदास जी ने वर्ण-व्यवस्था नष्ट कर दी है, गायत्री की जगह वाहिगुरु का मंत्र गायन किया है, जिससे धर्म की हानि हुई है। बादशाह अकबर ने श्री गुरु अमरदास जी को अपने पास बुलाया। गुरु जी ने अपने प्रमुख

सेवक भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) को अकबर के पास भेजा। उन्होंने बादशाह के प्रश्नों का जवाब देकर संतुष्टि करवा दी।[२०] बादशाह उनसे बहुत प्रभावित हुआ, इसलिए वह गुरु जी के दर्शन करने के लिए गोइंदवाल साहिब आया। 'महिमा प्रकाश' में लिखा है कि बादशाह अकबर ने गुरु जी के दर्शन किये और लंगर में से प्रसादा छक कर अति प्रसन्न हुआ। उसने श्री गुरु अमरदास जी की सुपुत्री, बीबी भानी जी को तोहफे के तौर पर कुछ ज़मीन भेंट की। मुग़ल बादशाहों के समय की ११५५ रुपए की जागीर गोइंदवाल साहिब, टोडेवाल, दुग्गलवाला, फतह चक्क आदि नगरों में थी।[२१]

श्री गुरु अमरदास जी का ज्योति-जोत समाना :

श्री गुरु अमरदास जी ने गुरुआई के लिए अपने दोनों पुत्रों (बाबा मोहन और बाबा मोहरी) तथा दोनों दामाद (भाई रामा और भाई जेठा जी) की परख की। परख की कसौटी में भाई जेठा जी सफल हुए और गुरु जी ने उन्हें गुरुआई पर आसीन करने का निर्णय किया। अपना अंतिम समय निकट जान कर गुरु जी ने अपने सभी संबंधियों और मुख्य सेवकों को बुला कर २ आश्विन, १६३१ बि.को गुरु-पद अपने दामाद भाई जेठा जी को प्रदान कर श्री गुरु रामदास जी बना दिया। श्री गुरु अमरदास जी ने अपने दोनों पुत्रों को श्री गुरु रामदास जी को माथा टेकने का हुक्म दिया। बड़े पुत्र बाबा मोहन ने ऐसा करने से इनकार कर दिया जबकि बाबा मोहरी ने गुरु-पिता का हुक्म स्वीकार कर श्री गुरु रामदास जी के आगे सिर झुका दिया।

गोइंदवाल साहिब में अब भी चौबारा साहिब के निकट ही 'गुरुआई-स्थान गुरु रामदास जी' सुस्थित है, जहाँ गुरु जी ने श्री गुरु रामदास जी को गुरु-पद प्रदान किया था। यहीं पर 'ज्योति-जोत स्थान पातशाही तीसरी' भी शोभित है।

श्री गुरु रामदास जी लम्बा समय यहाँ पर रहे। श्री गुरु अरजन देव जी भी अक्सर गोइंदवाल साहिब आते रहते थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब भी ग्वालियर की रिहाई के बाद दर्शन करने के लिए गोइंदवाल साहिब आए थे।[२२] भाई गुरदास जी के अंतिम समय में भी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी गोइंदवाल साहिब आए थे। श्री गुरु हरिराय साहिब भी श्री गुरु अमरदास जी के इस स्थान के दर्शन करने के लिए गोइंदवाल साहिब आए थे और यहाँ पर ही दारा शिकोह की मदद की थी।[२३] श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब भी दर्शनार्थ श्री अमृतसर साहिब से तरनतारन, खडूर साहिब होते हुए गोइंदवाल साहिब आए थे।[२४]

अंत में हम कह सकते हैं कि गोइंदवाल

साहिब, सिक्ख ऐतिहासिक कई घटनाओं का साक्षी है। इसी कारण सिक्ख इतिहास में इस नगर का बड़ा महत्व है। गोइंदवाल साहिब से ही बैसाखी का पर्व मनाना आरंभ हुआ। यहाँ से ही मंजी-प्रथा का आरंभ हुआ, जिससे साथ सिक्ख धर्म का बड़ा प्रचार हुआ। इस स्थान पर बाणी का संग्रह हुआ, जिस कारण यह नगर सिक्खी का धुरा कहलाया। भाई नल्ह भट्ट ने गोइंदवाल साहिब नगर को सचखंड के समान बयान किया है :

गोबिंद वालु गोबिंद पुरी
सम जल्ह तीरि बिपास बनायउ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४००)

हवाले और टिप्पणियाँ :

१. परबतु मेराणु, प्रि. सतिबीर सिंघ, न्यू बुक कंपनी, जलंधर, १९९७, पृष्ठ ४३
२. श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, भाई संतोख सिंघ, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, पृष्ठ १३८९
३. उपरोक्त, पृष्ठ १३९९
४. महिमा प्रकाश (गद्य), (संपादक डॉ. कुलविंदर सिंघ बाजवा), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, जनवरी २००४, पृष्ठ ६७
५. श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, भाई संतोख सिंघ, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, पृष्ठ १३९२
६. उपरोक्त, पृष्ठ १३९५
७. महिमा प्रकाश (गद्य) (संपादक डॉ. कुलविंदर सिंघ बाजवा), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, जनवरी २००४, पृष्ठ ६७
८. उपरोक्त, पृष्ठ ७३
९. उपरोक्त, पृष्ठ ७४
१०. श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ में (से श्री गुरु अमरदास जी का वृत्तांत), भाई संतोख सिंघ (संपादक डॉ. किरपाल सिंघ), शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २००८, पृष्ठ १८
११. श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, भाई संतोख सिंघ, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, पृष्ठ १३९७
१२. महिमा प्रकाश (गद्य) (संपादक डॉ. कुलविंदर सिंघ बाजवा), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, जनवरी २००४, पृष्ठ ७६
१३. बाउली (बावली) से तात्पर्य ऐसे कुएं से है जिसमें पानी की सतह तक सीढ़ियाँ (सोपानयुक्त) जाती हैं।
१४. श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, भाई संतोख सिंघ, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, पृष्ठ १५४१
१५. महिमा प्रकाश (गद्य), (संपादक डॉ. कुलविंदर सिंघ बाजवा), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, जनवरी २००४, पृष्ठ ८०, ८३
१६. उपरोक्त, पृष्ठ ८५
१७. उपरोक्त, पृष्ठ ८४
१८. महिमा प्रकाश, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, २००३, पृष्ठ १७८
१९. उपरोक्त, पृष्ठ १७८
२०. महिमा प्रकाश (गद्य), (संपादक डॉ. कुलविंदर सिंघ बाजवा), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, जनवरी २००४, पृष्ठ ७७
२१ महान कोश, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, २००६, पृष्ठ ४२७
२२. श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, भाई संतोख सिंघ, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, पृष्ठ २५४२
२३. गुरू कीआं साखियां, सरूप सिंघ कौशिश (संपादक प्यारा सिंघ पद्म), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, मई १९९५, पृष्ठ ४५
२४. उपरोक्त, पृष्ठ ६८, ६९

श्री गुरु अमरदास जी की बाणी 'पटी' : भाव-प्रगास

-डॉ. चमकौर सिंघ*

रागु आसा महला ३ पटी

आसा राग में तीसरे पातशाह की गुरमुखी अक्षरों पर आधारित बाणी— 'पटी'।

ੴ सतिगुर प्रसादि ।।

समस्त ब्रह्मांडीय प्रसार का सृजक, संचालक-पालक और सृजना-चक्कर की निरंतरता के लिए विनाशक, अपने में विलयकर्ता वाहिगुरु एक है। ब्रह्मांडीय बादशाहत अथवा अकाली पातशाही का वह सर्वसमर्थ सच्चा पातशाह, जीवन के सत्य का प्रगास, सच्चे गुरु के माध्यम से मेहरबान होता है अर्थात् वाहिगुरु अपने गुरु रूप के माध्यम से अपने मूल ज्योति-स्वरूप के साथ जोड़ कर हमारे जीवन को संवारता-सफल करता है।

इस पवित्र बाणी का नाम 'पटी' है, जो तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी द्वारा आसा राग में उच्चारण की गई है। 'पटी' का अर्थ अक्षर लिखने वाली तख़्ती या फट्टी होता है, जिस पर जिज्ञासु शिक्षार्थी द्वारा गुरमुखी अक्षरमाला सहित गुरमुखी अंकमाला के प्राथमिक प्रशिक्षण-पढ़ाई के लिए लिखावट/ अक्षरकारी का अभ्यास किया जाता है। शुरू में अध्यापक (पांधा) द्वारा तख्ती पर रेखाचित्र (Graphic) बना कर शिक्षार्थी का अभ्यास करवाया जाता था। गुरमुखी अक्षरमाला के पैंतीस अक्षरों के साथ गुरमुखी अंकों (१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०) का अभ्यास भी तख्ती पर लिखवा कर करवाया जाता था। आजकल यह लेखन-अभ्यास, कापियों-नोटबुक्स पर करवाया जाता है। यहाँ 'पटी' शीर्षक, एक विशेष बाणी-रूप (काव्य-रूप) का सूचक है, जिसमें गुरमुखी अक्षरों के आधार पर यह 'पटी' बाणी उच्चारण की गई है। इस बाणी में शुष्क, अधूरे और दिशाहीन पुस्तकीय ज्ञान पर चोट करते हुए आत्मिक ज्ञान के साथ जुड़ने और उच्च चरित्र के धारक बनने की प्रेरणा की गई है।

इस पवित्र बाणी 'पटी' में गुरु (रूहानी और सांसारिक मार्गदर्शक, सर्वश्रेष्ठ अध्यापक) द्वारा सफल जीवन जीने के लिए जिज्ञासु के मन-मस्तक की तख्ती पर रेखा-चित्र बना कर जीवनमुखी रहस्य समझाया/ सिखाया गया है। दिलचस्प बात है कि यह सारी बाणी शिक्षार्थियों की जगह अध्यापक वर्ग को झकझोरने की तरफ केन्द्रित है और इसमें शिक्षादाता वर्ग (अध्यापकों, लेखकों, विद्वानों, पुजारियों,

*पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्ट्डीज़ इन सिक्खिज़म, बहादरगढ़ (पटियाला)।

प्रचारकों, कथाकारों आदि) को पहले ख़ुद विशुद्ध जीवन जीने वाली पढ़ाई/सिखलाई हासिल करने के लिए नेतृत्व प्रदान करते हुए सख़्त ताड़ना की गई है। एक विश्लेषक मार्गदर्शक के रूप में गुरु जी, उपरोक्त वर्ग में फैले अहं, अज्ञान, अल्प-ज्ञान, असंवेदनशील एहसासों, अव्यावहारिक विश्वासों और भ्रष्ट अभ्यासों पर चोट करते हुए बेबाकी के साथ उनकी कमज़ोरियों की निशानदेही करते हैं। 'पटी' बाणी में गुरमुखी अक्षरों के हवाले से रूहानी और नैतिक दिशा-निर्देश वाले रेखाचित्र बना कर अध्यापकों, लेखकों, विद्वानों, पुजारियों, प्रचारकों, कथाकारों को अपने 'ज्ञान' अथवा 'विद्वता' का अहं छोड़ कर अपने अधूरे ज्ञान और अनैतिक व्यवहारों-अभ्यासों को दुरुस्त करने की ताकीद की गई है। इस वर्ग की अंदरूनी आत्मिक संवेदना को झकझोरते हुए आकांक्षा की गई है कि यह वर्ग अपने आचार, व्यवहार और किरदार को विशुद्ध बना कर विद्यार्थियों-जिज्ञास5ुओं के लिए आदर्श (Ideal/ Role Model) बन कर कार्यशील हो।

यह 'पटी' बाणी राग आसा में रूपबद्ध हुई है। संगीत-शास्त्र में राग, सुर-ताल-लय की एक विशेष प्रकार की योजनाबद्ध सांगीतिक गायन-विधि है। इसमें ख़ास सुरों को एक ख़ास अंदाज़ में तरतीबबद्ध, तालबद्ध, लयबद्ध कर, तैयार हुई सांगीतिक ध्वनि-रचना, राग का रूप ग्रहण करती है। विभिन्न प्रकारी सुरों की विभिन्न प्रकारी तरतीब विभिन्न रागों को जन्म देती है, जो बहुप्रकारी रागों का सुखेन अनुभव करा कर श्रोता के मनोभाव को आनंदित और आश्चर्यचकित करते हैं। इन रागों की तासीर और मनोवैज्ञानिक प्रभाव अलग-अलग होते हैं, जो प्रत्येक राग के विलक्षण स्वभाव (प्रकृति) को तय करते हैं। इस तरह राग, सुर-संगीत संसार का बहुरंगी-बहुभांतीय परिचालन है।

आसा राग, आशावादी और उत्साहवर्धक रुचियों/ मनोभाव को जगाने वाला राग है, जो मानव-मन में चढ़दी कला (आशवाद) के भाव का सहजता से संचार कर नया कर्मशील जीवन जीने की तरफ अग्रसर रहने के लिए प्रेरित करता है। इस राग के नामकरण को सामने रखते हुए कईयों ने इसे आसाम देश के साथ जोड़ा है, मगर वास्तव में यह पंजाब का देसी राग है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की राग-तरतीब में इस राग का चौथा क्रम है। श्री गुरु नानक साहिब द्वारा उच्चारण की गई 'पटी लिखी' बाणी भी इसी राग में रूपबद्ध हुई है।

कोशों में 'महला' अरबी-फ़ारसी भाषाई परंपरा से सम्बन्धित शब्द बताया गया है, जिसका अर्थ है— हलूल (उतरने) की जगह, ठहरने की जगह, स्थान या ठिकाना, शरीर आदि। सिक्ख परंपरा में 'महला' शब्द गुरु-शरीर का सूचक है, जहाँ गुरु-ज्योति हलूल करती अर्थात् विराजमान होती है। गुरु-ज्योति ने

दस अलग-अलग गुरु-शरीरों (महला) में हलूल (उतारा) किया है। शरीर चाहे अलग-अलग थे परन्तु गुरु-ज्योति एक ही थी, जिसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र बाणी में 'नानक' पद के साथ सांकेतिक किया गया है। ध्यान रहे, 'नानक' गुरु-ज्योति एक थी, शरीर दस हुए हैं अर्थात् पातशाहियाँ दस हुई हैं। अत: 'नानक' दस नहीं हैं, एक ही है।

इस 'पटी' बाणी के शीर्षक में 'महला' के साथ दर्ज '३' अंक, संख्या-सूचक की जगह 'नानक गुरु-ज्योति' के धारक गुरु-शरीर की कालगत तरतीब का सूचक है। इसी लिए सिक्ख परंपरा में इस अंक का उच्चारण तीन नहीं, बल्कि 'तीजा' (तीसरा) है। यहाँ पर 'महला ३' का अर्थ है— तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी, जिन्होंने अपनी बाणी 'नानक' नाम तले उच्चारण की।

अंक-प्रबंध की दृष्टि से इस बाणी के अंतिम बंद के आखिर में दिए अंक-संकेतों से तात्पर्य है कि 'पटी' शीर्षक के अंतर्गत कुल '२' बाणियां हैं— एक श्री गुरु नानक देव जी 'महला १' की और दूसरी श्री गुरु अमरदास जी 'महला ३' की। अंक '१' और '१८' का तात्पर्य यहाँ पर यह है कि श्री गुरु अमरदास जी द्वारा 'पटी' शीर्षकाधीन उच्चारण की गई बाणी की संख्या एक है, जिसमें (दो-दो पंक्ति के) कुल १८ बंद हैं।

मूल पाठ एवं भाव-प्रगास

अयो अंङै[1] सभु जगु आइआ
काखै घंङै[2] कालु भइआ॥
रीरी लली[3] पाप कमाणे
पड़ि अवगण गुण वीसरिआ॥१॥

अयो अंङै अक्षरों का सबक!

यह जो सारा जगत आया (पैदा हुआ) है;

काखै घंङै अक्षरों का सबक!

वह (सब पैदा होते ही) काल के अधीन आ गया है।

रीरी लली अक्षरों का सबक!

लोग गुणविहीन पढ़ाई पढ़ (सीख) कर अवगुणों में पड़ गए तो गुण भूल गए और उन्होंने पाप कमाना शुरू कर दिया।

मन ऐसा लेखा तूं की पड़िआ॥
लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ॥१॥रहाउ॥

हे मेरे मन! तूने ऐसा हिसाब-किताब किसलिए पढ़ा है, जब अपने कर्मों का लेखा देना तेरे सिर पर खड़ा रह रहा है।

सिधंङाइऐं[4] सिमरहि नाही
नंनै ना तुधु नामु लइआ॥
छछै छीजहि अहिनिसि मूड़े
किउ छूटहि जमि पाकड़िआ॥२॥

सिधंङाइऐ (विद्या पढ़ाने और उपदेश देने वाले अंतर-दृष्टि द्वारा पहले अपने मन को आशीष दें/ समझाएं या आत्म-प्रेरणा दें!)

ऐ मेरे मन! सब शरीरों में प्रकाशमान ੴ का तू सिमरन नहीं करता।

नना अक्षर का सबक!

न तूने कभी उस ੴ के नाम का

सिमरन किया है, अर्थात् उस वाहिगुरु को ध्यान में लाना तो तूने सीखा ही नहीं।

छछै अक्षर का सबक!

ऐ समझहीन अध्यापक! तू दिन-रात शारीरिक और आत्मिक पक्ष से विहीन/ बलहीन होता जा रहा है; जन्म-मरण (आवागमन) की पकड़ (जकड़न) में से कैसे छूटेगा?

बबै बूझहि नाही मूड़े
भरमि भुले तेरा जनमु गइआ।।
अणहोदा नाउ धराइओ पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ।।३।।

बबै अक्षर का सबक!

ऐ समझहीन अध्यापक! तू यह (क्यों) नहीं समझ रहा कि भ्रम में भूल कर तेरा अपना जीवन बेकार बीत (बर्बाद) रहा है। तूने तो यूं ही बेवजह ही अपना नाम पांधा (अर्थात् अध्यापक, प्रचारक, विद्वान, ज्ञानी, कथाकार, उपदेशक) रखवाया हुआ है और दूसरों (विद्यार्थियों/ जिज्ञासुओं) को पढ़ाने-उपदेश देने का जिम्मा (ठेका) तूने अपने सिर ले रखा है।

जजै जोति हिरि लई तेरी मूड़े
अंति गइआ पछुतावहिगा।।
एकु सबदु तूं चीनहि नाही
फिरि फिरि जूनी आवहिगा।।४।।

जजै अक्षर का सबक!

ऐ समझहीन विद्वान! विद्वता के अभिमान ने तेरी ज्ञान-ज्योति (अक्ल) छीन ली है। अंत में जाते समय तू (विद्वता के घमंड में बिताए नाम-विहीन जीवन के बेकार चले जाने पर बहुत पछताएगा!

एक अकाल पुरख वाहिगुरु के नाम-संदेश (धुर की बाणी) को तूने अपनी अंतरात्मा में खोजा-विचारा ही नहीं, इसलिए बार- बार जन्म-मरण के चक्कर में आएगा।

तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु पंडित
अवरा नो न सिखालि बिखिआ।।
पहिला फाहा पइआ पाधे
पिछो दे गलि चाटड़िआ।।५।।

ऐ 'विद्वान' सज्जन (पंडित)! तेरे अपने सिर पर जो (शब्द-विहीन जीवन-विधि का) लेखा लिखा हुआ है, पहले उसे पढ़ अर्थात् अंतरदर्शन कर! अन्य (जिज्ञासु)-जन को विषय-विकारों वाली ज़हरीली-भ्रष्ट जीवन-विधि का प्रशिक्षण मत दे!

ऐ शिक्षादाता अध्यापक/ उस्ताद! पहले तो तेरे अपने गले में नाम-विहीन विद्या का फंदा पड़ा हुआ है। बाद में वही तू अपने शिक्षार्थियों के गले में डाल देता है!

ससै संजमु गइओ मूड़े
एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ।।
साई पुत्री जजमानॅ की सा तेरी
एतु धानि खाधै तेरा जनमु गइआ।।६।।

ससै अक्षर का सबक!

ऐ समझहीन पुजारी सज्जन (पंडित)! तेरा अपना आत्मनियंत्रण (संयम) वाला

मर्यादापूर्ण जीवन तो उसी समय ही ख़त्म हो गया, जब तूने एक गलत जगह से दान (पूजा का धान) ले लिया।

वो यह कि जैसी तेरे यजमान की पुत्री है, वो तेरी भी पुत्री ही है। ऐसे स्थान से पूजा का धान खाने के कारण तेरा जीवन व्यर्थ चला गया।

मंमै मति हिरि लई तेरी
मूड़े हउमै वडा पइआ।।
अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ
माइआ का मुहताजु भइआ।।७।।

मंमै अक्षर का सबक!

ऐ बुद्धिहीन विद्यादाता! विद्वता के घमंड के कारण तेरे अंदर अहं का ऐसा बड़ा रोग पैदा हो गया है, जिसने तेरी बुद्धि अक्ल छीन ली (मत मार दी) है। तूने अपने अंत:करण में बसते मूल प्राणतत्व अकाल पुरख वाहिगुरु को पहचाना ही नहीं, बल्कि भ्रम-ज्ञान (विद्वता की घमंडी चकाचौंध) का गुलाम होकर रह गया है।

ककै कामि क्रोधि भरमिओहु
मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ।।
पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि
विणु बूझे तूं डूबि मुआ।।८।।

ककै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख विद्यादाता (पंडित/ पांधा) ! तू काम, क्रोध वाली विकारी जीवन-शैली में फंस गया है और दुनियावी मोह-ममता में खचित होने के कारण जीवन को हरा-भरा करने (विकसित करने) वाला हरि वाहिगुरु तुझे भूल गया है।

तू शास्त्रों (धर्म-ग्रंथों) को पढ़ता-विचारता तो बहुत है और ऊँची आवाज में लोगों को सुनाता भी है, मगर इनकी शिक्षा को समझे बिना तू ख़ुद ही विकारों में डूब कर मर रहा है।

ततै तामसि जलिओहु मूड़े
थथै थान्ं भरिसटु होआ।।
घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े
ददै दानु न तुधु लइआ।।९।।

ततै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख प्रचारक सज्जन! तू तमोगुणी विकारी जीवन-शैली में ग्रसित होकर जल रहा है।

थथै अक्षर का सबक!

तू अपनी ज्ञानदाता प्रचारक अर्थात् मार्गदर्शक वाली पदवी (जगह) से गिर कर भ्रष्ट हो गया है।

घघै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख पुजारी/ उपदेशक सज्जन! तू घर-घर (दर-दर दान मांगता हुआ) भटक रहा है।

ददै अक्षर का सबक!

दातें बाँटने वाले दाता के नाम का दान तो तूने कभी लिया (माँगा) ही नहीं।

पपै पारि न पवही मूड़े
परपंचि तूं पलचि रहिआ।।
सचै आपि खुआइओहु मूड़े

इहु सिरि तेरै लेखु पइआ ।।१०।।

पपै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख विद्यादाता! तू दुनियावी आडंबरों में इतना (कितना) उलझ/ खचित हो रहा है कि इस भवजल संसार से तो तू ख़ुद भी पार नहीं हो सकता।

ऐ मूर्ख विद्यादाता! किए गए कुकर्मों का ऐसा लेखा तेरे सिर पर वरत गया है कि न्यायकारी सच्चे पातशाह ने स्वयं ही (तेरे कर्मों की सज़ा के रूप में) तुझे भुलाया हुआ है।

भभै भवजलि डुबोहु मूड़े
माइआ विचि गलतानु भइआ ।।
गुर परसादी एको जाणै
एक घड़ी महि पारि पइआ ।।११।।

भभै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख विद्यादाता! तू विषय-विकारों के भवजल संसार में डूबता जा रहा है और भ्रम-ज्ञान में बुरी तरह से खचित हुआ है।

गुरु-कृपा द्वारा यदि तू वाहिगुरु को जान ले तो यह भवजल संसार, तू एक पल में ही पार हो जाएगा।

ववै वारी आईआ मूड़े
वासुदेउ तुधु वीसरिआ ।।
एह वेला न लहसहि मूड़े
फिरि तूं जम कै वसि पइआ ।।१२।।

ववै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख विद्यादाता! वाहिगुरु से मिलाप की जीवन रूपी बारी (ज़िंदगी) तुझे मिली हुई है, जबकि समस्त वनस्पती में बसा हुआ वह वासदेउ वाहिगुरु तुझे भूला हुआ है।

ऐ मूर्ख विद्यादाता! अगर तू यह समय नहीं संभालेगा, फिर तो तू यम (आवागमन) के वश में पड़ा ही समझ।

झझै कदे न झूरहि मूड़े
सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा ।।
सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई
निगुरे का है नाउ बुरा ।।१३।।

झझै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख विद्यादाता! तू एक पल के लिए सतिगुरु का उपदेश सुन कर तो देख, फिर कभी दुखी नहीं होगा।

मार्गदर्शन के बिना वाले (निगुरे) का तो नाम लेना ही बुरा होता है, जबकि सच्चे गुरु के बिना तेरा अन्य कोई मार्गदर्शक है ही नहीं।

धधै धावत वरजि रखु मूड़े
अंतरि तेरै निधानु पइआ ।।
गुरमुखि होवहि ता हरि रसु पीवहि
जुगा जुगंतरि खाहि पइआ ।।१४।।

धधै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख विद्यादाता! तू विषय-विकारों की तरफ अपनी दौड़-भाग को रोक कर रख। तेरे अपने अंदर ही वाहिगुरु के नाम (अमृत रस) का ख़ज़ाना भरा पड़ा है।

अगर तू गुरमुख हो जाये अर्थात् गुरु के अनुसार होकर जीवन जीना शुरू कर दे तो तू जीवन को हरा-भरा करने वाले हरि वाहिगुरु के

नाम के अमृत-रस को पीना शुरू कर देगा और तू फिर उस अनंत रस को युगों-युगों तक पीते-चखते रहना (यह ख़ज़ाना ख़त्म नहीं होगा)।

गगै गोबिदु चिति करि मूड़े
गली किनै न पाइआ ।।
गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े
पिछले गुनह सभ बखसि लइआ ।।१५ ।।

गगै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख विद्यादाता! धरती के पालक गोबिंद वाहिगुरु को दिल में याद कर! (यह भी याद रख कि) उसे किसी ने बातों (फ़िज़ूल बहसबाजी) द्वारा हासिल नहीं किया।

ऐ मूर्ख विद्यादाता! अगर तू गुरु के चरणों (पद-चिन्हों/ मार्गदर्शक उपदेशों) को अपने हृदय में बसा ले, तो तू अपने पिछले सभी गुनाह क्षमा करवा लेगा।

हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े
ता सदा सुखु होई ।।
मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै
विणु सतिगुर मुकति न होई ।।१६ ।।

हाहै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख विद्यादाता! तू जीवन को हरा-भरा बनाने वाले हरि वाहिगुरु की कथा (शिक्षा-विचार) को अच्छी तरह से समझ कर अनुभव कर ले तो तुझे सदा सुख प्राप्त होगा।

मगर मनमुख होकर (लोगों को लूटने की मंशा के साथ) जितनी भी विद्या पढ़ेगा, उतना ही दुख पहुंचेगा। सतिगुरु (पद-चिन्हों/ उपदेशों पर चले) बिना दुखों अर्थात् भ्रष्ट-विकारी जीवन से मुक्ति नहीं मिलेगी।

रारै रामु चिति करि मूड़े
हिरदै जिन्ह कै रवि रहिआ ।।
गुर परसादी जिन्ही रामु पछाता
निरगुण रामु तिन्ही बूझि लहिआ ।।१७ ।।

रारै अक्षर का सबक!

ऐ मूर्ख विद्यादाता! कण-कण में रमे हुए जीवन-दाता वाहिगुरु को हृदय में याद कर! जिनके हृदय में वो जीवन-दाता राम धड़क रहा है और जिन्होंने गुरु-कृपा द्वारा (अपने अंदर-बाहर प्रत्येक जगह) उस रमे हुए व्यापक राम को पहचान लिया है, उन्होंने उस निर्गुण राम को समझ कर अनुभव कर लिया है।

तेरा अंतु न जाई लखिआ
अकथु न जाई हरि कथिआ ।।
नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ
तिन्ह का लेखा निबड़िआ ।।१८ ।।१ ।।२ ।।

हे वाहिगुरु! हम तेरे अंत का पता नहीं लगा सकते। जीवन को हरा-भरा बनाने वाले अकथ्य वाहिगुरु! तुम्हारे गुणी-निधान स्वरूप का कथन नहीं किया जा सकता।

हे नानक! जिन्हें सतिगुरु मिल गया है, (गुरु-उपदेशों को कमाने से) उनका हिसाब-किताब (लेखा) निपट गया है।

श्री गुरु अमरदास जी तथा उनके परम सेवक भाई पारो परमहंस

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

जीवन की धारा कब बदलनी होती है इसकी कोई उम्र निश्चित नहीं होती। अकाल पुरख की कब क्या रज़ा हो और वह मनुष्य को कब क्या जिम्मेदारी सौंप दे, यह वही जानता है। साहिब श्री गुरु अमरदास जी तीसरी पातशाही की जीवन-कथा भी इसी प्रकार की है। ६१ वर्ष की उम्र तक वैष्णव जीवन जीने वाले श्री गुरु अमरदास जी ने ११ वर्ष गुरु-सेवा की। लगभग ७३ वर्ष की आयु में तीसरे गुरु के रूप में उनको गुरुआई मिली और २२ वर्ष तक सिक्ख पंथ का नेतृत्व कर सिक्ख-धर्म को सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावशाली आंदोलन बना डाला।

जन्म एवं पूर्व जीवन

भाई कान्ह सिंघ नाभा और ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी का प्रकाश (जन्म) वैशाख सुदी १४ (८ ज्येष्ठ), संवत् १५३६ यानी ५ मई,१४७९ ई. को गाँव बासरके में हुआ। आजकल यह गांव श्री अमृतसर साहिब जिले में है। गुरु जी के पिता का नाम श्री तेजभान जी और माता का नाम माता लखमी जी (सुलक्खणी) जी था। २३ वर्ष की आयु में गुरु साहिब का विवाह माता रामो जी (राम कौर जी) के साथ हुआ। आपके घर दो पुत्र— बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी एवं दो पुत्रियाँ— बीबी दानी जी और बीबी भानी जी पैदा हुईं। बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी के साथ हुआ, जो बाद में चौथी पातशाही श्री गुरु रामदास जी के रूप में प्रसिद्ध हुए।

चार भाइयों में सबसे बड़े श्री गुरु अमरदास जी अपने पिता-पुरखी (पैतृक) पेशे व्यापार और खेती में लगे रहते। आध्यात्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण आप अपने काम-काज में से लोक-सेवा के लिए भी समय निकाल लेते। व्यापार के लिए फेरी लगाते समय आप मीठे स्वर में प्रभु-भजन में लगे रहते। लोग बड़ी श्रद्धा से आपको 'भक्त अमरदास जी' कहा करते थे।

आप प्रत्येक वर्ष वैष्णो देवी और हरिद्वार की तीर्थ-यात्रा पर जाया करते थे। कहते हैं कि आपने २० बार हरिद्वार में गंगा-स्नान के लिए पैदल फेरी लगाई। अपनी अंतिम फेरी में श्री गुरु अमरदास जी की भेंट पंडित दुर्गादत्त

**१/३३८ स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, मोबाइल -- ६२३९६-०१६४१*

सामुद्रिक से हुई, जिन्होंने सहज भाव से श्री गुरु अमरदास जी से पूछ लिया कि ''आपका गुरु कौन है ?'' आपने कहा, ''मेरा तो कोई गुरु नहीं है।'' पंडित जी ने पश्चाताप करते हुए कहा कि ''इतना समय 'निगुरे' के साथ रहकर मेरा जीवन भ्रष्ट हो गया।'' इस घटना ने श्री गुरु अमरदास जी को इतना प्रभावित किया कि वे रात-दिन सतिगुरु की खोज में लग गये। मन में ऐसा तीव्र वैराग्य उत्पन्न हुआ कि सारे काम-काज छूट गये।

गुरु-चरणों में आगमन

दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी की पुत्री बीबी अमरो जी आपके भतीजे के साथ ब्याही थी। एक दिन सुबह-सुबह अमृत बेला में बीबी अमरो जी श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित एक शबद प्रेम से गा रही थीं :

करणी कागदु मनु मसवाणी
बुरा भला दुइ लेख पए ।।...

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९९०)

शबद का श्री गुरु अमरदास जी पर इतना गहरा असर हुआ कि झटपट पुत्रवधू से श्री गुरु अंगद देव जी का पता पूछा और गुरु-चरणों में चले आये।

निरन्तर गुरु-सेवा

श्री गुरु अमरदास जी ने ६१-६२ वर्ष की आयु में अपने से २५ वर्ष छोटे और रिश्ते में समधी लगने वाले श्री गुरु अंगद देव जी को गुरु धारण किया और गुरु-सेवा को ही अपनी दिनचर्या बना लिया। आप रात-दिन सेवा करते। आप कलश लेते और रोज़ लगभग नौ किलोमीटर दूर पैदल जाकर ब्यास नदी से श्री गुरु अंगद देव जी के स्नान के लिए जल लेकर आते।

गुरुआई-प्राप्ति

१२ वर्षों तक लगातार निष्काम सेवा करने के पश्चात् श्री गुरु अंगद देव जी ने आपको गुरुआई के पूर्णत: योग्य समझ कर आपको गुरुआई सौंप दी।

गोइंदवाल साहिब की स्थापना एवं सामाजिक क्रांति का नेतृत्व

गोइंदा नामक खत्रिय द्वारा नया नगर आबाद करने की फरियाद पाकर श्री गुरु अंगद देव जी ने आपको आदेश किया कि ब्यास नदी के तट पर नया नगर बसाओ और सिक्ख धर्म का प्रचार करो। इस प्रकार सन् १५४९ ई. में गोइंदवाल साहिब की स्थापना हुई। श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु २२ प्रचार केंद्र स्थापित किये, जिन्हें 'मंजियाँ' कहा गया।

गुरु जी ने समाज-सुधार की ओर विशेष ध्यान दिया। छुआछूत, भेदभाव, जात-पांत को खत्म करने के लिए साझी 'बावली' बनाई, जहाँ सभी बिना ऊँच-नीच के स्नान कर सकते थे। इसी प्रकार लंगर में भी सभी के

लिए एक 'पंगत' में बैठ कर भोजन करना अनिवार्य कर दिया। जब अकबर बादशाह गोइंदवाल साहिब आया था तब उसने भी पंगत में बैठ कर ही लंगर छका था। गुरु जी ने सती-प्रथा को भी विशेष रूप से समाप्त करवाया।

श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी पुत्री बीबी भानी जी का विवाह एक अत्यंत समर्पित सिक्ख भाई जेठा जी के साथ किया। बाद में भाई जेठा जी की सेवा और समर्पण से प्रभावित होकर गुरु जी ने गुरुगद्दी भाई जेठा जी को सौंप दी। भाई जेठा जी श्री गुरु रामदास जी के रूप में विख्यात हुए। श्री गुरु अमरदास जी की प्रेरणा और आज्ञा को शिरोधार्य कर चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने 'अमृतसर' सरोवर और 'अमृतसर' नगर की स्थापना की।

गुरु जी की बाणी

श्री गुरु अमरदास जी की सारी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'महला ३' के अन्तर्गत संकलित है। 'पटी', 'गूजरी की वार', 'अलाहणीआं', 'सूही की वार', 'सतवारा', 'अनंदु साहिब', 'रामकली की वार', 'मारू की वार' आदि बाणियां प्रमुख हैं।

गुरु जी ने 'गुरमति' के सिद्धांतों, अपने मानवीय समता के दृष्टिकोण एवं आध्यात्मिक अनुभव को बड़े सरल ढंग से प्रस्तुत किया है। आप जी की बाणी में प्रेम-भक्ति का स्वर प्रधान है :

मिलु मेरे प्रीतमा जीउ
तुधु बिनु खरी निमाणी ।।
मै नैणी नीद न आवै जीउ
भावै अंनु न पाणी ।।
पाणी अंनु न भावै मरीऐ हावै
बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २४४)

अर्थात् हे मेरे प्रियतम ! मुझसे आकर मिलो, मैं तुम बिन बेचारी-सी खड़ी हूँ। मेरी आँखों में नींद नहीं आती और अन्न-जल मुझे अच्छा नहीं लगता। अन्न-जल भाता नहीं और आह से मर रही हूँ। प्रियतम बिन सुख कैसे पाया जा सकता है?

श्री गुरु अमरदास जी की बाणी का दूसरा प्रमुख पक्ष 'वैराग्य' है। आपका वैराग्य 'संसार-त्याग' में नहीं है, बल्कि संसार में रहते हुए, कर्म करते हुए कर्मकांड, पाखंड, कुरीतियों आदि से निर्लेप रहने की प्रेरणा दी गई है :

मन रे ग्रिह ही माहि उदासु ।।
सचु संजमु करणी सो करे
गुरमुखि होइ परगासु ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २६)

अर्थात् हे मन ! गृह में रह कर ही संन्यासी बने रहो । सत्य एवं संयम से कार्य

करो और गुरमुख बने रहो! इसी से हृदय में प्रकाश होगा। गुरु जी की भाषा मूलतः पंजाबी है, परंतु उसमें सधुक्कड़ी, अरबी-फारसी आदि के शब्द भी घुले-मिले हैं। अलंकारों-बिम्बों-प्रतीकों का सहज और सुंदर प्रयोग हुआ है :

चात्रिक तू न जाणही
किआ तुधु विचि तिखा है
कितु पीतै तिख जाइ ॥
दूजै भाइ भरंमिआ
अंम्रित जलु पलै न पाइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२८४)

अर्थात् चातक तू नहीं जानता कि तुझमें क्या प्यास है और क्या पीकर यह प्यास जायेगी! तू तो दूसरे भावों में भरमाया हुआ है, अमृत को तो पाने की कोशिश ही नहीं करता।

गुरु जी की सबसे लोकप्रिय बाणी 'अनंदु साहिब' है। इसकी कुल ४० पउड़ियां हैं। गुरु जी के आध्यात्मिक चिंतन का निचोड़ इस बाणी में है।

सुधारवादी, योग्य प्रबंधक एवं तेजस्वी व्यक्तित्व वाले साहिब श्री गुरु अमरदास जी ९५ वर्ष की आयु में सन् १५७४ ई. में गोइंदवाल साहिब में ज्योति-जोत समाये।

तीसरे पातशाह के अनन्य सिक्ख : भाई पारो

गुरु के प्रति समर्पण और गुरु की कृपा से किस प्रकार सिक्ख का जीवन ही सफल नहीं होता, बल्कि सिक्ख की अनेक पीढ़ियों तक का उद्धार हो जाता है। इसकी बेहतरीन मिसाल हैं तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के अनन्य सिक्ख भाई पारो।

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन

भाई पारो ज़िला कपूरथला के एक गांव डल्ला के निवासी थे। आपका संबंध खत्री (क्षत्रिय) बिरादरी के जुल्का गोत्र से था। भाई जी ने द्वितीय पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी से सिक्खी की दात प्राप्त की। आपकी गुरु-भक्ति और चारित्रिक पवित्रता बहुत प्रसिद्ध हुई।

द्वितीय पातशाह के ज्योति-जोत समाने के बाद भाई पारो श्री गुरु अमरदास जी की सेवा में आ गये।

प्रचलित है कि भाई पारो नित्य अपने घोड़े पर सवार होकर अपने गांव डल्ला से ब्यास नदी को पार कर श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन के लिए श्री गोइंदवाल साहिब आते थे।

सिक्खी के महान प्रचारक के रूप में

भाई पारो उच्च कोटि के गुरु-भक्त तो थे ही, साथ ही साथ, उनका व्यक्तित्व भी अत्यंत पवित्र था। भाई जी से प्रेरणा प्राप्त करके अनेक प्राणियों ने सिक्खी को अंगीकार किया। जब श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए २२ मंजियों की स्थापना की, तब गुरु जी ने भाई पारो के समर्पण को देखकर

उन्हें भी एक 'मंजी' सौंप कर प्रचारक नियुक्त किया।

भाई अलाहयार ख़ान का प्रसंग

भाई पारो के प्रभावशाली समर्पित व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक मुसलमान भी गुरु के सिक्ख बन गये। इस संदर्भ में भाई अलाहयार ख़ान की साखी बड़ी महत्वपूर्ण है।

भाई अलाहयार खान दिल्ली में घोड़ों का व्यापार किया करता था। कहा जाता है कि एक बार यह काबुल से पांच सौ नये घोड़े खरीदकर दिल्ली लौट रहा था। ब्यास नदी में बाढ़ के कारण इसे गोइंदवाल साहिब के घाट पर रुकना पड़ गया। ऐसी बाढ़ की हालत में घोड़े सुरक्षित नदी के पार ले जाना संभव नहीं था। ब्यास नदी के किनारे खड़े होकर उसने देखा कि नदी के उस पार से एक व्यक्ति घोड़े पर सवार होकर नदी पार करता हुआ आ रहा है। उस व्यक्ति ने घोड़े सहित नदी पार की और चला गया।

भाई अलाहयार ख़ान यह देखकर बहुत हैरान हुआ। वह उस व्यक्ति के बारे में सोच ही रहा था कि वह व्यक्ति फिर आया और घोड़े सहित नदी पार करने की तैयारी करने लगा।

भाई अलाहयार ख़ान से रहा नहीं गया। उसने उस व्यक्ति से इतना ख़तरा उठाने का कारण पूछा।

ये व्यक्ति दरअसल डल्ला गांव निवासी भाई पारो थे, जो श्री गुरु अमरदास जी के प्रतिदिन दर्शन करने आया करते थे।

भाई पारो ने भाई अलाहयार ख़ान को जवाब दिया कि ''मुझे मेरे गुरु का 'सुरक्षा-कवच' प्राप्त है।'' भाई अलाहयार ख़ान ने उत्सुकता दिखाते हुए गुरु जी के दर्शन करने की इच्छा जताई।

भाई पारो भाई अलाहयार ख़ान को लेकर गोइंदवाल साहिब आ गये। तीसरे पातशाह ने भाई अलाहयार ख़ान को पहली ही नज़र में 'अल्लाह का यार' (अल्लाह का सेवक) बना दिया।

भाई अलाहयार ख़ान ने अपना कारोबार अपने पुत्र के हवाले किया और स्वयं को पूरी तरह से गुरु-घर को समर्पित कर दिया।

भाई अलाहयार ख़ान को भी गुरु जी ने बाईस मंजियों में से एक मंजी प्रदान की और सिक्खी के प्रचार-प्रसार का कार्य सौंपा। भाई जी ने अपना सारा जीवन सिक्खी के प्रचार-प्रसार में लगा दिया।

वृद्धावस्था में भाई अलाहयार ख़ान भी डल्ला गांव में भाई पारो के पास ही आ गये थे। यहीं पर इनका देहान्त हुआ और यहीं पर इनका स्मारक भी है।

अनन्य गुरु-भक्ति

भाई पारो की अनन्य भक्ति अद्भुत थी। आपकी सेवा-साधना से प्रभावित होकर श्री

गुरु अमरदास जी ने आपको 'परमहंस' कह कर सम्मान दिया।

भाई गुरदास जी ने अपनी ११वीं वार में लिखा है :

पारो जुलका परमहंसु
पूरै सतिगुर किरपा धारी।(वार ११:१५)

इस संदर्भ में प्रसिद्ध कथाकार ज्ञानी पिंदरपाल सिंघ अपने एक व्याख्यान में ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि भाई पारो की अनन्य भक्ति से संतुष्ट होकर श्री गुरु अमरदास जी ने उन्हें कहा कि "अब आप मेरा स्वरूप हो गये हो। क्यों न आपको गुरुआई ही प्रदान कर दी जाये!"

यह सुनते ही भाई पारो त्राहि-त्राहि कर उठे और गुरु-चरणों में ढह गये। बोले, "अगर आप मुझ पर तुष्ट हुए हो तो मुझे गुरसिक्खी प्रदान करें! मुझे आपकी गद्दी नहीं, आपकी गोद चाहिए!"

इस प्रसंग का वर्णन 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में इस प्रकार हुआ है :

परमहंस मेरो ई रूप।
परम अवसथा महा अनूप।।
बख़शत हौं मैं जग गुरिआई।
करहु उधार लोक समुदाई।।
कर जोरे पारो पग परयो।
त्राहि त्राहि करि बचन उचरयो।।
प्रभू जी गुरसिक्खी मुझि भावै।
गुरिआई सति गुरहिं सुहावै।।
मुझ पर क्रिपा द्रिसटि कहु धरिअहि।
गुरसिक्खी पद बख़शण करिअहि।।

(अंसू ६६)

अंतिम समय

अपना अंत समय आया जान भाई पारो ने अपना सब कुछ दान कर दिया। अपने पास मात्र वह घोड़ा रखा, जिस पर चढ़ कर वे गुरु जी का दर्शन करने जाया करते थे।

यह घोड़ा भाई जी ने गुरु साहिब को भेंट कर दिया। 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में वर्णन है कि यह घोड़ा गुरु जी के अलावा किसी को भी अपनी सवारी नहीं करने देता था।

गुरु-कृपा-सम्पन्न परिवार

प्रिंसिपल सतबीर सिंघ के अनुसार भाई पारो का परिवार बाद में लाहौर जा बसा।

भाई पारो की कई पीढ़ियों को गुरु-घर से प्रेम, आशीर्वाद और सम्मान मिला। इसी वंश के भाई नारायण दास छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ससुर बने। इनकी पुत्री बीबी दमोदरी का अनंद कारज छठम पातशाह के साथ संपन्न हुआ था।

'पांच प्यारों' में से एक भाई दया सिंघ भी इसी वंश में जन्मे थे।

इस प्रकार गुरु जी के प्रति समर्पण और गुरु जी की कृपा से भाई पारो और उनकी अनेक पीढ़ियों का उद्धार हो गया।

महिला सशक्तिकरण में श्री गुरु अमरदास जी का योगदान

*-डॉ. हरप्रीत कौर**

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के समय गोइंदवाल साहिब सिक्खी की तीसरी टकसाल अर्थात् केंद्र बनता है। भाई गुरदास जी ने गोइंदवाल साहिब की अनेकविध गतिविधियों को महसूस करते हुए ''अचरजु खेलु न लखिआ जाई'' के वाक्यानुसार स्पष्ट कर दिया है कि एशिया के इस पूरबी खंड (उत्तरी भारतीय खंड) में गोइंदवाल साहिब एक बहुत बड़ा केंद्र बन गया था। इसमें अगर एक तरफ़ गुरमुखी-गुरबाणी-विद्या के प्रवाह चल रहे थे तो दूसरी तरफ़ 'बावली' (बाउली) के माध्यम से लोगों की 'चौरासी' (छूत-छात, ऊँच-नीच, शुद्ध-अशुद्ध, रंग, नस्ल, स्त्री-पुरुष आदि भेदभाव वाली 'चौरासी') काटी जा रही थी। गोइंदवाल साहिब में ब्राह्मणी समाज की ऊँच-नीच अथवा वर्ण-भेद वाली सदियों पुरानी विचारधारा को एक बहुत बड़ा झटका देने के पश्चात् वर्ण-रहित समाज-निर्माण का नमूना प्रत्यक्ष व अनुप्रयुक्त रूप में सामने आने लगा। गोइंदवाल साहिब में श्री गुरु अमरदास जी के लंगर में ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य— चारों वर्ण और इसी प्रकार अकबर जैसे बादशाह से लेकर गरीब से गरीब श्रद्धालु, सब एक ही पंगत (पंक्ति) में बैठ कर प्रशादा छकते थे। बाउली (बावली) साहिब में भी सभी धर्मों और सभी वर्णों के श्रद्धालु बिना किसी जात-पाँत, रंग-रूप, नस्ल आदि भेदभाव के स्नान करते और जल छकते थे। ब्राह्मणी विचारधारा द्वारा मानव-भिन्नताओं में विभाजित मानव वर्ग को एक होने का गुरु जी ने एहसास करवाया। उन्होंने अपनी बाणी में फरमान किया कि सभी मानव एक समान तत्वों से निर्मित हैं :

माटी एक सगल संसारा।।
बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११२७)

इस सिद्धांत को गुरु जी ने अनुप्रयुक्त रूप से लागू भी किया। उनके सभी जीवन-कार्यों में मानव-समानता ने प्राथमिकता प्राप्त की। जात-पाँत और वर्ण-भेद की भिन्नताओं से गुरु जी ऊपर थे और उन्होंने अन्य धर्मों में से आए श्रद्धालुओं को भी उतना ही प्यार व सम्मान प्रदान किया जिसके वे अधिकारी थे। उदाहरण के लिए अलहयार और भाई बहलोल दोनों इसलाम धर्म से सम्बन्धित थे, जिन्हें गुरु जी ने अपनी कृपा द्वारा सरशार किया।

मानव-स्वतंत्रता के इसी हवाले के साथ

*धार्मिक अध्यापक, गुरु तेग़ बहादर खालसा गर्ल्स कॉलेज, निम्म साहिब आकड़, जिला पटियाला, फ़ोन: ९९१५३ ९५३३२

ही महिला-स्वतंत्रता का प्रश्न भी जुड़ा हुआ था। मैं इस लेख में केवल इसी प्रश्न को सामने रखने की कोशिश कर रही हूँ। इस सम्बंध में गुरु जी की बाणी और इतिहास को आधार बना कर विचाराधीन प्रश्न को समझने की कोशिश करूँगी। इस विषय को गहराई से समझने के लिए तीन भागों में विभाजित किया गया है:

१. तत्कालीन महिला की स्थिति

२. श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में महिला का बिंब और संकल्प

३. ऐतिहासिक संदर्भ

१. तत्कालीन महिला की स्थिति : श्री गुरु अमरदास जी द्वारा महिलाओं स्वतंत्रता के लिए किये अनुप्रयुक्त व सैद्धांतिक कार्यों को पढ़ने से पहले यह जानना ज़रूरी है कि उनके समकालीन समाज में महिलाओं की स्थिति कैसी थी। यह जानने के बाद ही हमें गुरु जी द्वारा किए गए मार्गदर्शन की श्रेष्ठता को समझने में आसानी होगी। महिलाओं की स्थिति समाज में कैसी थी? यह पता करने के लिए तत्कालीन समाज की राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक परिस्थितियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

गुरबाणी ने अपने तत्कालीन हालात की 'कलियुग' के साथ तुलना की है। 'कलियुग' के लक्षण बयान कर श्री गुरु नानक देव जी तत्कालीन समाज और बादशहत का बिम्ब पूरी तरह से खोल देते हैं। गुरबाणी के अनुसार कलियुग में राजा कसाई बन कर लोगों की किरत-कमाई हड़पते हैं और चारों तरफ़ झूठ, भ्रष्टाचार का अंधेरा छाया हुआ है। कहीं भी सत्य, ज्ञान, ईमानदारी, न्याय आदि जीवन-मूल्य दिखाई नहीं देते थे :

कलि काती राजे कासाई
धरमु पंख करि उडरिआ।।
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा
दीसै नाही कह चड़िआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४५)

इस दृश्य का बयान भाई गुरदास जी इस तरह करते हैं :

कलि आई कुते मुही खाजु होइआ मुरदार गुसाई।
राजे पापु कमांवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई।
परजा अंधी गिआन बिनु
कूड़ कुसतु मुखहु आलाई।
चेले साज वजाइदे नचनि गुरु बहुतु बिधि भाई।
चेले बैठनि घरां विचि गुरि उठि घरीं तिनाड़े जाई।
काज़ी होए रिसवती वढी लै कै हकु गवाई।
इसत्री पुरखै दामि हितु भावै आइ किथाऊं जाई।
वरतिआ पापु सभसि जगि मांही।।

(वार १: ३०)

गुरु जी के समकालीन समाज की राजसी, आर्थिक और धार्मिक हालत बहुत कमज़ोर हो चुकी थी। इस हालत का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। सामाजिक तानाबाना पूरी तरह से उलझ गया, जिसने प्रत्येक रिश्ते को प्रभावित किया। समाज इंसानों के परस्पर संबंधों और स्त्री-पुरुष के आपसी व्यवहार द्वारा परखा जाता है। मध्यकालीन पछड़े समाज

ने महिला की ज़िंदगी को बेटी, बहन, पत्नी, माँ आदि के रूप में स्वतंत्र सोचने या कार्य करने के योग्य नहीं समझा। महिला को उसके अधिकारों से वंचित रखा गया। स्वार्थ-भरपूर समाज में स्त्री-पुरुष के आपसी सम्बन्ध भी भाई गुरदास जी के शबदों में "दामि हितु" (वार १:३०) के कारण ही थे, भावनात्मिक प्रेम या स्नेह भरपूर नहीं।

महिला वर्ग से सम्बन्धित समाज में बाल-विवाह, सती की रस्म, विधवा-विवाह निषेध, पर्दा-प्रथा, कन्या को जन्म लेते ही कत्ल करने की प्रवृत्ति आदि बुराइयां प्रचलित थीं। इन बुराइयों के विरुद्ध श्री गुरु नानक देव जी ने सर्वप्रथम आवाज़ बुलंद की। श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री को सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में सम्मानजनक स्थान प्रदान करने के लिए, इसकी महान व श्रेष्ठता को अपनी बाणी के माध्यम से दलील के साथ वर्णित किया। *(सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।। पन्ना ४७३)* इस बुलंद आवाज़ को आगे बढ़ाते हुए श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु अमरदास जी द्वारा व्यावहारिक जीवन में ढालने के लिए ठोस कदम उठाए गए। श्री गुरु अमरदास जी ने इन सभी बुराइयों को दूर करने में महान योगदान दिया। उन्होंने जहां अपनी बाणी में महिलाओं के सम्बंध में बिम्ब, प्रतीक आदि इस्तेमाल कर उनकी उपमा की, वहीं व्यावहारिक जीवन में बहुत-सी सामाजिक और धार्मिक जिम्मेदारियां (मंजियां, पीढ़े आदि) महिलाओं को सौंप कर जीवन के व्यावहारिक क्षेत्र में पहली बार नयी पहलकदमी की।

२. श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में महिला का बिम्ब और संकल्प : सैद्धांतिक रूप से श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी बाणी में ऐसी दार्शनिक धारायें पेश की हैं, जिनमें जीवन के उच्च-मूल्यों, जैसे परमात्मा की प्राप्ति, सत्य का मार्ग आदि को सभी के लिए साझा घोषित किया और व्यावहारिक रूप से रास्ता खोला। दूसरे शबदों में शूद्रों सहित महिलाओं के लिए भी जीवन के उच्च जीवन-मूल्य प्राप्त करने के लिए उतना ही अधिकार है, जितना पुरुषों के पास है। उनकी बाणी में महिला का जो बिम्ब और संकल्प सामने आता है उसे निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत पेश किया जा सकता है :

२.१ ग्रिह ही माहि उदासु
२.२ सुहागिन (सबदि रतीआ सोहागणी)
२.३ धंन जननी
२.४ गुणवंती
२.५ सूहवी
२.६ खरी निमाणी
२.७ एक जोति दुइ मूरती

२.१ गुरु जी ने अपनी बाणी में मुक्ति का मार्ग गृहस्थ को स्वीकार किया है और बताया है कि सबद (शबद) द्वारा घर में ही अर्थात् गृहस्थ में ही सेवा-सिमरन कर, मोह को त्याग कर जीवन का उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है। गृहस्थ में उदास रह कर यदि सत्य और संयम

वाला जीवन बसर किया जाये तो हृदय में आनंद उत्पन्न होता है, मन पर विजय प्राप्त होती है और घर में ही मुक्ति प्राप्त हो जाती है— *''मन रे ग्रिह ही माहि उदासु ।।. . . गुर कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै महि पाइ ।। (पन्ना २६) ''सतगुरु सेवि मोहु परजलै घर ही माहि उदासा ।।'' (पन्ना २९)*

२.२ समकालीन और पारंपरिक समाज ने महिला को दूसरे दर्जे पर रख कर समाज और घर में घटित होने वाले अपशगुनों व दुखदायी घटनाओं का दोषी अक्सर महिला को ही माना और उसे दोहागण (दुहागिन, विधवा) कहा, लेकिन गुरु साहिब ने मन के पीछे चलने वाले सभी लोगों को ही दुहागण कहा, जो आडंबर वाला भेस धारण करते हैं—

''मनमुख करम कमावणे
जिउ दोहागणि तनि सीगारु ।।''(पन्ना ३१)

दूसरी तरफ़ गुरु के पीछे चलने वाले गुरमुख के लिए वे सभी विशेषण इस्तेमाल किए जो एक आदर्श महिला में हो सकते हैं, जैसे 'सदा सोहागणी' (सुहागिन), 'मिठा बोलहि', 'सोभावंती' आदि। गुरु जी के वचन हैं :

गुरमुखि सदा सोहागणी
पिरु राखिआ उर धारि ।।
मिठा बोलहि निवि चलहि
सेजै रवै भतारु ।।
सोभावंती सोहागणी
जिन गुर का हेतु अपारु ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३१)

गुरु जी ने मानव को उपदेश देते हुए और फरमान किया :

सोहागणी करम कमावदीआ
सेई करम करेइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३१)

२.३ गुरु जी ने अपनी बाणी में जन्म देने वाली माँ को धन्य कहा, न कि पारंपरिक समाज की भांति केवल बच्चे पैदा करने वाली कामण। गुरु जी की नज़र में कामण वो है जो वाहिगुरु का दर छोड़ कर 'दूजै भाइ' अहंकारी कार्य करती है। वो माँ धन्य है, वो पिता भी प्रधान है जिनकी संतान अहं त्याग कर सत्य मार्ग पर चलती है— ''धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु ।।'' (पन्ना ३२)

२.४ गुरु जी ने स्त्री-पुरुष को उनकी जाति या उनके लिंग के आधार पर नहीं बाँटा, बल्कि गुणवाची विभाजन किया है। तृष्णाओं कामनाओं को छोड़ने वाली गुणवंती (गुणवान) है, जिसके पास गुण नहीं वह अउगुणवंती (अवगुणधारी) है :

गुणवंती सचु पाइआ त्रिसना तजि विकार ।।
गुर सबदी मनु रंगिआ रसना प्रेम पिआरि ।।. . .
अउगुणवंती गुणु को नही
बहणि न मिलै हदूरि ।।
मनमुखि सबदु न जाणई
अवगणि सो प्रभु दूरि ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३६)

पारंपरिक सत्ता ने महिला को ऊँचा-नीचा उसकी जाति के आधार पर कहा, जैसे

ब्राह्मण जाति की महिला ऊँची और शूद्र जाति की निम्न हो। इसी प्रकार हरमों में रहने वाली रानियाँ ऊँची और उनकी ग़ुलाम बनकर रहने वाली महिलाएं निम्न। गुरु साहिब की नज़र में जिस महिला के पास गुण हैं वह ऊँची है और निम्न वो है जिसके पास गुण नहीं।

२.५ सामाजिक या सांस्कृतिक जीवन में शृंगार करने वाली सुंदर और नौजवान महिला को 'सूहवी' कह दिया जाता है। इस रूपक को लेकर गुरु साहिब ने उसे अपना जन्म संवार कर विनम्र होकर चलने का उपदेश दिया है और पिछड़े समाजों की भाँति इस रूपक को निम्न अर्थ देने से बचा लिया है :

सूहवीए निमाणीए
सो सहु सदा सम्हालि।।
नानक जनमु सवारहि
आपणा कुलु भी छुटी नालि।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७८५)

२.६ पारंपरिक समाजों में महिला हमेशा बेबस-असहाय रही है। गुरु साहिब ने बताया है कि नाम-विहीन मनुष्य असहाय हैं, न कि महिला।

२.७ पारंपरिक समाज ने विवाह-संबंधों में बंधे स्त्री-पुरुष को धन-पिर या पति-पत्नी का दर्जा दिया है, परन्तु गुरु साहिब ने आंतरिक ज्योति और विचारों के सम्बंध को 'धन पिरु' का दर्जा दिया है। विवाह संस्था की यह बिल्कुल नई, मौलिक और प्रगीतिशील धारणा है :

एक जोति दुइ मूरती
धन पिरु कहीऐ सोइ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७८८)

३. ऐतिहासिक संदर्भ

३.१ ऐतिहासिक पक्ष से हम जानते हैं कि आप वे पहले बलवान गुरु-व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने महिलाओं के साथ जोड़ी गई अनेक ब्राह्मणी प्रथायों के विरुद्ध लहर प्रारंभ की और समकालीन बादशाह अकबर, जिसकी सलतनत चंगेज ख़ान के बाद दूसरी बड़ी थी, से (बलपूर्वक) सती-प्रथा के विरुद्ध कानून पास करवाया। शूद्र और महिला को ग़ुलाम बनाने की घड़ी गई साजिशों के विरुद्ध यह जंग-ए-आज़ादी का बिगुल था, जिससे वर्ण-आश्रम के डंकेबाज लोगों की कतार में शोर मच गया।

ऐतिहासिक तौर पर गुरु साहिब ने गुरबाणी में दर्शाए गए एकता के सिद्धांत को अनुप्रयुक्त रूप से बदलते हुए अनेक स्त्रियों को जीवन के उच्च मार्ग की तरफ गतिमान किया, जिनमें से इतिहास की स्मृति ने कुछ नाम— जैसे, बीबी मथो, बीबी भानी, बीबी दानी, बीबी माला (कसूर निवासी), माई सेवा (माई सेवां) आदि के नाम संभाले हुए हैं। ब्राह्मणी मत में जीवन-उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शूद्र की भाँति स्त्री की अहमियत नहीं है।

३.२ श्री गुरु अमरदास जी ने स्त्री वर्ग के उत्थान के लिए दूसरा बड़ा परोपकार विधवा-विवाह की परंपरा स्थापित करना था। ब्राह्मणी सत्ता से प्रभावित पिछड़े समाजों में विधवा एक कलंक के तौर पर प्रचलित की गई रोगी धारणा

रही है। बाल-विधवाओं को उम्र भर अपना जीवन दुखों में व्यतीत करना पड़ता था। गुरु महाराज ने इस बुराई को हर स्तर पर मिटाने का यत्न किया।

३.३ विधवा-विवाह की तरह ही भारतीय समाज में सदियों से पकड़ बनाए रखने वाली ब्राह्मणी विचारधारा ने बाल-विवाह की कुप्रथा भी स्थापित कर रखी थी। इसके विरुद्ध गुरु जी ने अनेक ठोस कदम उठाए। उन्होंने अपनी दोनों पुत्रियों का विवाह बालिग होने के पश्चात् ही किया। इसी प्रकार एक लड़की, बीबी मथो, जब बालिग हो गई तो उसका विवाह गुरु जी ने भाई मुरारी नामक सिक्ख के साथ करवाया। अनेक पारंपरिक रूढ़िवादी और अंधविश्वासों के साथ भरी संप्रदायों के नेताओं के साथ शूद्र और स्त्री वर्ग के विषय पर विचार करते हुए गुरु जी ने उन्हें ऐसी कुप्रथायों को त्यागने व जीवन के उज्जवल भविष्य की तरफ बढ़ने का मार्ग बताया।

स्त्री वर्ग पर किये गए गुरु साहिब के उपकारों का क्षेत्र इतना विशाल है कि जीवन के लगभग सभी पक्षों— धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि की बराबरी का रोशन चिराग़ बनता है। यूँ ही नहीं तपा या मरवाहा क्षत्रियों के समान रूढ़िवादिता के शिकार लोग गुरु-घर के साथ विद्रोह रखते हुए समय की सरकार के पास गुरु-घर के विरुद्ध पहुँचते रहे। ज़िक्रयोग्य है कि चौथे पातशाह की बाणी में जिस तपे का वर्णन आता है वह केवल व्यक्ति-विशेष का नाम नहीं है, बल्कि वो वर्ण-आश्रम के तप, हठ, योग, तंत्र के छड़यंत्रों के साथ भरी सदियों की उस परंपरा का रूपक है, जो श्री गुरु नानक साहिब के सत्य का शुरू से ही विरोध करती हुई इनके साथ शत्रुता रखती है।

३.४ श्री गुरु अमरदास जी की बाणी और इतिहास पर नज़र डालें तो हमें पता चलता है कि गुरु जी ने जहाँ सैद्धांतिक तौर पर महिला के हक में आवाज़ उठाई वहीं अनुप्रयुक्त रूप से इसे अपनाया भी। गुरु जी के समय से मिलते विवरण के आधार पर हम गुरु साहिब की सुपत्नी और उनकी दोनों सुपुत्रियों तथा सेवा करने वाली माई सेवा के जीवन पर कुछ दृष्टिपात करेंगे।

माता मनसा देवी जी : माता मनसा देवी जी तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी की पत्नी थे। आप जी का जन्म गाँव सनखतरा (सियालकोट) में भाई देवी चंद बहल के घर लगभग १४८५ ई. के करीब हुआ। आप जी का विवाह श्री गुरु अमरदास जी के साथ १५०२ ई. में हुआ। इतिहास में आपका नाम 'राम कौर' या 'राम-की' भी आया है। विवाह से कई वर्ष बाद आप जी के घर दो सुपुत्र— बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी और दो सुपुत्रियां— बीबी दानी जी और बीबी भानी जी ने जन्म लिया। आप जी के चारों बच्चे होनहार थे। बाबा मोहन जी उम्र भर गुरबाणी की प्रतियां तैयार करते रहे। बाबा मोहरी जी के आज्ञापालन

का विवरण हमें गुरबाणी में से प्राप्त हो जाता है कि कैसे उन्होंने श्री गुरु अमरदास जी की आज्ञा का पालन किया। बीबी दानी जी अपने नाम के अनुसार समझदार, बुद्धिमान और गुणों का भंडार थीं। बीबी भानी जी सिक्ख इतिहास की एक नामवर पात्र हैं। श्री गुरु अमरदास जी द्वारा आरंभ किए गए विश्व-कल्याण और लोक-कल्याण के कार्यों में माता मनसा देवी जी का विशेष योगदान रहा। जब श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब नगर बसाने की सेवा संभाली तो उन्होंने अपना परिवार बासरके से गोइंदवाल साहिब बुला लिया। गोइंदवाल साहिब में गुरु जी द्वारा चलाए जा रहे कार्यों में माता मनसा देवी जी के नेतृत्व में संगत बढ़-चढ़ कर भाग लेती। लंगर का सारा प्रबंध माता मनसा देवी जी करते थे। माता मनसा देवी जी ने एक दिन गुरुदेव से कहा कि महिलाएं सामाजिक सेवा के कार्यों में पुरुषों के बराबर भाग ले रही हैं, परन्तु उनकी एक बड़ी समस्या है कि उनमें घूँघट निकालने का रिवाज़ है। जब वे घूँघट निकाल कर सेवा करती हैं तो उनके सामर्थ्य में कमी आती है और उनमें पुरुषों के मुकाबले हीन भावना भी पैदा होती है। श्री गुरु अमरदास जी ने इस गलत परंपरा को हटाने के लिए आदेश दिया कि कोई भी महिला गुरु-घर में घूँघट निकालकर न आए। इस तरह माता मनसा देवी जी ने एक सामाजिक बुराई को दूर करने में योगदान दिया।

श्री गुरु अमरदास जी ने जब सती-प्रथा का सख़्त विरोध किया और विधवा-विवाह की प्रथा प्रचलित की, तब इन कार्यों में भी माता जी का विशेष योगदान रहा। श्री गुरु अमरदास जी ने नारी-उत्थान के लिए जहाँ पर्दा-प्रथा और सती-प्रथा का विरोध किया और विधवा-विवाह प्रारंभ किया, वहाँ महिलाओं को धर्म-प्रचार का कार्य भी सौंपा। गुरु साहिब ने धर्म प्रचार के लिए २२ मंजियां और ५२ पीढ़े (उप प्रचार-केंद्र) स्थापित किये। २२ मंजियों में से दो मंजियों की सेवा दो महिलाओं और उनके पतियों को सामूहिक रूप से दी गई। इतिहास में वे दंपत्ति-नाम के अधीन प्रसिद्ध हुए, जैसे मथोमुरारी, सच्चनसच। ५२ पीढ़े केवल नारी समाज को धर्म प्रचार हेतु सौंप दिए। माता मनसा देवी जी गोइंदवाल साहिब में संवत् १६२६ (१५६९ ई.) में अकाल प्रस्थान कर गए।

बीबी दानी जी : बीबी दानी जी आप जी की बड़ी सुपुत्री थीं। बीबी दानी जी के पति का नाम भाई रामा जी था। बीबी दानी जी का विवाह गाँव बासरके में ही हुआ। बीबी दानी जी अपने नाम के अनुसार समझदार, बुद्धिमान और सभ्य थीं। जब श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब नगर बसाया तो उनका परिवार भी यहाँ आकर उनके पास रहने लगा। बीबी दानी जी भी अपने पति भाई रामा जी के साथ बावली की सेवा करने हेतु यहीं पर रहने लगीं। बीबी दानी जी ने गोइंदवाल साहिब में ही अकाल प्रस्थान किया।

बीबी भानी जी : महान घर की पारिवारिक परंपरा में बीबी भानी जी एक ऐसी शख्सियत हैं, जो पारिवारिक और पंथक संस्था में समय, स्थान व संबंधों के पक्ष से एक विशेष स्थान रखती हैं। पारिवारिक पक्ष से बीबी भानी जी गुरु-सुपुत्री (श्री गुरु अमरदास जी), गुरु-सुपत्नी (श्री गुरु रामदास जी), गुरु-माँ (श्री गुरु अरजन देव जी), गुरु-दादी (श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी) गुरु पड़दादी (श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी) गुरु नकड़दादी (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) आदि रिश्तों के रूप में केंद्रीय स्थान पर हैं और पंथक दृष्टिकोण से लगभग आधी सदी तक सिक्ख पंथ के प्रत्येक तल पर एक जिम्मेदारी फर्ज निभाते रहे हैं। गुरु-इतिहास में बीबी भानी जी की अपने पिता जी की सेवा की उदाहरण बहुत प्रसिद्ध है। लगभग सभी सिक्ख इतिहासकारों ने बीबी भानी जी के सेवा-प्रसंग को इंगित किया है कि कैसे बीबी भानी जी पिता श्री गुरु अमरदास जी का हर पक्ष से ख्याल रखते थे। श्री गुरु अमरदास जी ने महिला-कल्याणार्थ पर्दा-प्रथा, विधवा-विवाह, सती-प्रथा आदि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जब आवाज़ उठाई तो महिलाओं को उनमें से दो मंजियां (प्रचार-केंद्र) प्रदान कर और ५२ पीढ़ों (उप प्रचार-केंद्र) के संचालन का कार्यभार सौंपा। इस सबकी मुख्य प्रबंधक उन्होंने बीबी भानी जी को लगाया। उनका उद्देश्य यही था कि वास्तव महिलाएं ही घर में धर्म-प्रचार का माध्यम हैं। माँ बच्चे को पालने में ही धर्म की शिक्षा प्रदान करे। वह घर का कार्य करती हुई अपने आस-पास धर्म का प्रचार भी करे। गुरु साहिब के इस प्रयास से सिक्ख धर्म घर-घर पहुँचने लगा। बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) के साथ २२ फाल्गुन, संवत् १६१० (१५५३ ई.) को हुआ था। आप जी के तीन सुपुत्र थे— प्रिथीचंद, बाबा महादेव और श्री (गुरु) अरजन देव जी। बीबी भानी जी ने संवत् १६५५, बिक्रमी (१५९८ ई.) में गोइंदवाल साहिब में परलोक गमन किया।

माई सेवा जी : श्री गुरु अमरदास जी की एक सिक्ख थीं— माई सेवा (सेवां) जी। जब श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब में बावली की खुदाई आरंभ की, तो काबुल से एक माई, सेवा करने हेतु आई। सेवा के प्रति उसकी अधिक लगन के कारण उसके नाम के साथ 'सेवा' उपनाम जुड़ गया, जिससे वो 'माई सेवा' (माई सेवां) नाम से प्रचलित हो गई।

सारांश : उपरोक्त से स्पष्ट है कि श्री गुरु अमरदास जी का महिला सशक्तिकरण में बहुत बड़ा योगदान है। आज जब कुछ महिलाएं सामाजिक प्रतिस्पर्धा की होड़ में महिला आज़ादी का गलत इस्तेमाल पथभ्रष्ट हो रही हैं, तो ऐसे में ज़रूरत है कि श्री गुरु अमरदास जी की बाणी और शिक्षा से दिशा एवं नेतृत्व प्राप्त किया जाए।

गुरु-साखियों में शिक्षा

-डॉ. इंदरजीत सिंघ गोगोआणी*

गुरमति के प्रचार व प्रसार के लिए 'साखी साहित्य' का अपना प्रभावशाली प्रताप है। मुख्य कारण— 'सिद्धांत' को अति सूक्ष्म रूप में समझना और समझाना होता है। कई बार शब्द के प्रकरण को समझे बिना साधारण बुद्धि गड़बड़ा जाती है, जैसे— यह संसार सच्चा घर है— *''इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु।।'' (पन्ना ४६३)* दूसरी तरफ़ संसार नश्वर है, झूठ है— *''जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत।। (पन्ना १४२८)* इसी प्रकार स्नान और सरोवर की महिमा भी है— *''हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर।।'' (पन्ना १३६२)* दूसरी तरफ़ अकर्मण्य जीवन के लिए स्नान का खंडन भी है— *''जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि।।'' (पन्ना ४८४)*

यहाँ दीर्घ अध्ययन के बिना तार्किक और एकतरफा विचारधारा सब कुछ का खंडन भी कर सकती है। इसी तरह 'विचार गोष्ठी' और 'संवाद' का भी विशेष मानसिक स्तर होता है, जो समान और विवेक बुद्धि वाले के साथ तो हो सकता है परन्तु नीम एवं तर्क बुद्धि वाला केवल झगड़े तक ही सीमित हो जाता है। इससे आगे 'साखी' है और 'साखी' में ऐसी प्रेरणा है जो धर्म के पथारोहियों की चेतना को बलवान बनाती है। सतिगुरु का फ़रमान है— *''बाबाणीआं कहाणीआ पुत सपुत करेनि।।'' (पन्ना ९५१)* अर्थात् विरसे और विरासत में पूर्वजों की कथाएं पुत्रों को सुपुत्र बनाती हैं। इसी प्रकार गुरु-इतिहास में साखियां हमारी अमीर विरासत हैं, जो शिक्षा के माध्यम से कौमी वारिसों का हर युग में मार्गदर्शन करती रहेंगी।

'साखी' से क्या तात्पर्य है? 'महान कोश' के अनुसार— ''साखी (संज्ञा) इतिहास अथवा कथा, जो आंखों देखी कही गई हो अर्थात् शिक्षा नसीहत। श्री गुरु ग्रंथ कोश के अनुसार— साखी (देश-भाषा संस्कृत : साक्षी=स + अक्शी = जो आँखों के सामने हो। आंखों देखी बात का बताना। इससे आगे कथा, वार्ता अर्थ बने हैं और शिक्षा, गवाही अर्थ भी हैं।

हमने श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी के जीवन-इतिहास में से प्रचलित छः साखियों का चयन किया है। साखियों में से शिक्षा क्या मिलती है, यही तत्वसार है।

सूक्ष्म उलाहना और निगुरे की गुरु-इच्छा : प्रचलित साखी है कि श्री गुरु

*प्रिंसिपल, खालसा कॉलेज सीनियर सेकंडरी स्कूल, श्री अमृतसर साहिब—१४३००१, फोन : ९८१५९-८५५५९

अमरदास जी, श्री गुरु अंगद देव जी के साथ मिलाप से पूर्व अपनी पारिवारिक मान्यता के अनुसार कई बार गंगा की यात्रा पर गए। लगभग २०वीं यात्रा के समय एक ब्रह्मचारी साधु के साथ मिलाप हुआ तो उसका प्रश्न था— ''आपका गुरु कौन है?'' श्री गुरु अमरदास जी का उत्तर था कि ''अभी तक मैंने कोई भी गुरु धारण नहीं किया।''

ब्रह्मचारी साधु ने कटुता में कहा कि ''निगुरे इंसान का तो दीदार ही बुरा होता है।'' अब ब्रह्मचारी तो यह कह कर चला गया, परन्तु श्री गुरु अमरदास जी गुरु-मिलाप के लिए बेचैन हो गए।

इस साखी में शिक्षा के लिए कई सवाल और जवाब हैं। पहला— केवल परंपरागत यात्रा और जीवन-कर्म तो था मगर प्राप्ति और संतुष्टि नहीं थी। दूसरा— अंतरात्मा की तड़प हर बार कुछ ढूँढने ज़रूर जाती है, लेकिन वो मिल नहीं रहा। तीसरा— हृदय रूपी सेज तो संवरी है मगर स्थापित टिकाव किसी का नहीं। चौथा— साधु चाहे किसी पंथ का भी हो, लेकिन अगर सच्चा साधु है तो उसकी शिक्षा प्रभाव ज़रूर रखती है। पाँचवाँ— सबसे विशेष शिक्षा सिक्ख समाज के लिए है कि जो अभी तक निगुरे हैं उन्होंने यथाशीघ्र गुरु वाले बन जाना चाहिए।

सिक्ख कौम में दो लंगर सजते हैं— पंगत में तन का लंगर और संगत में मन का अर्थात् विचारों का लंगर। दोनों पक्ष से ही किसी मानव की पहचान होती है। बाहरी रूप से इंसान किस धर्म का है, उसकी वेशभूषा, लिबास से बिना बोले प्रकट हो जाता है। आंतरिक रूप— व्यवहार के माध्यम से उसके विचार, बोल-वाणी, मन्नत, मनौत और करनी के माध्यम से उसका व्यक्तिगत प्रभाव होता है। दरअसल बाणी और बाणे दोनों के संपूर्ण संयोग ने ही व्यक्तित्व-निर्माण करना है। चिंतन और चेतना की ज़रूरत है।

शबद की चोट, चेतना और परिवर्तन : प्रथम साखी के साथ मिलती दूसरी साखी के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री बीबी अमरो जी का परिणय श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे के संग हुआ था। वो अमृत बेला में पारिवारिक संस्कारों के अनुसार गुरबाणी पढ़ रही थी— *''करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए।।'' (पन्ना ९९०)* यह शबद सुनकर श्री गुरु अमरदास जी के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने पूछा ''बेटी यह किसकी बाणी है?'' बीबी अमरो जी ने उतर दिया कि ''यह बाणी श्री गुरु नानक देव जी की है। यह तो आप जानते ही हो कि उनकी गद्दी पर अब मेरे पिता जी विराजमान हैं।''

यह सुनकर श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने और उन्हें ही गुरु धारण करने का निर्णय कर लिया। आप अविलंब श्री खडूर साहिब में गुरु-दरबार में पहुँच गए और सतिगुरु के बनकर रह गए।

इस साखी में एक बात तो स्पष्ट है कि

'धुर की बाणी' का प्रकाश ही था कि लंबे समय से बेचैन आत्मा को चैन महसूस हुआ और वह असली घर की तरफ चल पड़ी। दूसरी बात, अमृत बेला की महिमा है। ऐसे शांतमयी मंडल में शबद का प्रताप विचारों की उलझन को सुलझाता है। तीसरी बात, उत्तम संस्कार निजी जीवन ही नहीं बदलते, बल्कि अन्य के जीवन को बदलने का सामर्थ्य भी रखते हैं। चौथी बात, शबद के अंतर्निहित भाव को समझना है और स्रोत भी गहरा होना ज़रूरी है। पाँचवी बात, श्रद्धा और लगन हो तो रास्ते भी मिल जाया करते हैं। सदा विवेक-बुद्धि और गुरु-भरोसा ही शक्ति प्रदान करता है।

संगती जोड़ मेला और धर्म प्रचार : प्रचलित ऐतिहासिक साखी है कि भाई गोइंदा क्षत्रिय की विनय स्वीकार कर १५४९ ई. में तीसरे पातशाह ने गोइंदवाल साहिब बसाया। फिर १५६४ ई. में बाउली (बावली) साहिब की संपूर्णता हुई। साखी के अनुसार एक प्रेमी सिक्ख भाई पारो ने विनती की कि सच्चे पातशाह जी! विभिन्न स्थानों से असंख्य संगत आप जी के दर्शन करने आती है। हमें कोई सामूहिक जोड़-मेले के आयोजन का दिन पक्का करना चाहिए। इस प्रकार संगत विशेष दिन पर इकट्ठा हो जाया करेगी। सतिगुरु ने विनय स्वीकार की और १५६७ ई. से गोइंदवाल साहिब में बैसाखी का जोड़-मेला मनाना आरंभ हुआ। समय पाकर यह दिन हमारा कौमी त्योहार बन गया।

पहली शिक्षा— गोइंदा क्षत्रिय की विनय पर गोइंदवाल साहिब नगर बसाया था और एक बड़ा भ्रम भी था कि यहाँ पर भूत-प्रेत निवास करते हैं जो नगर आबाद नहीं होने देते। समाज को यहाँ से बड़ा संदेश मिला कि जहाँ गुरबाणी का जाप हो वहां पर कोई बुरी आत्मा टिक नहीं सकती। यह गुरबाणी के वर्चस्व को समझने व समझाने का ऐतिहासिक हवाला है।

दूसरी शिक्षा— श्री बाउली साहिब, सिक्ख तीर्थों में से पहला तीर्थ है। सिक्ख समाज को अनेक तीर्थों की सहायता और भटकना से मोड़ कर गुरु-घर के केंद्रीय स्थान के साथ सुदृढ़ रूप से जोड़ने का यह व्यावहारिक रूप था।

तीसरी शिक्षा— यहाँ 'पहले पंगत, पाछै संगत' की प्रेरणा ने सैद्धांतिक पक्ष से जाति-अभिमानियों को गुरु नानक साहिब के घर का संदेश दृढ़ करवाया।

चौथी शिक्षा— जोड़-मेले की महानता क्या है और जोड़-मेले क्या प्रभाव डालते हैं? जोड़-मेलों का वर्चस्व बुलंद रहता है और ये गुरु-घर से नाता तोड़ने वालों को कभी अलग नहीं होने देते, बल्कि सिक्ख और गुरु का रिश्ता ज्यादा पक्का करते हैं। यह हकीकत है कि एक जत्थेबन्दक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए जोड़-मेलों की सार्थकता बरकरार रहनी चाहिए। सिक्ख सभ्याचार में गुरुपर्व, अमावस, पूर्णमाशी, संक्रांति और शहीदों की याद में आयोजित गुरमति जोड़-मेलों ने मध्यस्थ की

सदा अहम भूमिका निभाई है व निभा रहे हैं।

धर्म प्रचार के लिए आज के समय में भी इनकी शक्ति को समझना ज़रूरी है, चाहे कोई भी ऐतिहासिक गुरुपर्व, गुरमति समारोह हो, चाहे सुखमनी साहिब सेवा सोसायटियों का समारोह और चाहे देश-विदेश में धार्मिक आयोजन के समय गुरबाणी-जाप करती संगत हो आदि सभी गुरु-संगती जोड़-मेले धर्म प्रचार के बड़े माध्यम हैं।

संसारी परीक्षा में निरंकारी उपदेश : धन्य-धन्य श्री गुरु रामदास जी के जीवन इतिहास में चबूतरे (थड़ा) बनाने वाली साखी सभी की स्मृति में है। एक दिन श्री गुरु अमरदास जी ने अपने दोनों दामाद— भाई रामा जी और श्री गुरु रामदास जी को आदेश किया कि हमारे बैठने के लिए इस स्थान पर दो सुंदर चबूतरे बनाओ!

दोनों ने पूरी तन्मयता के साथ चबूतरे बनाए। जब शाम को तीसरे पातशाह जी ने चबूतरे देखे तो उन्होंने कहा कि ये चबूतरे ठीक नहीं बने हैं। इस प्रकार जब दो-तीन बार चबूतरे नापसंद किये गए तो भाई रामा जी पुकार उठे कि ''सतिगुरु जी! आपकी आयु बड़ी होने के कारण आप भूल जाते हो। मैं तो आपके निर्देशानुसार ही बना रहा हूं। इससे अच्छा मैं और बना भी नहीं सकता।''

दूसरी तरफ़ श्री गुरु रामदास जी का उत्तर था कि ''सतिगुरु जी! क्षमा कर दीजिए! मैं अनजान हूँ! आपका निर्देश समझने में मेरे से कोई कसर रह जाती है। आप ही कृपा करें ताकि मैं सही चबूतरा बना सकूँ!''

दरअसल यह तो एक संसारी परीक्षा थी। तत्व-ज्ञान कि एक सिक्ख का सतिगुरु के प्रति प्यार, सहजता, नम्रता, सहनशीलता और आज्ञा-पालन के सामर्थ्य का इम्तिहान था। चबूतरे की बाहरी सृजना करना, हृदय रूपी चबूतरे का निर्माण था, जहाँ 'गुरु नानक-ज्योति' ने आसन धारण करना था।

यहाँ हमारे सांसारिक लोगों के लिए शिक्षा है कि उच्च पद और बड़ी जिम्मेदारियों का निर्वाह धैर्य व सहनशीलता के बिना नहीं हो सकता। बाहरी घटनाएँ आंतरिक सरंचना का आधार होती हैं। विरसे और विरासत में मिली शिक्षाएं गुरु-वारिसों के लिए सदा प्रेरणा-शक्ति होती हैं।

अहंकार और विनम्रता की जंग में कौन जीता ?

प्रचलित साखी के अनुसार एक बार श्री गुरु नानक पातशाह जी के बड़े सुपुत्र बाबा श्रीचंद जी गुरु रामदास जी से मिलने के लिए रामदासपुर (श्री अमृतसर साहिब) आए। सतिगुरु जी अति सम्मान सहित उनसे मिले। फिर बाबा श्रीचंद जी के मन में विचार आया कि देखें तो सही कि कौन-से गुणों के कारण श्री गुरु नानक देव जी की गुरगद्दी, श्री गुरु रामदास जी के पास आई है।

बाबा श्रीचंद जी ने कहा कि ''पुरखा! दाढ़ा (दाढ़ी) इतना लंबा क्यों रखा है?'' आगे से नम्रता के पुंज धन्य-धन्य श्री गुरु रामदास जी बोले— ''आप जैसे महापुरुषों के चरण साफ

करने के लिए।'' बाबा श्रीचंद जी पुकार उठे— ''धन्य हो! धन्य हो! 'गुरु नानक के घर' के आप ही उचित अधिकारी हो! आपकी सिक्खी धन्य है!''

शिक्षा : चाहे बाबा श्री चंदजी का मत उदासी था, मगर उन्हें मालूम था कि गुरु नानक के घर में ईर्ष्या नहीं, प्यार पलता है। धर्म के क्षेत्र में 'प्रेम-कला' की ही अंततः विजय होती है। हम लोग रचनाओं और प्रचार के माध्यम से कई बार निर्मले और उदासी मत के अनुयायियों के प्रति निम्न स्तर तक चले जाते हैं। अब तो एक-दूसरे के प्रति घृणित प्रचार और भी बढ़ गया है। यहाँ पर अपने विरसे को समझना ज़रूरी है कि कैंची बन कर काटते रहने से प्रचार नहीं होगा, सूई बनकर कटे हुए को सिलने का, जोड़ने का यत्न करें! घृणित शब्द जत्थेबन्दक धर्म का नुकसान प्रायः अधिक कर जाते हैं। संभलने का समय है।

सुमिरन की महिमा और सिक्ख समाज : श्री गुरु रामदास पातशाह की बाणी में एक शबद ऐसा है जो प्रत्येक सिक्ख को नित्य के नियम के लिए और प्रभु-सुमिरन के लिए दृढ़ संकल्पित व जागृत करता है। यह शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना ३०५ सुस्थित है :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए।
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै।।
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रितसरि नावै।।...

(वार गउड़ी, महला ४, पन्ना ३०५)

इस समूचे शबद में अमृत बेला की संभाल, सुमिरन और गुरमति जीवन की मर्यादा निहित है। 'परभाती' शब्द का कोषगत अर्थ अमृत बेला, प्रभात, सुबह का समय है। संस्कृत प्रभातः प्रातः काल, ब्रह्म मुहूर्त, सूर्योदय से पूर्व, रात्रि का पिछला भाग, जिसमें शोर-शराबा नहीं होता, उपमा आदि इसके समान अर्थी हैं।

'सिक्खं दी भगत माला' (कृत शहीद भाई मनी सिंघ जी, संपादित भाई वीर सिंघ) में श्री गुरु रामदास जी के दरबार की साखी है— ''धरम दासु खोटड़ा और डूगर दास तकिआरु ते दीपा ते जेठा ते तीरथा ते बूला, सभे गुरु रामदास जी दे पास आए। आइके अरदास कीतीओने : जी तुसाडी सरनि आए हां, किवें असाडा उधारु होवे। ता बचनु होइआ : तुसां आपणे अपने मन का हंकारु तिआगणा, जिथे साध संगति कथा कीर्तन होवै तिथै दोनों वेले चलके जावणा, पिछलि राति उठि के स्नान करकै वाहिगुरू दा नाम जपणा।... मैं तुसाडा सदा संगी होवांगा। इसे करके उन्हां दा कलिआणु होइआ।''

इन समूह साखियों की शिक्षा विवेक-बुद्धि द्वारा समझने वाली है। गुरबाणी, गुरु-इतिहास, गुरु-साखियां, गुरु-वचन और गुरु-यश आदि सब रूहानियत का लंगर है। अगर रूह के साथ छकते रहें तो आत्मिक आनंद बरकरार रहेगा।

श्री गुरु रामदास जी

–स. बिकरमजीत सिंघ जीत*

श्री गुरु रामदास जी सिक्ख धर्म के चौथे गुरु हुए हैं। आप जी द्वारा श्री गुरु नानक साहिब के बनाए सिक्खी के महल को और अधिक मज़बूत करने के लिए अपने जीवन-काल के दौरान दिया योगदान बहुत ही अहम स्थान रखता है। आप जी ने अपने पवित्र अनुप्रयुक्त जीवन में जो कार्य किये वे सिक्खी जीवन का आदर्श बन कर सामने आए। गुरु जी का समूचा जीवन गहरे अध्ययन का विषय है। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने विनम्रता, सब्र-संतोष, सेवा, गुरु के प्रति समर्पण की भावना आदि अनेक गुणों के कारण श्री गुरु रामदास जी को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

श्री गुरु रामदास जी का प्रकाश (जन्म) रावी दरिया के किनारे स्थित लाहौर शहर (पाकिस्तान) में कार्तिक वदी २, आश्विन २५, संवत् १५९१ तद्नुसार २४ सितंबर, १५३४ ई. को भाई हरिदास जी (सोढी) तथा माता दया कौर जी के घर चूनी मंडी क्षेत्र में हुआ। घर में पहली संतान होने के कारण आप जी का पहला नाम भाई जेठा जी था। सोढी वंश के बहुत-से परिवार उस समय कई अन्य स्थानों से आकर लाहौर बसे हुए थे।

भाई जेठा जी अभी लगभग सात वर्ष की आयु के ही थे कि उनके माता-पिता जी का शरीरांत हो गया। आप जी के नानी जी, जो कि बासरके गाँव में रहते थे, आप जी के पास लाहौर आ गए। माता-पिता के देहावसान के बाद पैतृक परिवार तथा अन्य रिश्तेदारों में से आप जी के पालन-पोषण के लिए कोई आगे न आया, परन्तु उस समय यह कौन जानता था कि यतीम हुआ यह बालक (भाई जेठा जी) अपने गुणों के कारण कुल दुनिया का रहबर कहलाएगा और श्री गुरु नानक साहिब की ज्योति का धारक बन कर कुल लोक का नेतृत्व करेगा। जब किसी भी रिश्तेदार ने भाई जेठा जी के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी न उठाई तो आप जी की नानी आप जी को अपने गाँव बासरके ले आई। गांव बासरके में रहते हुए आपने घुंगनियाँ बेचने का कार्य आरंभ कर दिया। आप जी राहगीरों को घुंगनियाँ बेचते और प्राय: ज़रूरतमंदों को बिना कोई दाम लिए भी छका देते।

भाई जेठा जी अपने जिस ननिहाल गाँव बासरके में रह कर घुंगनियाँ बेचने का कार्य

*सहायक संपादक गुरमति प्रकाश। फोन : ८७२७८-००३७२

करते थे, वही गाँव तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का पैतृक गांव था। जब दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी ज्योति-जोत समा गए तो श्री गुरु अमरदास जी ने अपना स्थाई निवास गोइंदवाल साहिब बना लिया। गोइंदवाल साहिब नगर की ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। संगत श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन करने के लिए दूर-दूर से गोइंदवाल साहिब आने लगी। एक दिन भाई जेठा जी श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन करने के लिए बासरके से संगत के साथ आए। उसी दिन से भाई जेठा जी ने गोइंदवाल साहिब में श्री गुरु अमरदास जी की सेवा में रहने का पक्का विचार बना लिया। भाई जेठा जी गोइंदवाल साहिब में रहते हुए श्री गुरु अमरदास जी और संगत की सेवा में जुट गए। यहाँ संगत की सेवा करते हुए भी आप जी ने अपना गुज़ारा पूर्व व्यवसाय द्वारा अर्थात् घुंगनियाँ बेच कर ही किया।

श्री गुरु अमरदास जी की दो सुपुत्रियां थीं। बड़ी सुपुत्री बीबी दानी जी का विवाह श्री रामा जी के साथ हो गया था, जबकि छोटी सुपुत्री बीबी भानी जी का विवाह अभी होना था। एक दिन श्री गुरु अमरदास जी की पत्नी माता राम कौर जी ने श्री गुरु अमरदास जी के पास बीबी भानी जी के विवाह का ज़िक्र किया। उस समय श्री गुरु अमरदास जी के पूछने पर माता जी ने भाई जेठा जी जैसा वर ढूँढने के लिए कहा। श्री गुरु अमरदास जी तो भाई जेठा जी की शख्सियत से पहले से ही बहुत प्रभावित थे। भाई जेठा जी की अद्वितीय सेवा और नम्रता-भावना ने श्री गुरु अमरदास जी का मन पहले से ही मोह लिया था। श्री गुरु अमरदास जी ने भाई जेठा जी को ही बीबी भानी जी के लिए योग्य वर चुन लिया और बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी के साथ कर दिया। भाई जेठा जी व बीबी भानी जी के घर तीन पुत्रों ने जन्म लिया, जिनके नाम प्रिथी चंद, महादेव और श्री (गुरु) अरजन देव जी रखे गए।

भाई जेठा जी विवाह के बाद भी तन और मन के साथ श्री गुरु अमरदास जी की सेवा में लगे रहे। गुरु जी की सेवा के साथ-साथ वे साधसंगत की सेवा भी करते। भाई जेठा जी गुरु जी के साथ व्यक्तिगत रिश्तेदारी से ऊँचा उठ कर गुरु और गुरु-घर की सेवा में निरंतर जुटे रहते। श्री गुरु अमरदास जी भाई जेठा जी की अथक सेवा देख कर बहुत ही प्रसन्न होते थे।

गोइंदवाल साहिब में जब श्री गुरु अमरदास जी ने 'बावली' के निर्माण की तैयारी आरंभ की तो भाई जेठा ने इस सेवा-कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। भाई जेठा जी संगत के साथ ख़ुद भी टोकरी ढोया करते थे। यह देख कर लाहौर से आए भाई जेठा जी के कुछ रिश्तेदार उन्हें ससुराल-घर में टोकरी

ढोता देख कर बुरा मनाने लगे। भाई जेठा जी ने उनकी बातों की तरफ ध्यान न देते हुए गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा-भावना पूर्ववत् बनाए रखी, जो कि अति नम्रता की मिसाल है।

इतिहास में वर्णन आता है कि एक दिन श्री गुरु अमरदास जी ने श्री रामा जी और भाई जेठा जी की 'चबूतरा' बनाने की परीक्षा ली, जिसमें भाई जेठा जी श्रद्धा, गुरु-प्रेम, आस्था, आज्ञा-पालन जैसे सद्गुणों के कारण सफल रहे। श्री गुरु अमरदास जी तो पहले से ही अवगत थे कि उनके बाद गुरुता की जिम्मेदारी के लिए भाई जेठा जी ही योग्य हैं। श्री गुरु अमरदास जी ने अपने ज्योति-जोत समाने के समय भाई जेठा जी को १ सितंबर, १५७४ ई. को गुरुगद्दी प्रदान कर भाई जेठा से श्री गुरु रामदास जी बना दिया। सब संगत ने श्री गुरु रामदास जी को माथा टेका, सभी ने अभिवादन किया।

इस प्रकार अपने गुणों, अकाल पुरख की कृपालुता और श्री गुरु अमरदास जी की दयालुता द्वारा श्री गुरु रामदास जी को गुरुगद्दी की दात प्राप्त हुई। भाई सता जी और भाई बलवंड जी आप जी की उपमा इस प्रकार करते हैं :

धंनु धंनु रामदास गुरु
जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ।।
पूरी होई करामाति
आपि सिरजणहारै धारिआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६८)

ज्योति-जोत समाने से कुछ वर्ष पूर्व श्री गुरु अमरदास जी ने एक सरोवर खुदवाने और नया नगर बसाने का आदेश श्री गुरु रामदास जी को दिया था। इससे पहले श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु रामदास जी, बाबा बुड्ढा जी तथा अन्य प्रमुख सिंघों को साथ लेकर निकटवर्ती संगत को एकत्रित कर इस नये नगर की आधारशिला रखने का कार्य अपने हाथों द्वारा सम्पन्न किया। इस नगर का नाम 'गुरु का चक्क' रखा गया। इसके पश्चात् श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अमरदास जी द्वारा इंगित की गई जगह पर सर्वप्रथम उस सरोवर की खुदायी आरंभ की जिसे 'संतोखसर' नाम से जाना जाता है। (यहाँ यह भी ज़िक्रयोग्य है कि 'संतोखसर' नामक सरोवर की संपूर्णता पाँचवे पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने की थी।) श्री गुरु रामदास जी ने (गुरु का चक्क) वाली ५०० बीघा ज़मीन को तुंग गिलवाली, सुलतानविंड और गुमटाला गाँव के जमींदारों से ७०० अकबरी रुपए अदा कर खरीदा था।

नया नगर बसा कर श्री गुरु रामदास जी ने अपना निवास स्थाई रूप से यहीं पर कर लिया। जिस स्थान पर आप जी ने अपना निवास किया, उस स्थान को 'गुरु के महल' नाम से जाना जाता है। इस बसाए नये नगर की धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक पक्ष से उन्नति के लिए श्री गुरु रामदास जी ने कई

विशेष कार्य आरंभ किए। गुरु जी ने यहाँ-वहाँ से ५२ प्रकार के व्यवसाय से सम्बंधित कलाकौशल वाले लोगों को प्रेरित कर यहाँ पर बुलाया और अपना व्यवसाय यहां पर चलाने को राजी किया, ताकि यहां पर रोजगार के साधन उत्पन्न हो सकें तथा आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति आसानी से हो सके। गुरु जी ने उन लोगों की रिहायश के लिए प्रबंध भी किया। इन तमाम प्रकार के व्यवसायिक लोगों का एक बाज़ार बन गया। इस बाज़ार का नाम 'गुरु बाज़ार' विख्यात हुआ। धीरे-धीरे यह नगर घनी आबादी में तबदील हो गया। प्रिंसिपल सतिबीर सिंघ अपनी पुस्तक 'पूरी हुई करामाति' में इस नये नगर के बारे में लिखते हैं कि ''नगर को कई महल्लों और बाज़ारों में बांटा गया। प्रत्येक महल्ले में एक कुआँ खुदवाया गया और साथ ही बाज़ार भी बनवाए गए। आस-पास निमंत्रण भेज कर व्यापारियों को यहाँ पर निवास करने के लिए कहा गया। विशेष तौर पर कारीगरों को बुला कर सम्मान सहित बसाया गया। कलानौर, पट्टी, कसूर तथा अन्य स्थानों से ५२ प्रकार के नामवर व्यावसायिक परिवारों को बसाया गया। . . . बाज़ारों के नाम से ही पता चल जाता है कि कितना बड़ा शहर गुरु जी ने योजनाबद्ध किया था।''

यह सब कुछ चौथे पातशाह की अपार बख्शिश द्वारा हुआ, जिस कारण इस शहर को 'रामदासपुर' नाम से भी जाना जाने लगा। श्री अमृतसर साहिब शहर में यह बाज़ार श्री हरिमंदर साहिब के पास पुराने शहर के क्षेत्र में अब तक व्यापार का विश्व-प्रसिद्ध केंद्र है।

श्री गुरु अमरदास जी के आदेश के मुताबिक सन् १५७७ ई. में श्री गुरु रामदास जी ने 'दुख भंजनी बेरी' वाली जगह पर सरोवर (अमृत-सरोवर) की खुदाई आरंभ करवाई। बाद में इस नगर का नाम 'अमृत-सर' प्रसिद्ध हो गया। सरोवर के मध्य श्री गुरु रामदास जी के सुपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने गुरुगद्दी-काल में सन् १५८८ ई. में सिक्खी के केंद्रीय स्थान श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना करवाई।

श्री गुरु रामदास जी की कृपा द्वारा श्री अमृतसर साहिब सिक्खी के विकास का बड़ा केंद्र बनने लगा। श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई गई 'लंगर-प्रथा' को यहाँ भी जारी रखा। गुरु-दर्शन के लिए आने वाली संगत की संख्या में विस्तार होना शुरू हो गया, जिस कारण शहर के और विकास-विस्तार की ज़रूरत पड़ गई। गुरु जी अमृत-सरोवर को पक्का करना चाहते थे। इन सब कार्यों के लिए गुरु साहिब ने 'मसंद-प्रथा' की स्थापना की। मसंद (मसनद) दूर-दराज क्षेत्र की संगत से गुरु-घर के लिए धन एकत्रित कर गुरु जी के पास लाने लगे। मसंदों द्वारा संगत से इकट्ठा किया गया धन

अमृत-सरोवर की कार-सेवा, सिक्खी-प्रचार एवं लोक-कल्याणार्थ ख़र्च किया जाने लगा।

श्री गुरु रामदास जी ने अपने से पहले तीन गुरु साहिबान की तरह बाणी उच्चारण कर लोक को सत्य के मार्ग के साथ जोड़ा। श्री गुरु रामदास जी ने जो आध्यात्मिक विचार अपनी बाणी के माध्यम से प्रस्तुत किये हैं, उनका मूल आधार गुरु-परंपरा से प्राप्त जीवन-दर्शन है। श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चारित बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ३० रागों में दर्ज है। श्री गुरु रामदास जी के अनुसार परमात्मा आदि पुरख, अपर-अपार, सृष्टि-कर्ता, अद्वितीय, युगों-युगों तक मात्र एक और शाश्वत है। आपका गुरबाणी में फरमान है :

तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता
जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ।।
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा
तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३४८)

इसके अलावा आप जी ने अपनी बाणी के माध्यम से प्रत्येक सिक्ख को गुरमति के अनुसार जीवन जीने की प्रेरणा दी :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ।।
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३०५)

गुरु पातशाह जी ने उन गुरसिक्खों की चरण-धूलि अर्थात् उनका संग मांगने के लिए भी प्रेरित किया है जो परमात्मा (अकाल पुरख) का नाम ख़ुद भी जपते हैं तथा दूसरों को भी जपने के लिए प्रेरित करते हैं :

जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३०६)

गुरु साहिब ने सिक्ख को प्रत्येक कार्य अकाल पुरख के भरोसे पर करने और परमात्मा के समक्ष अरदास कर आरंभ करने का उपदेश दिया है। आप जी की बाणी में प्रमुख रूप से पदे, असटपदियां, छंत, सलोक, वारां, पउड़ियां, पहिरे, वणजारे, करहले और घोड़िआं शामिल हैं। सूही राग में उच्चरित 'लावां' बाणी सिक्खों में 'अनंद कारज' के समय पढ़ी जाती है।

श्री गुरु रामदास जी ने अपना सचखंड वापसी का समय निकट जान कर गुरुगद्दी की ज़िम्मेदारी अपने छोटे सुपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को सौंप दी। श्री गुरु रामदास जी १ सितंबर, १५८१ ई. को श्री गोइंदवाल साहिब में ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु रामदास जी का जीवन तथा उपदेश

-डॉ. परमजीत कौर*

विनम्रता के पुंज, सेवा की मिसाल, सांझीवालता के प्रेरक, *''जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा''* के आदर्श को दृढ़ करवाने वाले श्री गुरु रामदास जी का जीवन तथा बाणी अज्ञानता के अंधकारपूर्ण मार्ग पर अग्रसर हुई मानवता के लिए प्रकाश-स्तंभ है।

श्री गुरु रामदास जी का आगमन चूनी मंडी, लाहौर में कार्तिक वदी २, २५ आश्विन, संवत् १५९१ (२४ सितंबर, १५३४ ई.) को हुआ। आपके पिता का नाम श्री हरिदास जी तथा माता का नाम श्रीमती दया कौर था। आपके आगमन से पूर्व तीन गुरु साहिबान शारीरिक रूप में विद्यमान थे, परंतु मिलाप अभी श्री गुरु नानक देव जी तथा भाई लहिणा जी (श्री गुरु अंगद देव जी) का ही हुआ था। भाई लहिणा जी को श्री गुरु नानक देव जी की सेवा में गये दो वर्ष हो चुके थे।

ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण श्री (गुरु) रामदास जी को 'जेठा' कहा जाने लगा। बहुत छोटी आयु में ही आपकी माता जी का ममतामयी हाथ आपके सिर पर न रहा। सात वर्ष के हुए तो पिता जी का भी परलोक गमन हो गया। आपकी नानी आपको गांव बासरके ले आई। निर्धनता के कारण आप जी ने छोटी आयु में ही 'घुंघनियां' (उबले चने) बेचने शुरू कर दिये। पांच वर्ष बासरके में ही रोजगार करते रहे। जब श्री गुरु अंगद देव जी की आज्ञा से श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहिब बसाया तो आप अपनी नानी सहित गोइंदवाल साहिब आ गए। उस समय आपकी आयु १२ वर्ष थी। आप जी गोइंदवाल साहिब की गलियों, बाज़ारों में घुंघनियां बेचते तथा संगत में जाकर सेवा भी करते। श्री गुरु अंगद देव जी के परम ज्योति में विलीन हो जाने के बाद श्री गुरु अमरदास जी गोइंदवाल साहिब में ही बस गये। श्री गुरु अमरदास जी भाई जेठा जी से बहुत प्रभावित हो चुके थे, इसलिए जब गुरु-महिल माता राम कौर जी ने श्री गुरु अमरदास जी से कहा कि बीबी भानी जी के लिए वर इस नौजवान जैसा होना चाहिए तो गुरु जी ने कहा कि इस नौजवान जैसा तो यही है अर्थात् इसके जैसा कोई अन्य नहीं है। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-पद पर सुशोभित होने के एक वर्ष बाद अपनी सुपुत्री बीबी भानी जी का विवाह भाई

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १६५००२, फोन : ९८१२३-५८१८६

जेठा जी के साथ कर दिया। उस समय आपकी आयु १९ वर्ष के लगभग थी। आप जी तन-मन से गुरु-घर तथा साधसंगत की सेवा में जुट गये।

आप जी अपनी सूझबूझ, तीव्र बुद्धि, विनम्र स्वभाव तथा मधुर बाणी से सबको प्रभावित कर लेते थे। श्री गुरु अमरदास जी द्वारा स्थापित लंगर- प्रथा की लोकप्रियता से परेशान तथा जाति का अभिमान करने वालों द्वारा भड़काये गये लोगों ने श्री गुरु अमरदास जी के विरुद्ध अकबर बादशाह से शिकायत की तथा गुरु जी पर कई दोष भी लगाये। बादशाह अकबर ने सफाई पेश करने के लिए सतिगुरु जी को बुलाया। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-घर का पक्ष रखने के लिये अपने स्थान पर भाई जेठा जी को भेजा। आप जी ने गुरु-घर के आदर्शों को इस तरह स्पष्ट किया कि अकबर भी प्रभावित हुए बिना न रह सका। आप जी ने विनम्रता सहित बादशाह को प्रेरित किया कि तीर्थों पर दर्शनार्थ जाने वाले यात्रियों से अधिक कर न लिया जाए ।

बाउली साहिब की सेवा प्रारंभ होने पर आप जी बढ़-चढ़ कर सेवा में भाग लेते रहे। एक दिन लाहौर से आये आपकी बिरादरी वालों ने आपको सिर पर मिट्टी की टोकरी उठाकर आते हुए देखा। वे क्रोधित होकर श्री गुरु अमरदास जी के पास गए तथा सारा आदर-सत्कार भूलकर कठोर वचन बोलने लगे। अपने गुरु पातशाह का निरादर होता देखकर भाई जेठा जी जवानी के जोश में नहीं आये, समुद्र जैसे गंभीर, शांत व्यक्तित्व को प्रकट करते हुए सतिगुरु जी के चरणों में गिरकर क्षमा मांगने लगे तथा दुर्वचन बोलने वाले शरीक भाइयों के लिए कृपा की याचना करने लगे।

श्री गुरु अमरदास जी की आज्ञा से बार-बार बिना किसी सवाल-जवाब के चबूतरे को गिराकर तथा बनाकर आप जी ने गुरु के प्रति श्रद्धा-प्यार बनाए रखने तथा आज्ञा मानने का ढंग सिखाया। जब आप गुरु-पद पर विराजमान किए गए तो वैराग्य में आकर बोले कि पातशाह! मैं तो एक कीट के समान था। आपने कृपा तथा स्नेह से मुझ यतीम को बड़ा सहारा दिया:

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा
सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ।।
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता
गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १६७)

गुरु-पद पर आसीन होने के पश्चात आप श्री गुरु रामदास जी के नाम से विख्यात हुए। आप जी ने श्री गुरु अमरदास जी की आज्ञा अनुसार संतोखसर (सरोवर) बनवाया । इस सरोवर की कुछ दूरी पर 'गुरु का चक्क' नामक नगर बसाया। बाद में इसका नाम 'रामदासपुर'

पड़ गया। गुरु का चक्क के निकट ही आप जी ने एक सरोवर बनवाया, जिसका नाम 'अमृत सर' प्रसिद्ध हुआ। इसी सरोवर के नाम पर 'गुरु का चक्क' नगर का नाम 'अमृतसर' प्रचलित हुआ। इस सरोवर के मध्य धर्म-स्थान 'श्री हरिमंदर साहिब' बनाने का विचार श्री गुरु अरजन देव जी के समय सम्पूर्ण हुआ।

श्री गुरु रामदास जी ने श्री अमृतसर साहिब को सर्वसांझीवालता (सर्वमान्यता) का प्रतीक बनाया। यहां बसाये गये लोगों में हर वर्ग-व्यवसाय से सम्बंधित लोग थे। श्री अमृतसर साहिब नगर में बनाया गया 'सरोवर' भी सबका साझा था। यहां प्रत्येक धर्म के लोगों को स्नान करने का अधिकार था, जबकि उस समय हिंदू धर्म-स्थानों तथा तीर्थों पर तथाकथित निम्न जाति के लोगों को जाने की आज्ञा नहीं थी। साझीवालता का इससे बढ़कर उदाहरण और क्या हो सकता है? धार्मिक कार्यों के लिए धन एकत्र करने तथा सिक्ख आदर्शों के प्रचार का कार्य सुनियोजित ढंग से करने के लिए आपने 'मसंद-प्रथा' की स्थापना की ।

महिलाओं के तिरस्कार तथा निरादर की जड़ सामाजिक कुरीति 'दहेज-प्रथा' का विरोध करते हुए आप जी ने कहा कि सांसारिक धन तथा सामान आदि का दहेज लेकर प्रदर्शन करने वाले अभिमानी मनुष्य मनमुख कहलाते हैं। प्रभु के नाम से सजी-संवरी महिला गुरमति में स्वीकृत है। परमात्मा के नाम रूपी दहेज की अन्य कोई दहेज बराबरी नहीं कर सकता :

होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि
सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ।।
हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७९)

श्री गुरु रामदास जी ने तीस रागों में बाणी उच्चारण कर गुरसिक्खों को जीवन जीने का ढंग सिखाया। आप जी ने समझाया कि कोई भी कार्य करने से पूर्व परमात्मा के समक्ष अरदास करनी प्रत्येक गुरसिक्ख का कर्त्तव्य है :

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ।।
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९१)

इस तरह करने से प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है । माया-मोह से भरे संसार में लोभ के अधीन हुए जीव के लिए जीवन का रास्ता बहुत कठिन तथा दुखपूर्ण हो जाता है। इस कलियुग में यदि विकारों के जाल से निकलना चाहे तो वह मुक्ति कैसे प्राप्त कर सकता है? दिनोदिन बढ़ रही मानसिक अशांति को कैसे दूर किया जा सकता है? इन ज्वलंत समस्याओं का समाधान करते हुए श्री गुरु रामदास जी समझाते हैं कि परमात्मा के

नाम का जाप नौका है, जिसके सहारे जीव दुखों से निवृत्त होकर संसार-समुद्र को पार कर सकता है :

कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई
किव छूटह हम छुटकाकी ।।
हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा
हरि जपिओ तरै तराकी ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६६८)

आज हम कई प्रकार के गलत रास्तों पर चल पड़े हैं, प्रभु के नाम-सिमरन से अधिक नाना प्रकार के फोकट कर्मकांडों को महत्त्व दे रहे हैं। गुरु जी के मतानुसार नाम-सिमरन के बिना सारे तीर्थ-स्नान, व्रत, यज्ञ, पुण्य-दान आदि व्यर्थ हैं :

सभि तीरथ वरत जग पुंन तुोलाहा ।।
हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९९)

जिनके अंदर प्रभु का नाम बस जाता है वे किसी के मोहताज नहीं होते। परमात्मा की कृपा से उनके सारे कार्य पूर्ण हो जाते हैं :

जिना अंदरि नामु निधानु
हरि तिन के काज दयि आदे रासि ।।
तिन चूकी मुहताजी लोकन की
हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३०५)

इसलिए जिस सिमरन की बरकत से परमात्मा के साथ प्रीति बनी रहती है, वह सिमरन ही जप-तप, व्रत तथा पूजा है :

सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा
जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२०)

गुरसिक्ख की दिनचर्या के बारे में समझाते हुए गुरु जी कहते हैं कि गुरु का सिक्ख अमृत बेला में उठकर हरि-नाम का सिमरन करता है, स्नान करके सतिगुरु के उपदेश द्वारा अमृतमयी प्रभु के नाम का जाप करता है। इस तरह उसका मन शांत रहता है, विकारों की तरफ नहीं दौड़ता। सूर्योदय होने पर सतिगुरु की बाणी का कीर्तन करता है तथा सारा दिन काम-धंधा करते हुए भी प्रभु को याद रखता है :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ।।
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ।।
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै
सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ।।
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै
बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ।।
जो सासि गिरासि धिआए मेरा
हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३०५)

जो गुरु के हुक्म को समझकर उस पर चलते हैं, परमात्मा उन्हीं जीवों का ही गुरबाणी

गायन करना तथा सुनना कबूल करता है :

सेवक सिख पूजण सभि आवहि
सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३०५)

गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६६९)

गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने वालों को श्री गुरु रामदास जी ने सूही राग में उच्चरित बाणी 'लावां' द्वारा उपदेश दिया कि गृहस्थ में रहते हुए प्रभु को सदैव याद रखना है, परमात्मा के भय तथा प्रेम में रहकर जीवन गुजारना है। यही नहीं, विवाह के समय 'चार लावां' पढ़ने का आदेश श्री गुरु रामदास जी ने प्रत्येक गुरु के सिक्ख को देकर विवाह के समय की पुरानी रीति बदल दी ।

वडहंस राग में 'घोड़ीआं' के अलंकार को लेकर दो 'शबदों' का उच्चारण किया, जिनमें परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग को बताया। विवाह के समय गायन की जाने वाली (पंजाबी सभ्याचार की) 'घोड़ीओं' की तर्ज पर पारमार्थिक उपदेश वाली 'घोड़ीआं' गायन करने का निर्देश दिया ताकि शुभ कार्य करते हुए परमात्मा की निकटता बनी रहे।

धन-जायदाद के लिए पिता से झगड़ा करने वाले पुत्रों के लिए उपदेश दिया :

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ।।
जिन के जणे बडीरे तुम
हउ तिन सिउ झगरत पाप ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२००)

आप जी ने सारा जीवन कठोर तप की तरह बिताया। आप जी की बाणी वैराग्य तथा प्रेम से भरपूर है। भट्ट बल जी के अनुसार जिस गुरु का सिमरन करने से हृदय में परमात्मा का नाम दिनोदिन प्रफुल्लित होता है, मन शांत हो जाता है, ऋद्धियां-सिद्धियां तथा नौ निद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। जिस गुरु की शरण में जाने से प्रभु-मिलाप होता है, उस गुरु (श्री गुरु रामदास जी) का सिमरन करो तथा संगत के साथ मिलकर धन्य-धन्य कहों :

जिह सतिगुर सिमरंत
नयन के तिमर मिटहि खिनु ।।
जिह सतिगुर सिमरंथि
रिदै हरि नामु दिनो दिनु ।।
जिह सतिगुर सिमरंथि
जीअ की तपति मिटावै ।।
जिह सतिगुर सिमरंथि
रिधि सिधि नव निधि पावै ।।
सोई रामदासु गुरु बल्य भणि
मिलि संगति धंनि धंनि करहु ।।
जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऐ
सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४०५)

श्री गुरु रामदास जी की चुनिंदा बाणियों सम्बंधी वृत्तांत

- स. निरवैर सिंघ अर्शी *

आदि गुरु, गुरु अंगद की, गुरु अमरदास की रीत जिती।
गुरु घर की जेतक थी मर्यादा, रामदास तब गही तिती।
गुरु उचरैं बानी, अंम्रित सानी, बेद समानी, सुखदानी।
जो सुन नर नारी, कटैं बिकारी,
लहिं फल चारी, मुदखानी।[१]

तात्पर्य— श्री गुरु रामदास जी ने भी अपने पूर्व गुरुओं— श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी की भांति अमृतमयी बाणी उच्चारण की और सिक्ख संगत के तप्त हृदय को शीतलता प्रदान कर सुख-शान्ति दी।

सन् १५७४ से १५८१ ई. तक के गुरुआई के लगभग सात वर्षों में श्री गुरु रामदास जी ने विषय-वस्तु और आकार पक्ष से बाणी उच्चारण की जो कि सारी की सारी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज मिलती है। आप जी की बाणी में काव्य-रूपों की विभिन्नता है, काव्य एवं राग का सुमेल है और ऊँचे दैवी मंडलों की व्यंजना है। श्री गुरु रामदास जी ने दुपदे, चउपदे, पंचपदे, छिपदे, काफीआं, असटपदियां, घोड़िआं, सोलहे, छंत, सलोक, पउड़ियाँ आदि काव्य-रूपों में बाणी उच्चारण की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज ३१ रागों में से ३० रागों में आप जी की बाणी उपलब्ध है।

लोक-काव्य रूपों में से श्री गुरु रामदास जी ने पहरे, छंत, वणजारा, घोड़िआं और करहले के काव्य-रूप प्रयोग किए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज २२ वारों में से ८ वारें आप जी द्वारा उच्चरित हैं, जबकि शेष १४ वारें— श्री गुरु नानक देव जी (३), श्री गुरु अमरदास जी (४), श्री गुरु अरजन देव जी (६) और भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी (१) उच्चरित हैं। श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चरित आठ वारें हैं— सिरी राग की वार, गउड़ी की वार, वडहंस की वार, बिलावल की वार, बिहागड़े की वार, सोरठि की वार, सारंग की वार और कानड़े की वार।

श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चरित समूची बाणी विचार, भाव और कलात्मक दृष्टि से अपने आप में संपूर्ण है।

यहाँ पर हम श्री गुरु रामदास जी की निम्नलिखित बाणियों के सम्बंध में संक्षिप्त रूप से विचार करने का यत्न कर रहे हैं :—

१. घोड़ीआं : श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ५७५-५७६ पर वडहंस राग में श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चरित दो शबद 'घोड़ीआं' शीर्षकाधीन दर्ज हैं। लोक-साहित्य में 'घोड़ीआं' से तात्पर्य ख़ुशी के वे गीत हैं, जो दूल्हे की बहनें, ताई, चाची आदि मिल कर, दूल्हे को सेहरा बाँध कर घोड़ी पर चढ़ते समय गाया करती हैं। भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, ''श्री गुरु रामदास जी ने असभ्य गीतों की कुरीति को दूर करने के लिए 'घोड़ीआं' शीर्षकाधीन बाणी उच्चारण की, जिसमें लोक-परलोक में सुख प्राप्त करने का उपदेश है।''[२]

*यूको बैंक बिल्डिंग, नवीं आबादी, श्री अनंदपुर साहिब, जिला रूप नगर— १४०११८, फोन : ९८८८६-३९४१३

देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम ।।
धंनु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम ।।. . .
देह पावउ जीनु बुझि चंगा राम ।।
चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम ।।. . .
कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ राम ।।
तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम ।।
(वडहंस, पन्ना ५७५)

तात्पर्य— शरीर एक सुंदर घोड़ी के समान है, जिस पर चढ़ कर परमात्मा तक पहुँचना है। नाम रूपी जीन डाल कर, ज्ञान रूपी कंड्यारा डाल कर और प्रभु-प्रेम रूपी चाबुक मार कर नाम दृढ़ करने की युक्ति दर्शायी गई है। ऐसी घोड़ी की सवारी जल्दी ही पति-परमेश्वर के साथ मिलाप करवा देती है अर्थात् :

जितु हरि प्रभु जापै सा धंनु साबासै
धुरि पाइआ किरतु जुड़ंदा ।।
चड़ि देहड़ि घोड़ी बिखमु लघाए
मिलु गुरमुखि परमानंदा ।।
हरि हरि काजु रचाइआ पूरै
मिलि संत जना जंञ आई ।।
जन नानक हरि वरु पाइआ मंगलु
मिलि संत जना वाधाई ।। (वडहंस पन्ना ५७५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'घोड़ीआं' बाणी का उच्चारण केवल श्री गुरु रामदास जी ने ही किया है।

२. लावां : गुरबाणी में ''एका पुरख सबाई नार'', ''तुम पिर हम बहुरीआ राम''[३] और ''इसु जग महि पुरखु एकु है होरु सगली नार सबाई''[४] का संकल्प है। रागु सूही की चार लावां में भी इसी वृत्ति के अनुसार जीव रूपी स्त्री का परमात्मा रूपी पति के साथ मेल दर्शाया गया है। मेल-मिलाप के मार्ग की रुकावटों और उन्हें दूर करने का उपाय एक अनूठे ढंग के साथ पेश किया गया है।

'लावां' में विवाह को प्रवृत्ति कर्म कहा गया है। प्रवृत्ति का अर्थ है— समाज में फैलना, प्रविष्ट होना। यह निवृत्ति कर्म त्याग के कर्मों के विपरीत है। ... चार लावां ज़िंदगी के चार पड़ाव हैं।[५]

पहली लाव की अवस्था आत्मविश्वास परिपक्व करने की है :

धरमु द्रिड़हु हरि नामु धिआवहु
सिम्रिति नामु द्रिड़ाइआ ।।
सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु
सभि किलविख पाप गवाइआ ।।
सहज अनंदु होआ वडभागी
मनि हरि हरि मीठा लाइआ ।।
जनु कहै नानकु लाव पहिली
आरंभु काजु रचाइआ ।। (सूही, पन्ना ७७३)

दूसरी लाव के अनुसार सतिगुरु के संयोग के पश्चात् मन भय और विकारों से रहित हो जाता है। फिर आनंद ही आनंद छा जाता है :

अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको
मिलि हरि जन मंगल गाए ।।
जन नानक दूजी लाव चलाई
अनहद सबद वजाए ।। (सूही, पन्ना ७७४)

तीसरी लाव में प्यार और वैराग्य की अवस्था का बयान है :

हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी
हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ।।
जनु नानकु बोले तीजी लावै
हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ।। (सूही, पन्ना ७७४)

चौथी लाव में पहले सहज प्राप्त होता है और फिर पति-परमात्मा :

हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ

हरि पाइआ बलि राम जीउ ।।
गुरमुखि मिलिआ सुभाइ
हरि मनि तनि मीठा लाइआ
बलि राम जीउ ।।
हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ
अनदिनु हरि लिव लाई ।।
मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी
हरि नामि वजी वाधाई ।।
हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ
धन हिरदै नामि विगासी ।।
जनु नानकु बोले चउथी लावै
हरि पाइआ प्रभु अविनासी ।।

(सूही, पन्ना ७७४)

३. करहले : 'करहले' शीर्षकाधीन श्री गुरु रामदास जी के दो शबद राग गउड़ी में दर्ज मिलते हैं। दोनों शबद दस-दस पदों के हैं। इस शीर्षकाधीन किसी अन्य गुरु साहिब या भक्त साहिब की बाणी नहीं मिलती। शब्दों का समूचा प्रभाव वैराग्यमय है।

'करहले' का शाब्दिक अर्थ 'हल्ला करना' या 'प्रोत्साहन देना' है। इन शब्दों में जीव को आध्यात्मिक मंडल में विजयी होने के लिए उत्साहित किया गया है :

मन करहला सतिगुरु
पुरखु धिआइ ।। १ ।। रहाउ ।।
मन करहला वीचारीआ
हरि राम नाम धिआइ ।।
जिथै लेखा मंगीऐ हरि आपे लए छडाइ ।। . . .
मन करहला मेरे पिआरिआ
सतसंगति सतिगुरु भालि ।।
सतसंगति लगि हरि धिआईऐ
हरि हरि चलै तेरै नालि ।। *(गउड़ी, पन्ना २३४)*

'करहला' सिंधी और प्राचीन राजस्थानी (डिंगल) में ऊँट को भी कहते हैं। अर्थात् मन मारुस्थल में भटक रहे ऊँट की तरह है। यदि यह गुरु की शरण में आ जाये, तो मोह-माया की सभी दुविधाएं ख़त्म हो सकती हैं और मुक्त हो सकते हैं :

करहले मन परदेसीआ किउ मिलीऐ हरि माइ ।।
. . .
मन करहला तूं चंचला
चतुराई छडि विकरालि ।।
हरि हरि नामु समालि तूं
हरि मुकति करे अंत कालि ।।६ ।।
मन करहला वडभागीआ
तूं गिआनु रतनु समालि ।।
गुर गिआनु खड़गु हथि धारिआ
जमु मारिअड़ा जमकालि ।।

(गउड़ी, पन्ना २३५)

४. मारू सोलहे : राग मारू में (पन्ना १०६९-१०७१) एक विशेष छंद रूप 'सोलहे' आया है। महला १, महला ३, महला ४ और महला ५ के क्रमश: २२, २४, २ और १४ सोलहे मिलते हैं। सोलहा १६ पदों का शबद होता है, जिसका प्रत्येक पदा तीन पंक्तियों का होता है। तीसरी पंक्ति पहली दोनों पंक्तियों से लम्बी होती है, जबकि पहले और दूसरे विश्राम का अनुप्रास मिलता है :

सचा आपि सवारणहारा ।।
अवर न सूझसि बीजी कारा ।।
गुरमुखि सचु वसै घट अंतरि
सहजे सचि समाई हे ।।
सभना सचु वसै मन माही ।।
गुर परसादी सहजि समाही ।।

गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ
गुर चरणी चितु लाई हे ।। (मारू, पन्ना १०६९)

इस छंद की संगीतकता स्पष्ट ही है। सोलहा, जिसके छंद का नाम 'घनकला' या 'चित्रकला' है, उच्चारण में एक अनोखा रंग बाँध देता है।

सोलहों में गुरु और साधसंगत के माध्यम से परमेश्वर की प्राप्ति के यत्न बताए गए हैं। सतिगुरु से विमुख होकर अपमानित होना पड़ता है और यह दुर्दशा गुरु की शरण में जाने से ही दूर हो सकती है। क्षमालु सतिगुरु, जीव के तमाम गुनाहों को क्षमा कर, उसे फिर से अपने बना लेता है :

बिनु सतिगुर जो दूजै लागे ।।
आवहि जाहि भ्रमि मरहि अभागे ।।
नानक तिन की फिरि गति होवै
जि गुरमुखि रहहि सरणाई हे ।।४।।
गुरमुखि प्रीति सदा है साची ।।
सतिगुर ते मागउ नामु अजाची ।।
होहु दइआलु क्रिपा करी
हरि जीउ रखि लेवहु गुर सरणाई हे ।।
(मारू, पन्ना १०६९)

सोलहों में दयालुता, विनम्रता, उदारता और निर्धनता का पक्ष भी लिया गया है :

किस ही जोरु अहंकार बोलण का ।।
किस ही जोरु दीबान माइआ का ।।
मै हरि बिनु टेक धर अवर न काई
तू करते राखु मै निमाणी हे ।।१३ ।।
निमाणे माणु करहि तुधु भावै ।।
होरि केती झखि झखि आवै जावै ।।
जिन का पखु करहि तू सुआमी
तिन की ऊपरि गल तुधु आणी हे ।।
(मारू, पन्ना १०७१)

५. वणजारा :

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'वणजारा' शीर्षक के अंतर्गत केवल एक ही शबद मिलता है और इस शबद के उच्चारणकर्ता श्री गुरु रामदास जी हैं। यह शबद छ: पंजतुके पदों में विभाजित हुआ है और इसमें छ: 'रहाउ' भी हैं। सभी 'रहाउ' की पंक्ति में परमेश्वर का नाम जपने पर ज़ोर दिया गया है।

इस शबद में मानव जीव को 'वणजारा' (व्यापारी) की उपमा दी गई है, जो कि इस जगत में वणज (वाणिज्य व्यापार) करने के लिए आया है। यदि वह हरि के नाम का व्राणिज्य कर ले तो फिर लाभ ही लाभ है :

हरि हरि उतमु नामु है
जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ।।
हरि जीअ सभे प्रतिपालदा
घटि घटि रमईआ सोइ ।।. . .
जब लगु जोबनि सासु है
तब लगु नामु धिआइ ।।
चलदिआ नालि हरि चलसी
हरि अंते लए छडाइ ।।. . .
जिन कउ पूरबि लिखिआ
से आइ मिले गुर पासि ।।
सेवक भाइ वणजारिआ
मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ।।
धनु धनु वणजु वापारीआ
जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि ।।
गुरमुखा दरि मुख उजले
से आइ मिले हरि पासि ।। (सिरी, पन्ना ८१)

६. वारां : 'वार' के अर्थ कई प्रकार से किये जाते हैं, जैसे वार करना, हमला करना, दोहराना, बार-बार कहना, सप्ताह के दिन, दरवाज़ा, यश या स्तुति करना, न्यौछावर-कुर्बान-बलिहारी

जाना आदि। साहित्य में 'वार' एक ऐसी काव्य-रचना है, जिसमें किसी पराक्रमी के पराक्रम का बयान छंदबद्ध रूप में किया जाता है। डॉ. गोपाल सिंघ दरदी के अनुसार 'वार' (जिसका आधार शायद यूनानी 'ओड' अर्थात् 'मान' कहा जा सकता है) आम तौर पर बहादुर योद्धाओं की प्रशन्सा गायन करने के लिए रची जाती है। अंग्रेज़ी में 'ओड' की संरचना किसी हद तक जटिल और अधिक विस्तार में होती है, परंतु पंजाबी में 'वार' का आशय सिवाए गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित 'वारों' में (जिनका उद्देश्य या ईश्वर की स्तुति गायन करना या फ़िज़ूल के वहम-भ्रम के विरुद्ध मानव मन को तैयार करना है) युद्धों, संघर्षों का इन्न-बिन्न नक्शा चित्रित करना और ख़ास-ख़ास व्यक्तियों, जिनसे सम्बन्धित वह वार लिखी गई हो, की बहादुरी के यश गायन करना रहा है।[६]

'वार' एक लोक-काव्य है और केवल पंजाब की उपज है। इसका वर्चस्व बनने में किसी बाहरी परंपरा या संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ा। पंजाबी साहित्य में दो प्रकार की वारें मिलती हैं— वीर रसी और आध्यात्मिक। वीर रसी वारें आध्यात्मिक वारों से पहले अस्तित्व में आईं, क्योंकि इनका संकेत हमें हमारी सबसे पुरातन और प्रमाणिक आध्यात्मिक वारों (जिनका मूल स्रोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब है) से मिलता है, जबकि कुछ वारों को 'टुंडे अस राजै की धुनी', 'ललां बहलीमा की धुनि', 'राइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि', आदि पर गायन करने की हिदायत की गई है।

"श्री गुरु ग्रंथ साहिब में परमेश्वर की महिमा भरी बाणी, जो पउड़ियों, छंदों के साथ सलोक मिला कर लिखी गई है, 'वार' नाम से प्रसिद्ध है।"[७] यहाँ पर हम 'वार' से अभिप्राय 'आध्यात्मिक वारों' से ही लेंगे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल बाईस वारें हैं, जिनमें से एक वार रामकली राग में भाई सता जी—भाई बलवंड जी द्वारा उच्चरित हैं। तीन वारें (आसा, माझ और मलार राग में) श्री गुरु नानक देव जी की, चार वारें (गूजरी, सूही, रामकली और मारू राग में) श्री गुरु अमरदास जी की और छः वारें (गूजरी, जैतसरी, रामकली, गउड़ी, मारू और बसंत राग में) श्री गुरु अरजन देव जी की हैं। शेष की आठ वारें श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चरित हैं। ये आठ वारें, जिनमें से तीन वारों को ख़ास ध्वनियाँ के अनुसार गायन करने का आदेश है, इस प्रकार हैं :

१. सिरी राग की वार महला ४

२. गउड़ी की वार महला ४

३. वडहंस की वार महला ४—ललां बहलीमा की धुनि गावणी

४. बिलावल की वार महला ४

५. बिहागड़े की वार महला ४

६. सोरठि की वार महला ४

७. सारंग की वार महला ४— राइ महमे हसने की धुनि

८. कानड़े की वार महला ४— मूसे की वार की धुनी।

वार सदा पउड़ियों में ही उच्चारण की जाती रही है, परंतु श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पादना करते समय प्रत्येक पउड़ी से पूर्व एक या अधिक सलोक, उस पउड़ी का भाव और ज्यादा अच्छी तरह से स्पष्ट करने के लिए जोड़ दिए हैं।[८] भाई सता जी-भाई बलवंड

जी की रामकली राग की वार और बसंत की वार महला ५ में सलोक दर्ज नहीं मिलते।

श्री गुरु रामदास जी की बाणी की एक ख़ास विशेषता यह भी है कि आप जी ने भव्यता के साथ-साथ सदाचार का पक्ष भी पूरी तरह से लिया है। भव्यता और सदाचार का सिक्ख विचारधारा के अनुसार गहरा सम्बंध है। डॉ. शेर सिंघ ने गुरु साहिबान की इस विचारधारा को 'सुहजमई आदर्शवाद' का नाम दिया है।[९] परमात्मा की उपमा, परमात्मा की सर्वव्यापकता, परमात्मा की सर्वसम्पन्न हस्ती, नाम की महिमा आदि विषय इन वारों में पूरी तरह से व्यापक हैं। गउड़ी की वार महला ४ की ऐतिहासिक महत्ता भी है। इस वार में दूसरे और तीसरे सतिगुरु का विरोध करने वाले अर्थात् गुरु-घर के ईर्ष्यालु लोगों की दयनीय हालत को विस्तार में बयान किया गया है कि कैसे वे सच्चे गुरु के दर से भटक कर यहाँ-वहाँ धक्के खा रहे हैं। यह भी बताया है कि यदि वे पुनः गुरु की शरण में आ जाएँ तो क्षमा किए भी जा सकते हैं, क्योंकि शरण में आए हुए को गले लगाना सतिगुरु का विरद है :

सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है
सभु देखै ब्रहमु इकु सोइ ।।
निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे
विचहु तिसटिआ न कोइ ।।
सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा
तिस दा बुरा किउ होइ ।।
सतिगुर नो जेहा को इछदा तेहा फलु पाए कोइ ।।
नानक करता सभु किछु जाणदा
जिदू किछु गुझा न होइ ।।

(गउड़ी की वार, पन्ना ३०२)

निरवैरै नालि जि वैरु रचाए
सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ ।।. . .
जे गुर की सरणी फिरि ओहु आवै
तां पिछले अउगण बखसि लइआ ।।

(गउड़ी की वार, पन्ना ३०७)

७. छके छंत : अमृत बेला में गायन किए जाने वाले आसा राग में श्री गुरु रामदास जी की यह बाणी उनके गहरे प्रेम-अनुभव, विह्वलता और काव्य-प्रतिभा की सूचक है। यह चार तुके छंतों वाली बाणी है और चार-चार छंतों के छः छकों में विभाजित है। तकरीबन सभी बड़े गुरुद्वारों में अमृत बेला में इन छंतों को आसा की वार के सलोकों और पउड़ियों के साथ मिल कर गायन किया जाता है।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित आसा की वार की २४ पउड़ियां हैं और ये छंत भी २४ ही हैं। कुछ संप्रदायी ज्ञानियों का विचार है कि इन छंतों की रचना श्री गुरु रामदास जी ने सिक्खों की विनय को स्वीकार कर की, ताकि अमृत बेला में आसा की वार के साथ मिला कर पढ़े जा सकें। 'सोहिला' और 'बारह माहा मांझ' की रचना भी सिक्खों की विनय को स्वीकार कर की गई बतायी जाती है।[१०]

'छके छंतों' में राग का आवेश शिखर तक पहुँचा हुआ है।[११] "गुरु और सिक्ख की प्रीति का जो चित्र इन छंतों में चित्रित किया गया है, वो काव्य-कला का अति उत्तम नमूना है।. . . छके छंतों में श्री गुरु रामदास जी के प्रीति-अनुभव इतनी प्रवीणता के साथ साकार हुए हैं कि उन्हें मानने वाला पाठक सामूहिक स्तर पर प्रेम की द्रव्यता, कोमलता, चाह, ख़ुशी तथा अन्य अनेक गुणों से वाकिफ़ होकर अपने जीवन-अनुभव में एक कीमती और रसमयी विस्तार करता है।"[१२]

इस अति भव्य बाणी में प्रभु-प्रेम की बात है, मिलाप के लिए तड़प रही विरहिणी के मनोभाव हैं और ''बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु''[१३] की व्याख्या है। विरह-भाव की पुकार, कसक, और पीड़ा का बयान है :

हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले
अणीआ राम राजे ।।
जिसु लागी पीर पिरंम की
सो जाणै जरीआ ।। (पन्ना ४४९)

अथवा :

गुरमुखि पिआरे आइ मिलु
मै चिरी विछुंने राम राजे ।।
मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ
हरि नैण रसि भिंने ।। (पन्ना ४४९)

प्रियतम प्यारे के मिलाप के बाद परम आनंद की अवस्था भी बयान की गई है :

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ
हरि सजणु लधा राम राजे ।।. . .
धुरि भाग वडे हरि पाइआ
नानक रसि गुधा ।। (पन्ना ४४९)
गुरसिखा मनि वाधाईआ
जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ।।
कोई करि गल सुणावै हरि नाम की
सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ।।
हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि
जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ।।
जन नानकु हरि हरि होइआ
हरि हरि मनि वुठा ।। (पन्ना ४५१)

मिलन की घड़ियों में ''अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ।।''[१४] और ''पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ।।''[१५] वाली ही सुर मिलती है। समूची बाणी में श्रृंगार रस प्रधान है।

हवाले और टिप्पणियाँ :

१. ज्ञानी गिआन सिंघ, पंथ प्रकाश, १८८९ ईस्वी, पृष्ठ ७५-७६
२. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुर शब्द रत्नाकर (महान कोश), १९६०, पृष्ठ ३३५
३. सूही महला ५, पन्ना ७७९
४. महला ३, वार वडहंस, पन्ना ५९१
५. डॉक्टर त्रिलोचन सिंघ, गुरु रामदास दा साहितक ते दार्शनिक दृष्टिकोण, पंजाबी दुनिया, अक्तूबर-नवंबर १९६२, पृष्ठ ४९
६. डॉक्टर गोपाल सिंघ दरदी, साहित दी परख, १९५३, पृष्ठ ६८-६९
७. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुर शब्द रत्नाकर (महान कोश), १९६०, पृष्ठ ८१७
८. डॉक्टर सुरिंदर सिंघ कोहली, ए क्रिटीकल स्टडी ऑफ आदि ग्रंथ, १९६१, पृष्ठ ७०
९. डॉक्टर शेर सिंघ, दर्शन ऑफ सिखिज़म, १९६६, पृष्ठ २११
१०. प्रिंसिपल संत सिंघ सेखों, पंजाबी कावि शिरोमणि, १९६४ई.
११. प्रोफ़ेसर राम सिंघ, गुरु रामदास जी दे छके छंतां दा भाव-प्रबंध, पंजाबी दुनिया, अक्तूबर-नवंबर १९६२, पृष्ठ ५८
१२. सलोक शेख फ़रीद जी, पन्ना १३७९
१४. रामकली महला ३ अनंदु, पन्ना ९१७
१५. वही, पन्ना ९२२
१५. डॉक्टर गोपाल सिंघ दरदी, साहित दी परख, १९५३, पृष्ठ ६८-६९

श्री गुरु रामदास जी की बाणी में प्रेम-तत्त्व

-डॉ. जगजीत कौर (दिवंगत)

दिव्य आध्यात्म शक्ति, प्रभु-प्रेम, गुरु-भक्ति, लोक-सेवा, समाज-कल्याण और पंथक विकास को समर्पित सिक्ख पंथ की चतुर्थ ज्योति साहिब श्री गुरु रामदास जी का जीवन, जहां समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए अद्भुत प्रेरणा-स्रोत है, वहीं उनकी दिव्य गुणों से परिपूर्ण काव्यमय बाणी, निराशा, दुख और संताप के गहन गर्त में डूबे प्राणी को अदम्य उत्साह, असीम आनंद और दिव्य शांति के लोक में ला खड़ा करती है । गुरु-भक्ति, प्रभु-प्रेम से विगलित गुरु-हृदय की गहन तल-गहराइयों और प्रेमानुभूति की निश्छल भाव-तरंगों से अभिभूत गुरुदेव जी की रहस्यमयी विस्मादित रंगत में रंगी बाणी जिज्ञासु को प्रेम के रंग में सराबोर करने की क्षमता रखती है, इसीलिए क्या देशीय और क्या विदेशी इतिहासकारों और काव्यकारों, सभी ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। प्रसिद्ध इतिहासकार ग्रीनलीज़ गुरु जी को 'प्रेम का अग्रदूत' (१श्चश्ह्यह्लह्यद्ग श्रद्ध स्रु1द्ग) बताता है, वहीं प्रो. पूरन सिंघ गुरुदेव की बाणी में दिव्य प्रेम की तरंगें स्वत: सिद्ध प्रस्फुटित होती हुई देखते हैं।

इसीलिए तो भट्ट साहिबान ने गुरु-चरणों पर नतमस्तक हो, गुरु-प्रशस्ति में जिन १२३ सवैयों की रचना की और जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना १३८९-१४०९ पर संकलित हैं, उनमें बड़ा भाग-- ६० सवैये श्री गुरु रामदास जी की प्रशस्ति में रचे गए हैं। अंत में भट्ट कीरत जी ने हमें संदेश दिया है कि मानवता का कल्याण इसी में है कि प्रेम और भक्ति के दिव्य स्वरूप गुरु-चरणों पर समर्पित हो जायें :

हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही
अंम्रितु छाडि बिखै बिखु खाई ।।
माया मोह भरम पै भूले
सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ।।
इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति
तिह मिलंत जम त्रास मिटाई ।।
इक अरदासि भाट कीरति की
गुर रामदास राखहु सरणाई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४०६)

गुरु साहिब का अपना जीवन कितनी दिव्य शक्तियों से पूर्ण है! सात वर्ष के अनाथ (बाल) नानी की अंगुली पकड़ बासरके गांव आते हैं, सिर पर घुंघनियों का थाल लिए गली-गली घूमते हैं। साथ में सच्चे गुरु की खोज भी समाहित है और फिर जब सच्चे गुरु की प्राप्ति भी हो गई। श्री गुरु अमरदास जी का वरद हस्त सिर पर रखा गया। गुरु जी के दामाद बन गए। बीबी भानी जी से संयोग हो गया। तब भी अपने मूल को भूले नहीं। बाउली की सेवा, लंगर-

पंगत-संगत की सेवा, सिर पर टोकरी रखी रही। सेवा-कार्यों में व्यस्त चित्त गुरु-चरणों पर ही समर्पित रहा। विश्व को संदेश दिया कि गुरु की शरण व प्रभु-चरणों का ध्यान ही परमोच्च पद-प्राप्ति में सहायक होता है :

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा
सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ।।
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता
गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १६७)

श्री गुरु रामदास जी सितंबर, १५७४ से सितंबर, १५८१ ई. तक गुरुआई पर आसीन रहे। आपका प्रकाश (जन्म) लाहौर, चूनी मंडी में पिता भाई हरिदास जी और माता दया कौर जी के घर सन् १५३४ में हुआ। गुरगद्दी पर आप केवल सात वर्ष ही विराजमान रहे, परंतु आपने पंथक विकास के लिए अद्भुत कार्य किए। अमृत सरोवर की खुदाई आरंभ करवाई, 'गुरु का चक्क' नामक नगर बसाया, जो बाद में 'गुरु रामदास पुर' और अमृत सर (सरोवर) पूर्ण होने पर इसी नाम पर 'अमृतसर' कहलाया। गुरु जी ने इसके विकास में पूरा योगदान दिया। गुरु जी अकबर बादशाह से भी मिलने गये और पंथ-हितैषी कार्यों का ही पक्ष-समर्थन करते रहे। इतने कम समय में जो दिव्य बाणी की देन मानवता को दी, उस अनमोल बाणी-भंडार के लिए गुरु जी के उपकार-कार्य का मूल्यांकन असंभव है।

गुरु साहिब ने ३० रागों में बाणी उचारण की। सारी बाणी में विचारधारा गुरु नानक पातशाह जी द्वारा निर्दिष्ट मूल विचार ही है। इनमें ब्रह्म, परमात्मा, जीवात्मा, आवागमन, बंधन, मुक्ति, गुरु, गुरु- प्रदत्त ज्ञान, नाम-सिमरन, मन, कर्म-सिद्धांत, सतसंगति, कर्मकांडों का निषेध, सदाचारक मूल्यों की महत्ता आदि विषयों पर सुंदर अभिव्यक्ति की गई है। इन सबके मध्य से जो स्वर मुखरित होकर उभरता है वो है— प्रभु-बिछोह से उत्पन्न विरह, वियोग, तीव्र वेदना और मिलन की उत्कंठा। यद्यपि अनेक काव्य-रूपों में बाणी-सृजना की गई है, जैसे पहरे, वणजारा, करहले, घोड़ीआं, वार और छंत, तथापि इन काव्य-रूपों में सत्य स्वरूप परमात्मा की यश-कीर्ति, सदाचारयुक्त जीवन-दिशा और सामाजिक विषयों को भी लिया गया है, परंतु मुख्य स्वर वही प्रभु-बिछोह और उससे उत्पन्न वेदना का ही है। प्रभु-प्रेम में भाव-विह्वलता और भावातिरेकता चरम सीमा तक जा पहुंचती है :

हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ।।
कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ।।
हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा
मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९४)

अंतरवेदना की अभिव्यक्ति इतनी तीव्र भावुकता से हुई है कि यह जिज्ञासु को भावविभोर कर जाती है :

हरि अंम्रित भिंने लोइणा
मनु प्रेमि रतंना राम राजे ।।

मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ।।
गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ।।
जनु नानकु मुसकि झकोलिआ
सभु जनमु धनु धंना ।।१ ।।
हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ
अणीआले अणीआ राम राजे ।।
जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४४८)

"हरि अंम्रित भिंने लोइणा", "मै नीरु वहे वहि चलै जीउ", "जिसु लागी पीर पिरंम की" जैसी वेदनाजनित अनुभूतियां बाणी-प्रेमियों को सहज ही प्रेम-बाणों से बेंध जाती हैं। अकाल पुरख प्रभु परमात्मा से मिलने की उत्कंठा गुरु-चरणों में विनय-विनती के उस स्तर पर ला खड़ा करती है जहां वह बिलखने लगती है :

गुरमुखि पिआरे आइ मिलु
मै चिरी विछुंने राम राजे ।।
मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ
हरि नैण रसि भिंने ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४४९)

जीवात्मा प्रभु परमात्मा से मिलने को उत्कंठित हो उठती है :

हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै
जिउ त्रिखावंतु बिनु नीर ।।१ ।।
मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ।।
हमरी बेदन हरि प्रभु जानै
मेरे मन अंतर की पीर ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८६१)

अपने इष्टदेव के दर्शन प्राप्त करके ही उसे आनंद की प्राप्ति होती है :

मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ ।।
हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६७०)

अपने इष्टदेव प्रभु के दर्शन प्राप्त कर वह उसी प्रकार खिल उठती है जैसे कमल पुष्प सूर्य को देख कर, कमलिनी चंद्र के दर्शन कर और मोर घनघोर बादलों को देख प्रसन्न हो उठता है :

— प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी
जिव सूरजु कमलु निहारे ।।
मेर सुमेर मोरु बहु नाचै
जब उनवै घन घनहारे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९८३)

— हरि के संत मनि प्रीति लगाई
जिउ देखै ससि कमले ।।
उनवै घनु घन घनिहरु गरजै
मनि बिगसै मोर मुरले ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९७५)

अपने उस एकमात्र इष्टदेव से जीवात्मा मिले तो कैसे ? निश्चय ही सतिगुरु की शरण में आकर उस मार्ग का पता चलता है जिस साधना-मार्ग पर चलकर इष्टदेव से मिलन संभव है, इसलिए ऐसे महान गुरुदेव के चरणों पर जीवात्मा अपना सर्वस्व कुर्बान करने को प्रस्तुत है, जो उसे प्रभु से मिलाता है :

सेज एक एको प्रभु ठाकुरु ।।
गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ।।१ ।।

मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा ।।
गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ।।१ ।। रहाउ ।।
मै अवगण भरपूरि सरीरे ।।
हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ।।२ ।।
जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ ।।
से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ।।३ ।।
हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ।।
नानक गरीब राखहु हरि मेरे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५६०)

जीवात्मा प्रभु –प्राप्ति के लिए अपने जीवन का दान करने को प्रस्तुत है :

तनु मनु काटि काटि सभु अरपी
विचि अगनी आपु जलाई ।।४।।
पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ।।५ ।।
नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै
हरि मेलि लैहु वडिआई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७५७)

गुरु–चरणों पर की गई अरदास–जोदड़ी अंत में सार्थक होती है। गुरु कृपावान होता है, मार्ग बताता है। उस मार्ग पर चलकर हरि, प्रिय, प्रभु की तलाश की जाती है। भाग्योदय होता है। जीव बधाई का पात्र बनता है। साजन–प्रियतम तड़पती, बिलखती जीवात्मा को गुरु- कृपा से प्राप्त होता है :

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ
हरि सजणु लधा राम राजे ।।
कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा।।
हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ।।
धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४४९)

सतिगुरु महान है, दयावान है। वो ही कृपा कर जीव को मार्ग सुझाता है । गुरु अमृत- कुंड है। गुरु की देही अमृत-रस से सिक्त है। जिज्ञासु को उसी नाम-अमृत-कुंड से अमृत के छींटे प्राप्त होते हैं। गुरु के मधुर बोल, गुरु की अमृत बाणी, अमृतमयी उपदेश को जो जिज्ञासु प्रेम-श्रद्धा सहित ग्रहण करता है वह परम संतोष की अवस्था पर पहुंच जाता है, भर-भर अंजुलि प्रेम-रस नाम-अमृत का पान करता है, छक जाता है, पूर्ण तुष्टि की अवस्था पर पहुंच जाता है। गुरु की बख्शिश, गुरु की अपार कृपा से हरि-प्रभु से मिलन संभव होता है, इधर-उधर का भटकना समाप्त होता है । जीव हरि प्रभु से संयोग की उस स्थिति पर पहुंचता है, जहां उसका अपना अस्तित्व हरि प्रभु के अस्तित्व में समाहित हो जाता है :

गुर अंम्रित भिंनी देहुरी अंम्रितु बुरके राम राजे।।
जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंम्रिति छकि छके।।
गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके।।
हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४४९)

ऐसे गुरुदेव, जो लोहे जैसे मनुष्य को सोना बना देते हैं, पारस हैं। गुरुदेव की महानता अकथनीय है। सतिगुरु की महानता का वर्णन गुरुदेव जी लगभग अपनी संपूर्ण बाणी में ही करते हैं, परंतु गउड़ी राग की वार में तो वे गुरु की प्रशस्ति करते हुए भावविभोर हो जाते हैं :

गुरसिखा कै मनि भावदी
गुर सतिगुर की वडिआई।।
हरि राखहु पैज सतिगुरू की नित चड़े सवाई।।
गुरसतिगुर कै मनि पारब्रहमु है पारब्रहमु छडाई।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३१०)

सतिगुरु की महिमा दिनोदिन सवाई होती रहती है। अन्य कोई उस स्तर तक पहुंच ही नहीं सकता :

गुर की वडिआई नित चड़ै
सवाई अपड़ि को न सकोई ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३०९)

सतिगुरु के प्रति अनन्य भक्ति-भावना, प्रेम, विश्वास, श्रद्धा में श्री गुरु रामदास पातशाह जी की निजी अनुभूतियां समाहित हैं। अनाथ बाल के सिर पर वयोवृद्ध श्री गुरु अमरदास जी ने जब अपना वरद हस्त रखा तो बाल को पितातुल्य गुरु का रूहानी प्रेम प्राप्त हुआ और इसीलिए उस पिता-गुरु में उन्हें परमेश्वर पारब्रह्म की ज्योति प्रतिभासित होती प्रतीत हुई, अपनी तुच्छता, अपनी अल्पज्ञता का आभास हुआ, गुरु का दृढ़ सहारा आत्मबल का संबल बनता प्रतीत हुआ :

हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ।।
सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि
जगत पित भावहिगे।।
जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ।।
मोहि दूजी नाही ठउर
जिसु पहि हम जावहगे।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३२१)

सतिगुरु अंतर की वेदना को समझने वाला है। वही केवल समर्थ शक्ति है, जो कुल दुख, संताप, वेदना को दूर करने की क्षमता रखता है— *''हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ।।''* इसलिए आपकी शरण में आए हैं :

हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई
करि दइआ नामु परगासि ।।१ ।।
मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०)
हम चेरी तू अगम गुसाई
किआ हम करह तेरै वसि पईआ ।।
दइआ दीन करहु रखि लेवहु
नानक हरि गुर सरणि समईआ ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३६)

स्थिति यह हो गई है कि सतिगुरु के वचन परमेश्वर के वचन के तुल्य अटल सत्य हैं — ''जो बोले पूरा सतिगुरू सो परमेसरि सुणिआ।।'' गुरु के बोले रुष्ट शब्द भी प्रिय लगते हैं

जे गुरु झिड़के त मीठा लागै
जे बखसे त गुर वडिआई ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७५८)

प्रतिपल गुरु के बोल सुनने की लालसा लगी रहती है :

अंतरि पिआस उठी प्रभ केरी
सुणि गुर बचन मनि तीर लगईआ ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३५)

गुरु के मधुर बोल विस्मादित कर देते हैं :

गुरु सुंदरु मोहनु पाइ करे
हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ ।।
मेरै हिरदै सुधि बुधि विसरि गई
मन आसा चिंत विसारिआ ।।
मै अंतरि वेदन प्रेम की
गुर देखत मनु साधारिआ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७७६)

निरंकार स्वरूप सतिगुरु और गुणों के सागर सतिगुरु के प्रतिपल निकट बने रहने की लालसा होती है। क्षण-मात्र के लिए अलगाव मानो मृत्यु तुल्य प्रतीत होता है :

सतिगुरु सागरु गुण नाम का
मै तिसु देखण का चाउ ।।
हउ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ
बिनु देखे मरि जाउ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७५९)

सतिगुरु के प्रति श्री गुरु रामदास पातशाह जी की अनन्य भक्ति, दृढ़ आस्था और विश्वास स्पष्ट तौर पर संदेश देता है कि मानव जीवन का स्पष्ट उद्देश्य उस एकमात्र परम शक्ति प्रभु परमात्मा से मिलाप हासिल करना है। उस मिलाप में सहायक एकमात्र गुरु ही है । जीवन का अंतिम लक्ष्य दिव्य ज्ञान-दाता पारस तुल्य गुरु के चरणों से जुड़े रहना है। गुरु के चरणों से जुड़कर गुरु की मीठी-मधुर याद में चित्त को संजोये रखना है। गुरु-चरणों से प्रेम ही जीवन को सार्थकता तक पहुंचाता है। श्री गुरु रामदास जी की प्रेम विगलित बाणी का एक-एक छंद, एक-एक अमृत-सिंचित मधुर बोल निश्चय ही मनुष्य को प्रेम-पथ का राही बना परमोच्च अवस्था तक पहुंचाने की सामर्थ्य रखता है। गुरु जी की प्रेम बाणी इतनी प्रभावशाली है कि भट्ट नल जी के शबद, जो उन्होंने गुरुदेव जी के व्यक्तित्व के सम्बंध में कहे, वे निश्चय ही उनकी बाणी पर सार्थक सिद्ध होते हैं। गुरु-शब्द श्रवण कर तुच्छ कांच कंचन बन जाता है । सतिगुरु द्वारा नाम का मुख से उच्चारण कर विष तुल्य प्राणी अमृत तुल्य आत्मिक जीवन को प्राप्त कर लेता है, लोहा लाल बन जाता है, पत्थर मोती, काठ चंदन, पशु-प्रेत वृत्ति के मानव श्रेष्ठ पुरुष, देववृत्ति के मानव बन जाते हैं:

कचहु कंचनु भइअउ सबदु
गुर स्रवणहि सुणिओ ।।
बिखु ते अम्रितु हुयउ
नामु सतिगुर मुखि भणिअउ ।।
लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै ।।
पाहण माणक करै गिआनु
गुर कहिअउ बीचारै ।।
काठहु स्रीखंड सतिगुरि कीअउ
दुख दरिद्र तिन के गइअ ।।
सतिगुरू चरन जिन्ह परसिआ
से पसु परेत सुरि नर भइअ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९९)

आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ।।

-डॉ. मनजीत कौर*

'आनंद' शब्द अपने आप में एक विस्मादी शब्द है, जिसके उच्चारण-मात्र से ही एक अद्‌भुत शांति की अनुभूति होती है और जिसे यह गुरु-कृपा से वास्तव में प्राप्त हो जाता है, उसका जीवन 'आनंदमयी' बन जाता है। 'आनंद' अनुभूति का विषय है, अभिव्यक्ति इसकी स्वत: हो जाती है।

'अनंदु साहिब' पावन बाणी तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी के मुखारबिंद से उच्चारण की गई पावन बाणी है। 'अनंदु साहिब' बाणी में ४० पउड़ियां हैं, जिसे पढ़-सुनकर मनन करने से परम आनंद की प्राप्ति होती है और यह मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य भी है। भौतिक पदार्थों से क्षणिक सुख की प्राप्ति तो सम्भव है, लेकिन उससे आनंद की अनुभूति सम्भव नहीं है। आनंद सदैव स्थिर रहने वाला आत्मिक सुख है, जो विकट से विकट परिस्थिति में भी कम नहीं होता और निरन्तर बना रहता है।

सिक्ख मर्यादा के अनुसार 'अनंदु साहिब' का गायन :

सिक्ख समाज में 'अनंदु साहिब' अत्यन्त प्रचलित एवं वन्दनीय बाणी है, जिसका गायन सुख-दुख, खुशी-गमी के प्रत्येक धार्मिक आयोजन में अरदास से पूर्व (अधिकांशत: छ: पउड़ियों का पाठ) अत्यधिक श्रद्धा-भावना से किया जाता है।

'अनंदु साहिब' बाणी नितनेम व अमृत की बाणियों में भी शामिल की गई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यह बाणी रामकली राग में उच्चारण की गई है और पन्ना ९१७ से ९२२ पर अंकित है।

सुख और आनंद में अन्तर :

'सुख' और 'आनंद' में बहुत अंतर है, जो इस तथ्य को जाने बिना समझ नहीं आ सकता। इस संदर्भ में अगर विचार करें तो आसानी से समझ आ जायेगा कि 'सुख' भौतिक पदार्थों से प्राप्त होता है और 'आनंद' आत्मिक है। सुख क्षणिक है, 'आनंद' शाश्वत है। 'सुख' का विपरीत शब्द दुख है और हर सुख के साथ दुख जुड़ा हुआ है, जबकि आनंद का कोई विलोम शब्द नहीं है। सुख अस्थायी है, आनंद स्थायी है। सुख भौतिक साधनों से प्राप्त हो जाता है, लेकिन आनंद मन को साधने से प्राप्त होता है। सुख की अनुभूति साधारण व्यक्ति ही नहीं अपितु एक अबोध इंसान को भी हो सकती है, जबकि आनंद की अवस्था को कोई विरला 'ब्रह्मज्ञानी' ही जान सकता है।

आनंद-प्राप्ति का आसान मार्ग :

जिस परमानंद, सहजानंद की प्राप्ति हेतु योगी ,तपस्वी अनेक कठिन यौगिक आसनों

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९१२१७-६२५२३

एवं साधनों द्वारा इसे प्राप्त करने हेतु अपना सम्पूर्ण जीवन लगा देते हैं और इतनी कठिन साधना के उपरांत भी आनंद की प्राप्ति हो सके यह निश्चित नहीं, लेकिन इसके विपरीत गुरमति के अनुसार आनंद की प्राप्ति हेतु सम्पूर्ण समर्पण की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इस बाणी में श्री गुरु अमरदास जी ने स्पष्ट किया है कि मात्र कर्मकाण्ड करते हुए आध्यात्मिक मार्ग पर चलना व्यर्थ है। इससे मनुष्य के अहंकार का ही पोषण होता है अर्थात् वाहयाडंबरों से जीव अपने अहं को और बढ़ा लेता है। परिणामस्वरूप ईश्वरीय मार्ग में और बाधा खड़ी हो जाती है। इस संदर्भ में अगर विचार करें तो स्पष्ट होता है कि गुरबाणी आशयानुसार अहं (अहं-भाव) और प्रभु-नाम में विरोधाभास है। दोनों एक ही स्थान पर नहीं ठहर सकते अर्थात् जहाँ अहंकार यानि जीव का कर्ता-भाव प्रबल होगा, वहाँ प्रभु का नाम ऐसे जीव के हृदय में नहीं टिक सकता। इस तथ्य को गुरबाणी आशयानुसार सहज ही समझा जा सकता है :

हउमै नावै नालि विरोधु है
दुइ न वसहि इक ठाइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५६०)

डॉ. जोध सिंघ के चिन्तनानुसार, आनंद का अर्थ (इस बाणी में) गुरु जी ने भौतिक सुखवाद न होकर आध्यात्मिक रूप से खिले रहना बताया है। इस खिले रहने के लिए संसार में बने रहकर सांसारिकता से अलिप्त बने रहना है। अत: स्पष्ट है कि आनंद की अनुभूति हेतु न तो कठिन साधना की आवश्यकता है और न ही घर-संसार त्यागने की। आत्मिक आनंद-प्राप्ति हेतु गुरु जी ने सतिगुरु की महिमा को जरूरी बताया है। पूर्ण गुरु के उपदेश को श्रवण करने से मनुष्य की मनोवृत्ति ईश्वर के नाम के साथ जुड़ती है, जिसके फलस्वरूप अनंत खुशियों के वाद्य-यंत्र बजते हैं और अन्ततः ये अनहद नाद के रूप में हर पल आनंद की अनुभूति करवाते हैं। इस अवस्था तक पहुँचने हेतु गुरु जी ने पावन उपदेशों द्वारा मन को तथा ज्ञान-इन्द्रियों को संबोधित करते हुए समझाया है कि झूठे रसों को त्याग कर सच्चे नाम-रस में जुड़ जाओ। परमात्मा ने मनुष्य शरीर में अपनी ज्योति टिका रखी है। परमात्मा से प्रेम करना ही मनुष्य का परम कर्तव्य है :

आनंदु आनंदु सभु को कहै
आनंदु गुरू ते जाणिआ ।।
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते
क्रिपा करे पिआरिआ ।।
करि किरपा किलविख कटे
गिआन अंजनु सारिआ ।।
अंदरहु जिन का मोहु तुटा
तिन का सबदु सचै सवारिआ ।।
कहै नानकु एहु अनंदु है
आनंदु गुर ते जाणिआ ।।७ ।।
बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ।।. . .
इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि
इकि नामि लागि सवारिआ ।।. . .

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९१७)

ख़बरनामा

१९८४- कानपुर सिक्ख नसलकुशी केस में सुप्रीम कोर्ट द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार को दिए निर्देश का शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने किया स्वागत

श्री अमृतसर साहिब : २२ जुलाई : १९८४- कानपुर सिक्ख नसलकुशी के सम्बंध में माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार को मुकद्दमों को शीघ्र और सुचारू ढंग के साथ चलाने के निर्देश का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स्वागत किया है। वर्णनीय है कि कानपुर सिक्ख कत्ल-ए-आम मामले से सम्बन्धित जनहित याचिका जत्थेदार कुलदीप सिंघ (भोगल) की तरफ से सन् २०१७ में दाख़िल की गई थी, जिसकी गंभीरता को देखते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी इसमें कानूनी सहयोग कर रही है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से इन केसों की पैरवी के लिए सीनियर वकील श्री प्रसून कुमार और स. गुरबख़्श सिंघ की सेवाएं मुहैया करवाई गई है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ ने बताया कि सन् १९८४ में कानपुर में सिक्खों के हुए कत्ल-ए-आम के मामले में दोषियों को सज़ा दिलाने के लिए सिक्ख संस्था निरंतर यत्न कर रही है। उन्होंने कहा कि माननीय अदालत ने उत्तर प्रदेश सरकार को, जिन ११ मामलों में चार्जशीट दाख़िल हुई है, दो विशेष सरकारी वकील नियुक्त करने के आदेश दिए हैं। इसके साथ ही इन्हें सहयोग प्रदान करने के लिए मुख्य जांच अधिकारी से भी कहा गया है। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार इलाहाबाद हाईकोर्ट में चार मामलों में दायर अपीलों से सम्बन्धित उच्च अदालत को निर्देश दिया है कि वह इन मुकद्दमों की प्राथमिकता के तौर पर सुनवाई करे। इसी तरह बंद हो चुके ९ मामलों के बारे में उत्तर प्रदेश सरकार को मामलों से सम्बन्धित नाम याचिकाकर्ता को देने का निर्देश दिया गया है।

सिक्खों के ख़िलाफ़ गलत टिप्पणी करने वाले पुलिस अधिकारी के विरुद्ध उत्तर प्रदेश सरकार तुरंत कार्रवाई करे : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : ३० जुलाई : उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में गत दिनों एक पुलिस अधिकारी द्वारा सिक्खों को आतंकवादी कह कर बुलाए जाने की घटना पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने तीखा प्रतिक्रम प्रकट करते हुए कहा कि कुर्बानियों के कारण ही भारत देश का सभ्याचार सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की सरकार सम्बन्धित अधिकारी के ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई करे।

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सिक्ख हमेशा सरबत्त के भले की कामना करते हैं। प्राकृतिक आपदा के समय सिक्खों द्वारा की गई सेवा की पूरी दुनिया ने प्रशंसा की है।

उन्होंने कहा कि पिछले कुछ समय से भारत में अल्पसंख्यकों और ख़ास कर सिक्खों पर नफरती हमले किये जा रहे हैं। कुछ सांप्रदायिक

मानसिकता वाले लोग ऐसी हरकतें कर सामाजिक भाईचारे को नुकसान पहुंचाते हैं, जो देश-हित में नहीं है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि पुलिस का काम लोगों की सुरक्षा करना है। जब कोई पुलिस अधिकारी जानबूझ कर एक ख़ास भाईचारे के खिलाफ नफ़रती टिप्पणी करता है तो यह अति निंदनीय हो जाता है।

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री से माँग की कि सिक्खों के ख़िलाफ़ गलत टिप्पणी करने वाले पुलिस अधिकारी के विरुद्ध तुरंत कार्रवाई की जाये। उन्होंने देश में नफ़रती माहौल पैदा करने वाले ऐसे लोगों को कानून के दायरे में रहने की हिदायत भी की।

सीबीएसई भर्ती-परीक्षा में कड़ा उतरवाने की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने की निंदा

श्री अमृतसर साहिब : ११ अगस्त : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सीबीएसई के सहायक सचिव (प्रशासन) पद की भर्ती के लिए आयोजित परीक्षा के दौरान चंडीगढ़ के सेक्टर-७ स्थित केबी डी. ए. वी. स्कूल में बने केंद्र में सिक्ख उम्मीदवारों का कड़ा उतरवाने की हरकत की सख़्त शब्दों में निंदा की है। एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने चंडीगढ़ के डिप्टी कमिशनर को प्रशासनिक प्रमुख होने के नाते सीबीएसई के पदाधिकारी की भर्ती-परीक्षा में सिक्खों की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचाने वाले दोषी अधिकारियों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई करने के लिए कहा।

उन्होंने बताया कि परीक्षा देने गए उम्मीदवारों द्वारा जानकारी दी गई है कि परीक्षा केंद्र में दाख़िल होने से पूर्व मौके पर उपस्थित अधिकारियों द्वारा कड़ा उतरवाने की एतराज़योग्य कार्यवाही की गई है, जो धार्मिक आज़ादी के अधिकारों का उल्लंघन है। कड़ा सिक्खों के पाँच ककारों का अभिन्न भाग है, जिसे उतारने के लिए मजबूर करना सिक्ख भावनाओं को चोट पहुंचाने वाली घटना है।

उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाएँ पहले भी सामने आई हैं और सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से हमेशा ही इन मामलों पर एतराज प्रकट किया जाता है, परंतु सरकारें परीक्षा आदि के दौरान सभी धर्मों खासकर सिक्खों के धार्मिक सरोकारों और आस्था के प्रति संजीदा नज़र नहीं आतीं। एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सरकारों और परीक्षा आयोजित करने वाली एजेंसियों, कमिशनों और बोर्डों को सिक्ख ककारों के प्रति सम्मानजनक नज़रिया अपनाते हुए ऐसे घटनाक्रम पर रोक लगाने की बात कही।

उन्होंने कहा कि चंडीगढ़ से सम्बन्धित इस मामले की समूची जानकारी हासिल करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकारियों को निर्देश दे दिए गए हैं और रिपोर्ट प्राप्त होने पर उचित कार्यवाही आगे बढ़ाई जायेगी।

गुरुद्वारा जन्म-स्थान
श्री गुरु अमरदास जी (बासरके गिल्लां)

श्री बाउली साहिब
(श्री गोइंदवाल साहिब)

गुरुद्वारा खूह साहिब (श्री गोइंदवाल साहिब)

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

September 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-9-2024